धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

अक्टूबर–2015 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

सुविशाल गच्छाधिपति, युग प्रभावक, राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के चरण कमलों में देश के टापटेन उद्योगपति श्री गौतम अदाणी, श्री विनोद भाई अदाणी,
महासुख भाई अदाणी, महेन्द्र भाई अदाणी, बसन्त भाई अदाणी परिवार
एवं श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.
के सानिध्य में शासन प्रभावना के कार्यक्रम

- 4 अक्टूबर रविवार, अ.भा. सौधर्मवृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ की बैठक पेपराल में
- 19 अक्टूबर सोमवार, श्री नवपद ओली प्रारंभ
- 27 अक्टूबर मंगलवार, श्री नवपद ओली समाप्त

पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्सेन सूरीश्वरजी म.सा.
के स्वास्थ का परीक्षण विगत दिन अहमदाबाद साल हॉस्पिटल में हुआ।
उनका स्वास्थ संतोषजनक है तथा वे पेपराल में विराज रहे हैं।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

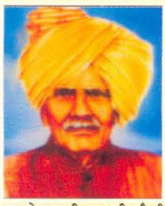

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

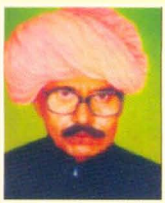

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

Doc3007

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शाा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

32009

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा वादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

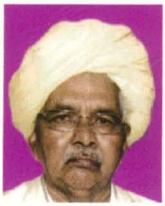

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

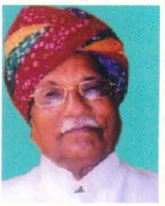

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

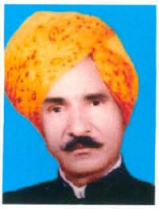

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

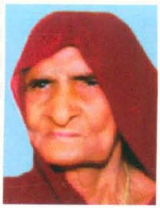

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पबनीदेवी दृधमलजी
कबदी, सायला

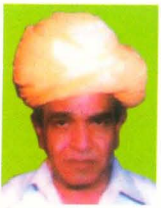

श्री दृधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
खोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
तेमार

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
चिमनलाल, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

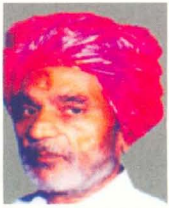
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

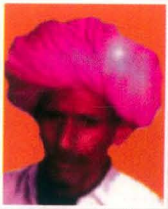
श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, वड़ग्राम निवासी

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तलेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

कर्नाटक

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

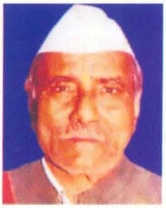
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फौजाजी
शक्तावत, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलापुर, बीजापुर

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

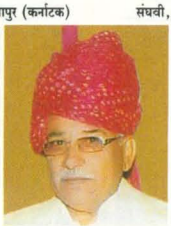
शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अक्टूबर-2015 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 62 अंक 10
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15 रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150 रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600 रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100 रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

हँसते हँसते बांधा पापकर्म, रोते-रोते भोगना पड़ता है

चम्पा नगरी! सोमदेव ब्राह्मण की पत्नी नागश्री ने अपनी समस्त योग्यता का उपयोग कर भोजन बनाया। आज सम्पूर्ण परिवार जिसमें दो भाइयों सोमदत्त तथा सोमभूति के परिवार भी शरीक थे एकसाथ भोजन करने सोमदत्त के यहाँ आये थे। भोजन में मसालेदार तुम्बी भी थी जिसकी महक लुभा रही थी। नागश्री ने उसे चखा। वह जहरीली निकल गई। नागश्री ने उसे अलग रख दिया।

तभी

मासखमण पर मासखमण करने वाले मुनि धर्मरुचिजी अपने पारणे के लिए गोचरी लेने निकले। नागश्री ने उन्हें कड़वी तुम्बी की शाक वोहरा दी। धर्मरुचिजी ने उसे परठने पर असंख्य जीवों की हिंसा जान कर शाक स्वयं वापर ली।

इससे उनके शरीर में प्रबल वेदना उठी। उन्होंने समाधिपूर्वक पादोपगमन संथारा ग्रहण कर शरीर त्याग दिया। यह बात चम्पा नगर में छिपी न रही।

नागरिक नागश्री पर थू थू करने लगे। पति ने उसे घर से निष्कासित कर दिया। दर-दर भटकती, भिखारिन बनी नागश्री के शरीर में सोलह रोग उत्पन्न हो गए। वह बत्तीस समारोपम की स्थिति में छट्ठ नरक में पहुँची।

मुनिश्री को विषाक्त शाक वोहराने के कारण उसे एक-एक नरक में दो-दो बार जाना पड़ा और वहाँ की घोरातिघोर वेदनाएं सहन करनी पड़ीं।

नागश्री नरक से निकल कर तिर्यंच नरक में गई। हंसते-हंसते बांधा पाप उसे रोते-रोते भोगना पड़ा। (क्रमशः)

- सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	संगीत शाश्वत	11
2.	निराकुल जीवन का रहस्य (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	12
3.	गणधरवाद (लेखांक–27) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	15
4.	स्वर्णप्रभा (लेखांक–27) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	17
5.	प्रश्नोत्तरी	20
6.	हम चलते रहें इस अनमोल मार्ग पर (वाघजी भाई वोरा)	21
7.	तैयारी कीजिये सम्मेलन के लिए (रमेश भाई धरू)	22
8.	संथारा क्या है? (सुरेन्द्र लोढ़ा)	23
9.	जैन धर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं (प्रो. सागरमल जैन)	26
10.	ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति (मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	30
11.	ईर्ष्या का कटु फल (आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	32
12.	अध्यात्म जगत का महासूर्य (साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.)	34
13.	अन्यत्व भावना (3) (साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)	36
14.	कायोत्सर्ग के दोष (सुरेन्द्र गंग, रतलाम)	38
15.	इच्छा का निरोध ही तप है (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	40
16.	सुख–दुःख परिस्थिति नहीं, मनः स्थिति पर निर्भर (अनूप जैन)	41
17.	सफलता का सूत्र है–आत्मबल (कोमल कुमार 'उमरी')	44
18.	काव्यकुंज– सक्षिप्त जीवनी–श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. (सज्जनसिंह लोढ़ा) तुम बड़े होशियार हो (सा. रूचिदर्शनाश्रीजी म.) परिवार (गीतादेवी डागा) जमीकंद खाए तो (जयंत चरणवासी संयमरत्न विजयजी 'प्रवासी') जिन्दगी और मौत (कु. पूजा कटारिया, रानापुर)	46–55
19.	कुमकुम सने पगलिये	73–96
20.	श्री संघ सौरभ	97–103
21.	परिषद् प्रांगण से	104–106
22.	जैन विश्व	107–112
23.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	113–114

संगीत शाश्वत

गहुंली

माढ़-श्रीनाकोड़ा स्वामी, ए राह-

गुरुराज हमारा कारज सारां, 'यतीन्द्रमुनी' महाराज।।टेर।। पंच इन्द्रीने जीपता गुरु, पाले पंचाचार। ब्रह्मचर्य शुद्धज पाले, सफल कियो अवतार रे।।गु.।।1।। और सभी भूषण को तज के, कीधो चारित्र सिणगार। श्वेताम्बर तपागच्छ में ज्ञानी, 'राजेन्द्रसूरि' परिवार रे।।गु.।।2।। मधुरध्वनी से देवे देशना, श्रवण करे नर नार। श्रोता जनके दिलमें समावे, रोम रोम हर्ष अपार रे।।गु.।।3।। धन्य धन्य स्वामी मारग चालो, करवा खवा पार। जिन आणा से महाव्रत पालो, करता उग्र विहार रे।।गु.।।4।। माघ शुदी एकम को कीनो, निम्बाहेड़ा से विहार। द्वितीयाने वह ठाठज आयो, 'नयागाँव' मझार रे।।गु.।।5।।'नीमच' पहुँचे दशमी के दिन, साथ घणा नर नार। श्रावक श्राविका अति उछरंगे, कीना देव जुहार रे।।गु.।।6।। पोषधशाले अमृत देशना, श्रवण करी सुखकार। 'कुन्दनमल' यह गहुंली गाई आनन्द मंगलकार रे।।गु.।।7।।

गरबी-हरि आवज्यो मंदरिये रंग. ए राह-
धन धन आजनो दिन रलियामणो रे,

सूरज सोनानो ऊग्यो सुहामणो रे।।ध.।।टेर।। श्रीयतीन्द्रमुनि महाराजनो रे, हुओ चातुर्मास मन भामणो रे।।ध.।।1।। जांकी मुद्रा है सुंदर सोहनी रे, वलि वाणी छे भविजन मोहनी रे।।ध.।।2।। जसु अंग उपंग सोहामणा रे, संसारथी हुआ विहामणा रे।।ध.।।3।। जेणे काम रु क्रोध ने वारिया रे, अरु लोभने आप विसारिया रे।।ध.।।4।। जे पंच महाव्रत पालता रे, वलि दोष बयालीस टालता रे।।ध.।।5।। एतो पंच इन्द्रिय ने जीपता रे, अरु गुरु गच्छ माहें दीपता रे।।ध.।।6।। जेना दरसण करवा चालिये रे, दर्शन करीने कर्म प्रजालिये रे।।ध.।।7।। 'कुन्दनमल' ये अर्ज गुजारता रे, गुंहली कथके सभा माहें गावता रे।।ध.।।8।।

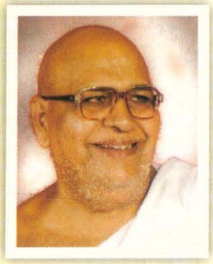

प्रवचन लेखांक 4

निराकुल जीवन का रहस्य

(सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

सामायिक में रहा हुआ और प्रतिक्रमण संपन्न किया हुआ श्रावक और महाव्रतधारी मुनि भी जब यह कहता है– 'दुष्ट ग्रह–भूत पिशाच शकिनीनां प्रमथनाय' तब क्या उसके सामायिक में–समता भाव में–अहिंसा महाव्रत में कोई दोष नहीं लगता? क्या उसके लिए 'दुच्चिंतिअ दुब्भासिय' पाठ के उच्चारणपूर्वक तत्काल मिच्छामि दुक्कड़ं की आवश्यकता नहीं है? क्या उसका दिया हुआ 'मिच्छामि दुक्कड़ं' उस बालमुनि के मिथ्या दुष्कृत सा नहीं है; जो हर बार मटका फोड़ता और मिच्छामि दुक्कड़ं मुंह से बोलता जाता था? विवेकी मनुष्य को इन सब बातों पर सूक्ष्मता से और गहराई से विचार करना चाहिए।

कवि भूधरदासजी कहते हैं–

पूजा सदा पाप निरदलै, पर्व संजोग महाफल फलै।
परम पुन्य के कारन आने, नहीं जगत में जज्ञ समान।।
जिन पूजा की भावना, सब दुःख हरन उपाय।
करते जो फल संपजै, सो बरन्यो किमि जाय।।

मेंढक की महावीर पूजा :– अतः पाप के निर्मूलन के लिए, समस्त दुःखों को दूर करने के लिए, चित्त की प्रसन्नता के लिए और महाफल की प्राप्ति के लिए नित्य जिनेश्वर भगवान की पूजा करनी चाहिए। भगवान महावीर के आगमन को ज्ञात कर एक मेंढक अपने मुंह में कमल पुष्प लेकर भगवान की पूजा के लिए समवसरण की ओर चल पड़ा। उसी समय महाराजा श्रेणिक भी हाथी पर सवार होकर भगवान को वंदन करने के लिए जा रहे थे। उछलता–कूदता वह मेंढक हाथी के पैर के नीचे आ गया और दब कर मर गया। परमात्मा की पूजा के भाव ने उसकी मृत्यु को सार्थक कर दिया। उसका वह तिर्यंच जीवन भी धन्य हो गया। उसकी धार्मिक प्रवृत्ति ने उसे देवगति उपलब्ध करवा दी। वह मेंढक दर्दुरांक देव बना। भगवान की पूजा पूजक को भगवान बना देती है। देखो, रावण ने अष्टापद तीर्थ पर भगवान आदिनाथ की पूजा भक्ति की और तीर्थंकर नाम कर्म निकाचित किया। भावी तीर्थंकरों की श्रेणी में उसका आरक्षण हो गया। सचमुच वे लोग अभागे हैं, जो भगवान के शासन को पाकर भी भगवान की पूजा से वंचित हैं।

पूजा अपने द्रव्य से:- नरवीर सोचता है कि पूजा तो अपने द्रव्य से करनी चाहिये। उसने अपनी जेब टटोली और देखा तो उसके पास मात्र पांच कौड़ियाँ थीं। कोड़ी उस काल में प्रचलित सबसे कम मूल्य का सिक्का थी। उसने उन पांच कौड़ियों के फूल खरीदे। कुछ अठारह फूल प्राप्त हुए। उन फूलों से उसने बड़े भक्ति भाव से जिनेश्वर भगवान की पूजा की। उस पूजा में वह तन्मय हो गया । उसकी पूजा ने उसे कुमारपाल के जन्म में अठारह राज्यों का स्वामी बना दिया और लोकोत्तम धर्म की उपलब्धि भी करवाई। संयोग से यशोभद्रसूरिजी भी अगले जन्म में आचार्य हेमचन्द्रसूरि हुए और उन्होंने कुमारपाल को सही मार्ग दिखलाया। कुमारपाल ने उनके पास सम्यकत्वमूल बारह व्रत ग्रहण करके और अपने साम्राज्य को व्यसन मुक्त कर अपने जीवन में अतुल्य यश संपादन किया।

तुर्क हमलावर को वापस जाना पड़ा :- कुमारपाल ने दिक्परिमाण व्रत के अन्तर्गत एक विशेष नियम ले रखा था। वह था चातुर्मास में नगर की सीमा पार न करने का। तत्कालीन तुर्कीस्तान के शासक को उसके इस नियम का पता लग गया। उसने सोचा कि कुमारपाल को जीतने के लिए बरसात के दिन बहुत उपयोगी हैं। यह सोचकर वह सेना लेकर पाटण तक आ गया और उसने चारों ओर से नगर को घेर कर कुमारपाल को युद्ध के लिए ललकारा। कुमारपाल ने तो नगर से बाहर न जाने का नियम ले रखा था। अब क्या किया जाये?

कुमारपाल उपाश्रय में गये। वहाँ आचार्य श्री हेमचंद्रसूरिश्वरजी महाराज पाट पर विराजमान थे। व्याख्यान का समय हो चुका था। कुमारपाल ने नगर पर आये हुए संकट की जानकारी आचार्य महाराज को दी और यह भी निवेदन किया कि दिक् परिमाण व्रत की मर्यादा के कारण मैं नगर से बाहर जाने में असमर्थ हूँ।

आचार्य बोले-'राजन् तुम निश्चिन्त रहो: धर्म के प्रभाव से सब ठीक होगा। यह व्याख्यान का समय है, अतः तुम व्याख्यान श्रवण का लाभ लो।'

कुमारपाल निश्चिन्त होकर व्याख्यान सुनने लगे।

उपाश्रय में व्याख्यान चल रहा था। आराधक तन्मय होकर व्याख्यान सुन रहे थे। इतने में वहाँ अद्भुत दृश्य प्रकट हुआ। लोगों ने देखा कि आकाश मार्ग से एक पलंग प्रवचन मंडप में आ रहा है। वह पलंग जब नीचे आकर रुका तब उस पलंग पर सोया हुआ मनुष्य जाग गया। वह और कोई नहीं, तुर्क शासक ही था। अपने को तंबू में न पाने से वह चकित हो गया। वह सोचने लगा-'मैं कहाँ हूँ? और यहाँ कैसे आ गया? यह पाट पर बैठे फकीर कौन हैं?' उसे सोच में पड़ा देख कर आचार्य बोले-'महानुभाव! तुम इस समय पाटण के धर्म स्थान में

हो और तुम्हारे सामने जो बैठा हुआ है, वह गुर्जर नरेश कुमारपाल है; जिसे जीतने के लिए तुम अपना देश छोड़कर गुजरात में आये हो।' फिर वे कुमारपाल से बोले–'कुमारपाल! तुर्क शासक अब तेरे सामने है। बोलो, अब क्या करना है?'

स्वयं को चारों ओर से घिरा हुआ पाकर तुर्क शासक भयभीत हो गया। उसने कुमारपाल से माफी मांगी। कुमारपाल ने उसे क्षमा कर दिया। तुर्क शासक ने आचार्य महाराज का वंदन किया। राजा कुमारपाल ने अपनी सुरक्षा व्यवस्था के साथ उसे उसके तंबू में पहुंचाया। दूसरे ही दिन तुर्क शासक ने अपना घेरा हटा लिया और जीवन में अनुभूत उस चमत्कार और आचार्य महाराज के प्रभाव को याद करता हुआ वह अपने देश चला गया। आचार्य महाराज ने ही अपनी मंत्रशक्ति के बल से उसे स्थानांतरित किया था।

बदबू हटाओ खुशबू पाओ:– सचमुच धर्म का प्रभाव अचिन्त्य है। परमात्मा की पावन वाणी आत्मकल्याण करने वाली है, अतः परमात्मा की प्रवचन गंगा में नहाना चाहिए। इससे अपने भीतर रहा हुआ पाप मैल दूर हो जाता है। भव्य जीवों को परमात्मा की वाणी प्यारी लगती है। कुछ लोग कहते हैं कि धर्म में मन नहीं लगता। यह बात भी सही है। जब तक मन सांसारिक विषय भोगों में लगा रहेगा, तब तक धर्म की आराधना में आनन्द आ ही नहीं सकता। विषय भोगों से मुँह मोड़ने के पश्चात् ही धर्म प्यारा लगने लगता है। बदबू पास में हो, तो खुशबू का असर नहीं होता। खुशबू अपना असर तभी दिखाती है, जब बदबू को दूर हटा दिया जाए। राग कथा में अरुचि हो, तो ही वीतराग कथा मन को भाती है।

दो चीटियों का प्रेमालाप:– एक बार दो चीटियों की आपस में मुलाकात हो गई। एक नमक के ढेर में रहती थी और दूसरी शक्कर के ढेर में। उनमें आपसी प्रेमालाप शुरू हुआ। शक्कर में रहने वाली चींटी ने कहा–'अरी! मेरे यहाँ तो बस मिठास ही मिठास है। जहाँ देखो वहां मिश्री की डलियाँ हैं।'

इस पर नमकवाली चींटी ने पूछा–'मिश्री कैसी होती है?'

'मिश्री सफेद होती है'– शक्कर वाली ने कहा।

'मेरे यहाँ भी सब सफेद ही सफेद है।' नमकवाली बोली।

इस पर शक्करवाली चींटी बोली–'तुम्हारे यहाँ की सफेद वस्तु में क्या धरा है? वह शक्कर थोड़े ही है, वह तो नमक है नमक। मिश्री में जो मिठास है, वह नमक में थोड़े ही होती है। नमक तो खारा होता है, मीठा नहीं। यदि तुझे विश्वास न हो, तो चल मेरे साथ; मैं तुझे मिश्री की मिठास चखाती हूँ।'

–क्रमशः....

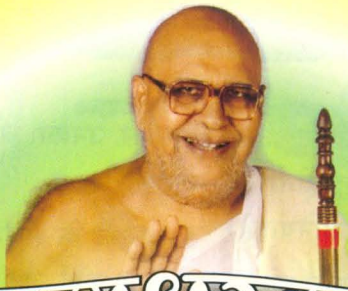

गणधरवाद

प्रवचनकार

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

इसी प्रकार पूर्व उल्लेखित आत्म साधक युक्तियों से आत्मा का अस्तित्व सिद्ध है। अतः विपक्ष वृत्ति होने से तुम्हारा हेतु विरुद्ध भी है। अतएव तुम्हें आत्मा के अस्तित्व में संदेह न करके उसका प्रत्यक्ष आदि से निश्चय ही करना चाहिए कि आत्मा है।

इसी संदर्भ में अपने पूर्व उल्लेखित उस तर्क के लिए भी समझ लेना चाहिए, जिसमें कहा था कि जीव का कोई भी लिंग प्रत्यक्ष प्रमाण से पूर्ण गृहीत नहीं है। जैसे कि खरगोश के साथ उसके सींग का संबंध कभी देखने में नहीं आया; वैसे ही जीव अविनाभावी या लिंग के दिखने से जीव का ग्रह नहीं हो सकता इत्यादि। ऐसा कोई एकान्त नियम नहीं है कि लिंगी साध्य के साथ लिंग हेतु को पहले देखा हो तभी लिंग हेतु से लिंगी साध्य की सिद्धि हो और न देखने पर सिद्धि न हो। क्योंकि हँसना, गाना, सोना, आँखों की हरकत आदि लिंगों के साथ भूत, पिशाच आदि को कभी किसी ने देखा नहीं है; फिर भी इन हेतुओं को देख कर शरीरान्तर में भूत का अनुमान लगा लिया जाता है। वैसे ही पहले आत्म विषयक लिंग दर्शन न होने पर भी आत्मा का अनुमान हो सकता है; यह तुम्हें स्पष्टतया मानना चाहिये।

इसके अतिरिक्त अन्यान्य आत्म साधक अनुमान क्रमशः इस प्रकार हैं–

1. घड़े की तरह शरीर भी सादि और प्रतिनियत आकार वाला होने से उसका कोई न कोई कर्ता होना चाहिए। जिसका कोई कर्ता नहीं, उसका सादि प्रतिनियत आकार भी नहीं होता। जैसे –बादल। यद्यपि मेरु आदि नित्य पदार्थ प्रतिनियत आकार वाले हैं; किन्तु उनका आदि नहीं है। वे नित्य हैं। इसलिए हेतु में दिये गये सादि विशेषण से मेरु जैसे प्रतिनियत आकार वाले

नित्य पदार्थों का नहीं, किन्तु उन्हीं पदार्थों का कोई कर्ता सिद्ध होता है; जिनका आकार सादि और प्रतिनियत है।

2. इन्द्रियाँ करण हैं; अतः उनका कोई न कोई अधिष्ठाता होना चाहिये। जैसे कि दंड आदि करणों का कुंभकरण अधिष्ठाता है। जिसका कोई अधिष्ठाता, स्वामी न हो, वह आकाश की तरह करण भी नहीं बनता है। अतएव इन्द्रियों का जो अधिष्ठाता है, वही आत्मा है।

3. इन्द्रियों के द्वारा विषयों का ग्रहण-आदान होता है; अतः इन्द्रिय और विषयों में आदान आदेय भाव, ग्रहण-ग्राह्य भाव है, जिससे उनका आदान ग्रहण करने वाला कोई न कोई होना ही चाहिये। जैसे की लौह और संडासी में आदान आदेय भाव होने से लुहार उनका आदाता है। लेकिन जहाँ आदान और आदेय भाव नहीं होता, वहाँ आदाता भी नहीं होता। जैसे आकाश। अतः इन्द्रिय और विषयों में आदान आदेय भाव होने से उनका जो आदाता है, वही आत्मा है।

4. भोजन, वस्त्र आदि भोग्य होने से जैसे उनका भोक्ता पुरुष है। वैसे ही देहादि के भोग्य होने से उनका भी कोई न कोई भोक्ता होना चाहिये। जिनका कोई भोक्ता नहीं होता; वे शशश्रृंग की तरह भोग्य भी नहीं हैं। शरीर आदि के भोग्य होने से उनका जो भोक्ता होगा, वही आत्मा है।

5. देहादि के संघात रूप होने से उनका कोई न कोई अर्थी-स्वामी है। जैसे कि घर के संघात रूप होने से उसका कोई न कोई पुरुष स्वामी है; वैसे ही देहादि भी संघात रूप है, अतः उनका भी कोई स्वामी होना चाहिए और जो स्वामी है, वही आत्मा है।

इन्द्रभूति- आर्य! उक्त हेतुओं से इतना ही सिद्ध होता है; कि शरीर आदि का कोई कर्ता, भोक्ता आदि है, किन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि वह जीव है। तो फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि कर्तादि जीव है।

महावीर- ईश्वर आदि किसी दूसरे को शरीर का कर्ता, भोक्ता या स्वामी मानना, तो युक्ति विरुद्ध होने से जीव को ही उसका कर्ता, भोक्ता या स्वामी मानना चाहिए।

आत्मा कंथचित् मूर्त है

इन्द्रभूति- कर्तृत्व, भोक्तृत्व और स्वामित्व रूप में आप द्वारा उपस्थित जीव साधक हेतु साध्य से विरोधी वस्तु के साधक होने से विरूद्ध है, हेत्वाभास है;क्योंकि आपको उन हेतुओं से जिस जीव को सिद्ध करना है;

(क्रमशः)

लेखांक 27

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

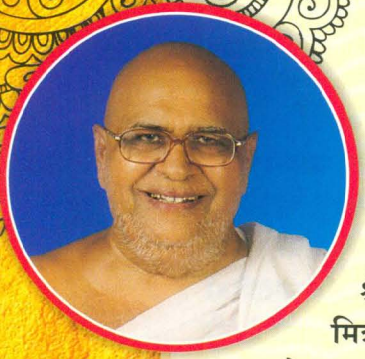

मार्ग में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं घटी और तीसरे दिन वे लोग आसपुर पहुंच गए। आसपुर के श्रेष्ठी शांतिदास ने निमंत्रण देकर नगर श्रेष्ठी को बुलाया था। श्रेष्ठी शांतिदास और नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर दोनों बचपन के मित्र थे और समय-समय पर दोनों एक दूसरे से मिलते रहते थे। इस समय श्रेष्ठी शांतिदास को एक व्यापारिक सौदा करना था। सौदा कुछ बड़ा ही था। शांतिदास इस सौदे को अपनी सामर्थ्य से बड़ा समझ रहा था, किन्तु उसका यह मानना था कि यदि इस सौदे में वह सफल हो गया तो उसकी आर्थिक स्थिति में एकदम बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाएगा। इस सौदे के संबंध में विचार-विमर्श करने के लिए तथा अपनी ओर से साक्ष्य के रूप में उपस्थित रहने के लिए ही उसने नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर को आसपुर बुलवाया था। नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर भी अपने मित्र शांतिदास को सभी प्रकार से सम्पन्न देखना चाहता था और हर समय उसकी सहायता करने के लिए तत्पर रहता था।

श्रेष्ठी शांतिदास ने अपने मित्र और उसकी पत्नी का भावभीना स्वागत किया। स्वर्णप्रभा तो घर के अंदर श्रेष्ठी शांतिदास की पत्नी के कक्ष में चली गई और दोनों मित्र अतिथि कक्ष में बैठकर आपस में बातचीत करने लगे। चूंकि ये लोग आज ही यहाँ पहुँचे थे, इसलिये श्रेष्ठी शांतिदास ने इन्हें विश्राम का पूरा-पूरा समय दिया। दूसरे दिन श्रेष्ठी शांतिदास ने बाहर से आने वाले व्यापारियों के साथ होने वाले सौदे के संबंध में विस्तार से बताया। नगर श्रेष्ठी ने सभी पहलुओं से इस सौदे पर विचार कर अपनी ओर से सौदे की शर्तें लिखकर दे दीं और कहा- 'यदि सौदा इन शर्तों पर वे लोग स्वीकार करें तो करना अन्यथा स्वीकार मत करना। मेरा मानना है कि वे लोग अपनी इन शर्तों को बिना किसी आपत्ति के स्वीकार कर लेंगे।'

मैं चाहता हूँ कि जिस समय उन व्यापारियों से सौदा हो, उस समय आप भी यहाँ उपस्थित रहें।

'ऐसा आप किस आधार पर मानकर चल रहे हैं?' श्रेष्ठी शांतिदास ने जिज्ञासा व्यक्त करते हुए पूछा।

'शांतिदास जिन वस्तुओं की मांग वे तुमसे कर रहे हैं, वे वस्तुएँ उनके लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य हैं। उन वस्तुओं का वहाँ नितांत अभाव है और अत्यधिक मांग है। दूसरे इन वस्तुओं के बदले में वे जो कुछ देना चाह रहे हैं, उनकी अपने यहाँ मांग तो है किन्तु अभाव नहीं है। यही कारण है कि वे अपनी शर्तों को स्वीकार कर लेंगे। यदि यह समझौता दीर्घकाल के लिए होता है तो और भी अच्छा रहेगा। उसमें तुम्हें लाभ ही लाभ है।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने समझाते हुए कहा।

बस इतनी जानकारी मंगवा लो कि उनकी पुत्री का विवाह कहाँ हुआ है और उनके ससुर का नाम क्या है?

'ओह! इस दृष्टि से तो मैंने सोचा ही नहीं था।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'जब व्यापार करना है तो सभी पक्षों पर विचार करना आवश्यक होता है। वस्तु की वर्तमान में मांग और पूर्ति तथा भविष्य में उसकी स्थिति पर भी विचार करना चाहिए। ऐसा करने पर ही सफलता मिलती है। बिना विचारे सौदा करने से क्षति भी उठानी पड़ सकती है।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने बताया।

'आपकी बात का मैं भविष्य में अक्षरशः पालन करूँगा।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा। उसने आगे कहा–'मैं चाहता हूँ कि जिस समय उन व्यापारियों से सौदा हो, उस समय आप भी यहाँ उपस्थित रहें। मेरे लिए आपको इतना कष्ट तो सहन करना ही होगा।'

'इसमें कष्ट वाली बात ही कहाँ है? मैं तो तुम्हारा सौदा होने के एक-दो दिन बाद ही जाने का निश्चित करके आया हूँ।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने हँसते हुए कहा।

'यह तो आपने बड़ी कृपा की।' नगर श्रेष्ठी ने भावविभोर होते हुए कहा।

'अब तुम यह कृपा करने जैसी, कैसी व्यर्थ की बात करते हो। अरे तुम मेरे मित्र हो। एक मित्र यदि दूसरे मित्र के काम नहीं आए तो

वह कैसा मित्र? फिर हमें यहाँ एक काम और भी है।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

'यहाँ आपको और क्या काम हो सकता है?' आश्चर्य प्रकट करते हुए श्रेष्ठी शांतिदास ने पूछा।

'बात यह है कि यहाँ के किसी अमरचंद की पुत्री का विवाह शिवपुर में हुआ है। अमरचंद और उनका परिवार वैष्णव मत अनुयायी है। इस परिवार और उनकी पुत्री के संबंध में कुछ जानकारी एकत्रित करना है, बस।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात कह दी।

'अरे! एक अमरचंद तो अपने पड़ोस में ही रहते हैं। वे भी वैष्णवधर्मावलंबी हैं। पुत्री तो उनके भी एक ही है किन्तु उसका विवाह कहाँ हुआ है, यह मुझे ज्ञात नहीं है। हाँ! पत्नी से पूछकर बता सकता हूँ। यदि ये वे ही अमरचंद हैं तो फिर समझो घर बैठे ही जानकारी मिल जावेगी। और यदि आप कहो तो मैं अभी सेवक को भेजकर उन्हें बुलवा लूँ।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा।

'नहीं! उन्हें यहाँ बुलवाने की आवश्यकता नहीं। बस इतनी जानकारी मंगवा लो कि उनकी पुत्री का विवाह कहाँ हुआ है और उनके ससुर का नाम क्या है? शेष सारा कार्य मेरी पत्नी कर लेगी।' नगर श्रेष्ठी लक्ष्मीधर ने कहा।

जिस समय ये दोनों बतिया रहे थे, उसी समय एक युवक ने कक्ष में प्रवेश किया और सादर अभिवादन करते हुए कहा–'सेठ सा. पिताश्री कल रामपुर जा रहे हैं। यदि आपको कोई काम हो तो फरमाने का कष्ट करें।'

'नहीं, बेटा! अभी वहाँ का कोई कार्य नहीं है।' श्रेष्ठी शांतिदास ने कहा। श्रेष्ठी का उत्तर सुनकर युवक ने कहा–'ठीक है, तो फिर मैं चलता हूँ।' इतना कहकर युवक जाने के लिए जैसे ही मुड़ा श्रेष्ठी शांतिदास ने अचानक कहा–'थोड़ा रुको। तुमसे एक बात पूछना है।'

'जी पूछिये। आप क्या जानना चाहते हैं?' युवक ने रुकते हुए कहा।

(क्रमशः)

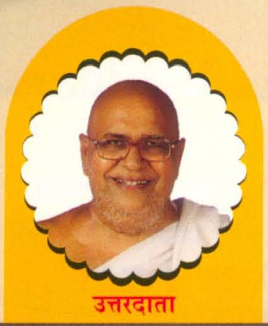

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

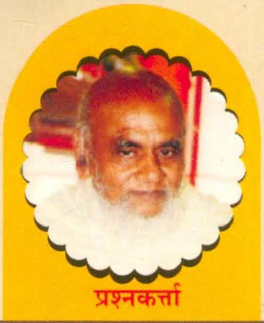

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

ग्रैवेयक के कितने भेद हैं?

प्र. ज्योतिषी देवों के कितने भेद हैं?

उ. ज्योतिषी देवों के पाँच भेद हैं–

1. चन्द्र, 2. सूर्य, 3. ग्रह, 4. नक्षत्र, 5. तारा।

प्र. कल्पातीत किसे कहते हैं?

उ. अहमित्रों को अर्थात् जिनमें छोटे–बड़े का भेद नहीं होता है, उन्हें कल्पातीत कहते हैं।

प्र. कल्पोपपन्न के कितने भेद हैं?

उ. कल्पोपपन्न देवों के बारह भेद हैं–

1. सौधर्म, 2. ईशान, 3. सनत्कुमार, 4. माहेन्द्र, 5. ब्रह्मलोक, 6. लान्तक, 7. शुक्र, 8. सहस्त्रार, 9. आणत, 10. प्राणत, 11. आरण, 12. अच्युत।

प्र. कल्पातीत कितने प्रकार के हैं?

उ. कल्पातीत दो प्रकार के हैं– 1. ग्रैवेयक और 2. अनुत्तर वैमानिक।

प्र. ग्रैवेयक के कितने भेद हैं?

उ. ग्रैवेयक के नौ भेद हैं–1. अधस्तनास्घन, 2. अध स्तनमध्यम, 3. अध स्तनोपरितन, 4. मध्यमाधस्तन, 5. मध्यममध्यम, 6. मध्योपरितन, 7. उपरिनातनस्तन, 8. उपरितन मध्यम, 9. उपरितनोपरितन।

प्र. अनुत्तर वैमानिक देव कितने प्रकार के हैं?

उ. अनुत्तर वैमानिक देव पाँच प्रकार के हैं–

1. विजय, 2. वैजयन्त, 3. जयन्त, 4. अपराजित, और 5. सर्वार्थसिद्ध।

प्र. लोकान्तिक देवों के कितने भेद हैं?

उ. लोकान्तिक देवों के नौ भेद हैं–

1. सारस्वत, 2. आदित्य, 3. वह्नि, 4. वरूण, 5. गर्दतोय, 6. तुषित, 7. अव्याबाध, 8. मरुत, 9. आरिष्ट।

प्र. पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव किसे कहते हैं?

उ. जो जीव अपनी पर्याप्ति पूर्ण कर चुका हो, उसे पर्याप्त कहते हैं और जो अपनी पर्याप्ति पूर्ण न कर चुके हों, उसे अपर्याप्त कहते हैं।

प्र. पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ. आहारादि पुद्गलों को ग्रहण करने और इन्द्रियाँदि रूप परिणमन करने की आत्मा की शक्ति विशेष की पूर्णता को पर्याप्ति कहते हैं।

प्र. पर्याप्ति कितने प्रकार की हैं?

उ. पर्याप्ति छः प्रकार की हैं–

1. आहारपर्याप्ति, 2. शरीरपर्याप्ति, 3. इन्द्रियपर्याप्ति, 4. श्वासोच्छवास् पर्याप्ति, 5. भाषा पर्याप्ति, 6. मन पर्याप्ति।

हम चलते रहें इस अनमोल मार्ग पर

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

श्री नमस्कार महामंत्र की आराधना का पर्व श्रावण शुक्ला 6, शुक्रवार तद्नुसार 21 अगस्त 2015 से प्रारंभ हुआ तथा इसका समापन श्रावण शुक्ला 15, शनिवार दिनांक 29 अगस्त 2015 को हुआ। परमपूज्य गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. चातुर्मासार्थ जन्मभूमि गुरुतीर्थ पेपराल (थराद, गुजरात) में विराजमान हैं, उनके पवित्र सान्निध्य में यहां श्री नमस्कार महामंत्र की भव्य आराधना हुई। जहाँ-जहाँ भी गच्छ के पूज्य मुनिगणों तथा साध्वी महाराज साहेबों के चातुर्मास हैं, वहाँ भी उनके सान्निध्य में श्री नमस्कार महामंत्र की आराधना इन्हीं दिवसों में आयोजित हुई। सर्वत्र मिलाकर हजारों आराधकों ने महामंत्र की आराधना करते हुए अपने जीवन को सार्थक किया। इन सभी आराधकों द्वारा आराधना के पश्चात् अपने निवास स्थानों पर लौट कर भी प्रतिदिन एक पक्की माला की गणना के नियम के पालन रूप में महामंत्र की आराधना निरंतर रखी जाती है। कई भाग्यशालियों की इस प्रकार श्री नवकार मंत्र जाप की संख्या लाखों पर पहुंच गई है। इन्हें अपने जीवन में इससे चमत्कारिक अनुभव भी प्राप्त हो रहे हैं।

पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में विगत पचास वर्षों से प्रत्येक चातुर्मास काल में श्री नमस्कार महामंत्र की इसी तरह आराधना हो रही है। ऐसा प्रयोग पूज्य गुरुदेव राष्ट्रसंत श्री साहब की प्रेरणा तथा सदुपदेश से ही सर्वप्रथम प्रारंभ हुआ जो निरंतर चल रहा है। यह हमारे इहलौकिक तथा पारलौकिक जीवन का उद्धार व कल्याण करने में सक्षम है। इसकी आराधना हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनकर हमें धन्य कर देती है। श्री नवकार महामंत्र की एक माला नियमित गिनने से पच्चीस वर्ष में नवलाख नवकार का जाप पूर्ण होता है। शास्त्र में उल्लेखित है कि 'नव लाख जपतां नरक निवारे।' इस जाप से हमारे जीवन को शांति, समता एवं समाधि प्राप्त होती है।

आईये, हम चलते रहें इस अनमोल मार्ग पर गुरुदेवश्री की प्रेरणा से।

तैयारी कीजिए सम्मेलन के लिए

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

युग प्रभावक, प्रतिष्ठा शिरोमणि, राष्ट्रसंत, जैनाचार्य तथा परिषद् के प्रणेता, श्रीसंघ अभ्युदय के पथ प्रदर्शक श्रीमद् विजयजयन्त सेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त दिनांक 22 नवम्बर 2015 को अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् का वार्षिक सम्मेलन आयोजित होगा। इसी प्रसंग पर तरुण, महिला, बालिका आदि परिषद् परिवार की इकाइयों का सम्मिलन भी होना है। गुरुदेव की जन्मभूमि पेपराल (थराद, गुजरात) पर इस वर्ष हमें यह गौरवपूर्ण प्रसंग प्राप्त होगा। हम सभी पेपराल की मिट्टी को अपने मस्तक से स्पर्श करवा कर धन्य होंगे। पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानन्दविजयजी म.सा., मुनि मंडल तथा साध्वी समुदाय को वंदन करके भी हम कृतकृत्य होंगे।

प्रत्येक परिषद् शाखा का कर्त्तव्य है कि वह परिषद् सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयारी अभी से प्रारंभ कर दे। अव्वल तो यह आवश्यक है कि सम्मेलन में अधिक से अधिक परिषद् सदस्य भाग लें, इस हेतु आप अपने यहाँ परिषद् क्षेत्र को प्रेरित करना प्रारंभ कर दीजिए। दूसरा परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय से जो भी परिपत्र प्राप्त हों, उनको सभी सदस्यों तथा परिषद् परिवार की सभी इकाइयों के सदस्यों तक पहुँचाने का प्रबंध कीजिए ताकि उसमें दिये गए निर्देशों की जानकारी सभी को प्राप्त हो सके एवं सभी परिपालन की मन:स्थिति तैयार कर उपलब्धि प्राप्त करने में जुट सकें। परिषद् शाखाओं को तैयारी इस प्रकार करनी है कि उनका गतिविधि प्रतिवेदन सही समय पर केन्द्रीय कार्यालय पर पहुंच सके, यही नहीं शाखा को अधिकाधिक पुरस्कार भी दिलवा सके। तत्संबंधी सम्पूर्ण सूचनाओं से आपको यथासमय सूचित किया जाता रहेगा।

विगत महीनों, केन्द्रीय परिषद् के तत्वावधान एवं गुरुदेव राष्ट्रसंत जैनाचार्यश्री साहब की भव्य निश्रा में तीन ज्ञानायतनों का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ है। सैकड़ों छात्रों ने इनमें भाग लेकर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की सुन्दर आराधना की है। इस हेतु हार्दिक वंदना एवं अभिनंदन।

जय जिनेन्द्र! जय राजेन्द्र ! जय जयन्त!

संथारा क्या है?

यह न अनिवार्य है, न जबर्दस्ती है, न आत्महत्या है, न सती होना है। यह है मृत्यु सम्मुख होने पर मन को पवित्र करने की सर्वोत्कृष्ट आत्मसाधना।

जैन संस्कृति में संथारा एक विशिष्ट धार्मिक तप है। इसे भव्य आत्मा मृत्यु को समीप या सम्मुख दृष्टिगत कर ग्रहण करता है। यह न भावुकता में स्वीकार किया जाता है, न क्रोध, उद्वेग अथवा क्षणिक जोश में इसे अपनाया जाता है। इसे ग्रहण करने की एक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति स्थिर और संतुलित मनोस्थिति में मन तथा हृदय की पवित्रता के लिए पच्चक्खता (संकल्पपूर्वक प्रतिज्ञा करता) है। जैन शास्त्रों में दी गई परिभाषा के अनुसार यह मृत्यु की इच्छा से भी नहीं किया जाता है। संथारे के द्वारा मृत्यु को वांछा दोष माना गया है। प्रश्न उठता है कि फिर संथारा क्या है? स्पष्टतः जिस समय डॉक्टर तक यह कह देते हैं कि अब हमारा मात्र प्रयास है, अब मरीज को दवा की नहीं दुआ की आवश्यकता है। याने मरीज का अंत निकट हो सकता है। दवा उसके लिए केवल एक प्रयत्न या प्रयोग मात्र है। ऐसे समय संथारा का हाथ जोड़कर उच्चारण किया जाता है। इसके पहले व्यक्ति अपने परिचितों, परिजनों, सम्पर्क में रहे जनों से अपने द्वारा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हुए क्षणिक या बड़े अपराधों, विवादों, मनमुटाव, बैरभाव के लिए मन–वचन–कर्म से क्षमायाचना करता है। अपनी ओर से भी सभी जीवों को उनके अपने प्रति अकार्यों के लिए क्षमा कर देता है। याने हृदय तथा मन की समस्त मलीनता, बोझ को दूर कर, सम्पूर्ण विश्व के जीवों के प्रति मैत्रीभाव जगाकर हृदय को पवित्र बना लेता है। अपनी ओर से आर्थिक लेनदेन का हिसाब निपटा लेता है। अपने सभी परिचितों, संबंधितों से भी क्षमा याचना कर सच्ची वैराग्य भावना उत्पन्न कर उनसे अपना सांसारिक रिश्ता तोड़ मन को इस पावन भाव से परिपूर्ण बना लेता है कि –

एगोहं नत्थि में कोई, नाहमत्रस्स कसईं।
एवं अदीणमणसोःअप्पाणमनु सासए।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

अर्थात् इस संसार में मेरा कोई नहीं है और मैं भी किसी का नहीं हूँ। इस प्रकार दीनता के भाव से रहित होकर अपनी आत्मा को अनुशासित करता है। साथ ही संथारा लेने वाला अपने मन से समस्त सम्पत्ति, वस्त्र, पात्र, स्वामित्व, वस्तुओं जिनमें अन्न-जल भी होता है, त्याग देता है। केवल शरीर पर आवश्यक वस्त्र पहिने हुए रहता है। सभी का त्याग करते हुए, सभी से अपने संबंधों को समाप्त करते हुए वह अपने शरीर से भी ममता हटा लेता है। शरीर को भी वह नश्वर मानकर विचार करता है कि यह नाशवान शरीर मैं नहीं हूँ। मैं परम पवित्र दिव्य ज्योति स्वरूप आत्मा हूँ। यह शरीर पराया है/था, यह मिटने वाला है। अब मेरा इस पर कोई मोह नहीं है। इस पर मेरी ममता झूठी है। उसे यह प्रतीती होती है कि मेरी अपनी जो आत्मा है, वही अजर-अमर है, वही मेरी सम्पत्ति है, वही मेरे साथ है, वही है जो इस शरीर से पृथक चैतन्य स्वरूप है। मेरी मृत्यु यदि निकट है तो मुझे कोई दुःख नहीं है। मैं व्याकुल नहीं हूँ। मैं दुःखी नहीं हूँ। इस संसार की नाशवान वस्तुओं तथा रिश्तों को छोड़कर जाने का मुझे कोई शोक नहीं है। जैसे वस्त्र बदलते हैं, वैसे ही आत्मा शरीर का परिवर्तन कर रही है। संथारा धारण करने वाला व्यक्ति/मरीज ऐसे ही उत्तम भावों तथा धर्मध्यान से अपने आपको आप्लावित करता है। वह सभी के प्रति समता, मैत्री, दया, करुणा, माध्यस्थ, प्रमोद जैसी उच्च भावनाओं में रमण करने लगता है। उस स्थिति में संसार को त्यागने, मृत्यु को वरण करने की मानसिक तैयारी करता है। व्यक्ति देव वंदन, गुरु वंदन करता है, क्षमा याचना करता है। अपने सम्पूर्ण ध्यान को आत्मा पर केन्द्रित कर आत्मबल को समर्थ और उन्नत बनाता है। केवल आत्मभाव में रमण करता है। ऐसा केवल आदर्श या शास्त्र वचन नहीं है बल्कि संभव तथा सत्य है। वैदिक पद्धति का भी यह उद्घोष है-जैसी अंतिम मति, वैसी गति। यदि जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति अपना अंतिम समय अनुभूत कर उच्चतम मति को घनीभूत करता है, सभी काम-भोगों की अभिलाषाओं का विसर्जन कर देता है, इच्छाओं से ऊपर उठ जाता है, भगवत् स्मरण में सम्पूर्ण मनोयोग से समर्पित हो, प्रसन्न भाव से अपने अंतिम प्रस्थान की तैयारी करता है तो इसे आत्महत्या कैसे कहेंगे? इसे इच्छामृत्यु कैसे कहेंगे? इसे सती प्रथा कैसे कहेंगे? इसे अनुचित या अवैध देहत्याग कैसे कहेंगे?

यहाँ यह उल्लेख भी आवश्यक है कि सती केवल महिलाएं होती रहीं हैं, पुरुष नहीं। संथारा की धार्मिक पवित्र पद्धति को स्त्री तथा पुरुष दोनों स्वीकार करते हैं। यह तभी ग्रहण किया जाता है जब मृत्यु निकट होती है। व्यक्ति की आत्मा के दो दुश्मन माने जाते हैं-राग और द्वेष। संथारे में व्यक्ति द्वेष को समाप्त करने के लिए सभी प्राणियों से क्षमा मांगता है- 'तेने सव्व खमाविया, मुज्झ वि तेह खमंत' सब जीवों के समूह को मैं खमाता (क्षमा याचना करता) हूँ। तथा सभी जीव मेरे अपराधों के लिए मुझे क्षमा करें। मन की समस्त विकृतियों को समाप्त कर यदि लगातार मन में उच्चारण करता है कि मुझे अरिहंत की शरण हो, सिद्ध की शरण हो, साधु की शरण हो, केवली प्रणीत धर्म की शरण हो, नवकार मंत्र का जाप करता हो, तब व्यक्ति में इतना आत्मबल आ जाता है कि वह केवल प्रभु स्मरण में समर्पित हो जाता है। शरीर के कष्ट या पीड़ा उसके आत्मबल पर आक्रमण नहीं कर पाते। वह भौतिक इच्छाओं से उठ जाता है। यह सभी मनोवैज्ञानिक रूप से संभव

होता है क्योंकि प्रत्येक जैन के बचपन से ही तदनुरूप संस्कार होते हैं। वह बचपन से ही तपस्या का अभ्यास करने लगता है। अपने जीवन में प्रतिदिन नवकारसी, रात्रि भोजन त्याग, सूर्यास्त के बाद पेयजल भी ग्रहण नहीं करने जैसे नियमों का पालन करने लगता है। अतएव संथारा आत्मशुद्धि की चरम परिणति है, पवित्र सर्वोत्कृष्ट साधना की पराकाष्ठा है। संथारा के लिए संल्लेखना शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। संल्लेखना पर्यायवाची शब्द नहीं है बल्कि एक दीर्घ तपस्या है। इसमें चरणबद्ध रूप से धीमे-धीमे बारह वर्ष तक निरंतर कषाय तथा कषाय के निमित्त भूत शरीर को कृश किया जाता है। गांधीवादी काका कालेलकर ने अपने गुजराती सार्थ शब्दकोष में संथारे का अर्थ - 'मरण के निकट आने पर ममता छोड़ मृत्युशय्या को स्वीकार करना' दिया है।

फिर संथारे की प्रतिज्ञा आगार सहित ली जाती है। आगार याने छूट या छोड़ने की व्यवस्था। इसका तात्पर्य यह कि व्यक्ति मृत्यु को समीप जान सभी पदार्थों का त्याग कर देता है। लेकिन यदि मृत्यु के पूर्व ही उसकी इच्छा प्रबल हो जाती है, या दवा उपचार आदि से वह ठीक हो जाता है तो वह संथारा का पारणा कर सभी वस्तुओं का पूर्वतः उपयोग प्रारंभ भी कर सकता है। संथारे के पच्चक्खाण (प्रतिज्ञा) के मंत्र में ही इस आगार का उल्लेख होता है। इस आगार के साथ ही सौगंध ली जाती है। अभी तक सैकड़ों प्रकरण ऐसे हो चुके हैं जिनमें व्यक्ति ने संथारे का धारण कर लिया तथा सांसारिक वस्तुओं का पूर्ववत् उपयोग प्रारंभ कर दिया। ऐसे में यह आत्महत्या कैसे हुई? यह देहत्याग कैसे हुआ? संथारा ना जबर्दस्ती है, न अनिवार्यता है, न दबाव है, न धार्मिक अंधविश्वास ही इसका कारण है। सभी धर्म व्यक्ति को अंतिम यात्रा से पूर्व मन को पवित्र बनाने की दिशा में अग्रसर होने का उपदेश देते हैं। जैन धर्म भी संथारे के माध्यम से व्यक्ति के मन की अपवित्रता को निःशेष करता है।

आत्महत्या में संक्लेश, हताशा, निराशा, क्रोध, तनाव, आवेश आदि व्यक्ति को प्रेरित करते हैं जबकि संथारा या समाधि में समता, शांति, निर्मोहिता, त्याग की भावना, तप का बल, आत्मा की पवित्रता के भाव होते हैं। विनोबा भावे संथारा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने स्वयं भी संथारा ग्रहण कर देह विसर्जन किया था। तीर्थंकर महावीर स्वामी सहित अन्य तीर्थंकर भगवंतों ने भी अपना अंतिम समय निकट आभासित जान संथारा किया था। अतएव संथारा पूरे जीवन की साधना का सार तथा अंतिम समय स्वेच्छा से अन्तःकरण की समग्र स्वीकृति से ली जाने वाली आत्म समाधि है। वेंटिलेटर पर रहने वाला व्यक्ति मृत्यु की गोद में विषाद तथा कष्ट के साथ झूलता है। संथारा ग्रहण करने वाला साधक आत्मानुभूति कर मृत्यु को महोत्सव जान कर उसे सुखद परिवर्तन के रूप में ग्रहण करता है। यह तप की सर्वोच्च स्थिति है। वैसे प्रत्येक जैन या प्रत्येक व्यक्ति द्वारा संथारा किया जाना आवश्यक नहीं है। फिर भी आत्मार्थी इसे जीवन के अंतिम बिंदु पर धारण कर अपना आत्मोन्नयन करता है जो कि पवित्र अनुष्ठान है।

जैनधर्म दर्शन में समाधिमरण आत्महत्या नहीं

(प्रो.सागरमल जैन)

जैन परम्परा के सामान्य आचार-नियमों में संलेखना या संथारा (स्वेच्छापूर्वक मृत्यु वरण) एक महत्वपूर्ण तथ्य है। जैन गृहस्थ उपासकों एवं श्रमण साधकों दोनों के लिए स्वेच्छापूर्वक मृत्यु वरण का विधान जैन आगमों में उपलब्ध है। जैनागम साहित्य ऐसे साधकों की जीवन गाथाओं से भरा पड़ा है जिन्होंने स्वेच्छा से मरण का व्रत अंगीकार किया था। अन्तकृतदशांग एवं अनुत्तरोपपातिक सूत्रों में उन श्रमण साधकों का और उपासक दशांगसूत्र में आनन्द आदि उन गृहस्थ साधकों का जीवन-दर्शन वर्णित है, जिन्होंने जीवन की सांध्य बेला में स्वेच्छा मरण का व्रत स्वीकारा था। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार मृत्यु के दो रूप हैं-1. स्वेच्छामरण या निर्भयतापूर्वक मृत्युवरण और 2. अनिच्छापूर्वक या भयपूर्वक मृत्यु से ग्रसित होना। स्वेच्छा मरण में मनुष्य का मृत्यु पर शासन होता है, जबकि अनिच्छापूर्वक मरण में मृत्यु मनुष्य पर शासन करती है। पहले को पंडित मरण या समाधिमरण भी कहा गया है और दूसरे को बाल मरण, अज्ञानी मरण या असमाधि मरण कहा गया है। एक ज्ञानीजन की मौत है और दूसरी अज्ञानी की मौत। अज्ञानी विषयासक्त होता है, इसलिए वह बार-बार मरता है, जबकि यथार्थ ज्ञानी अनासक्त होता है इसलिए एक बार ही मरता है। जो मृत्यु से भय खाता है, मृत्यु से बचने के लिए भागा-भागा फिरता है, मृत्यु उसका बराबर पीछा करती रहती है। लेकिन जो निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करने, उसका आलिंगन करने को तत्पर रहता है, मृत्यु उसका पीछा नहीं करती। जो मृत्यु से भय खाता है, वही मृत्यु का शिकार होता है, लेकिन जो मृत्यु से निर्भय होता है, वह अमरता की दिशा में आगे बढ़ जाता है। साधकों के प्रति महावीर का संदेश यही था कि मृत्यु के उपस्थित होने पर शरीरादि से अनासक्त होकर उसका आलिंगन करो। महावीर के दर्शन में अनासक्त जीवन शैली की यह महत्वपूर्ण कसौटी है। जो साधक मृत्यु से भागता है, वह अनासक्त जीवन जीने की कला से अनभिज्ञ है। जिसे अनासक्त मृत्यु की कला नहीं आती, उसे अनासक्त जीवन की कला भी नहीं आ सकती। इसी अनासक्त मृत्यु की कला को संलेखना व्रत कहा गया है। जैन परम्परा में संथारा, संलेखना, समाधि-मरण, पंडित मरण और सकाम मरण आदि स्वेच्छापूर्वक मृत्यु वरण के ही पर्यायवाची नाम हैं। आचार्य समन्तभद्र संलेखना की

परिभाषा करते हुए लिखते हैं कि आपत्तियों, अकालों, श्रति वृद्धावस्था एवं असाध्य रोगों में शरीर त्याग करना संलेखना है। अर्थात् जब मृत्यु अनिवार्य सी हो ही गई हो, उन स्थितियों में निर्भय होकर देहाशक्ति का विसर्जन कर मृत्यु का स्वागत करना ही संलेखना व्रत है।

समाधि मरण के भेद :- जैनागमों में मृत्यु वरण के अवसरों की अपेक्षा के आधार पर समाधि मरण के दो प्रकार कहे गये हैं- 1. सागारी संथारा और 2. सामान्य संथारा।

सागारी संथारा- अकस्मात् जब कोई ऐसी विपत्ति उपस्थित हो जाए कि जिससे जीवित बच निकलना संभव न हो जैसे आग में घिर जाना, जल में डूबने जैसी स्थिति हो जाना, हिंसक पशु या किसी ऐसे दुष्ट व्यक्ति के अधिकार में फंस जाना, जहाँ सदाचार से पतित होने की संभावना हो। ऐसे संकटपूर्ण अवसरों पर जो संथारा ग्रहण किया जाता है, उसे सागारी संथारा कहते हैं। यदि व्यक्ति किसी तरह उस विपत्ति या संकटपूर्ण परिस्थितियों से बाहर निकल जाता है तब वह पुनः देहरक्षण या जीवन के सामान्य क्रम को आरंभ कर सकता है। सागारी संथारा मृत्यु पर्यंत के लिए नहीं, वरन् परिस्थिति विशेष के लिए होता है, अतः परिस्थिति विशेष के समाप्त हो जाने पर उस व्रत की मर्यादा भी समाप्त हो जाती है।

सामान्य संथारा - जब स्वाभाविक जरावस्था अथवा असाध्य रोग के कारण पुनः स्वस्थ हो जीवित रहने की समस्त आशाएं धूमिल हो गई हों, तब यावज्जीवन तक देहासक्ति एवं शरीर पोषण के प्रयत्नों का जो त्याग किया जाता है, वह सामान्य संथारा है। यह यावज्जीवन के लिए होता है अर्थात् देहपात पर ही पूर्ण होता है। सामान्य संथारा ग्रहण करने के लिए जैनागमों में निम्न स्थितियाँ आवश्यक मानी गई हैं- जब सभी इन्द्रियाँ अपने कार्यों का संपादन करने में अक्षम हो गई हों, शरीर सूख कर अस्थिपंजर मात्र रह गया हो, पचन-पाचन, आहार-विहार आदि शारीरिक क्रियाएं शिथिल हो गई हों और इनके कारण साधना और संयम का परिपालन सम्यक् रीति से होना संभव न रहा हो तभी अर्थात् मृत्यु के उपस्थित हो जाने पर ही सामान्य संथारा ग्रहण किया जा सकता है। सामान्य संथारा तीन प्रकार का है-1. भक्त-प्रत्याख्यान- आहार आदि का त्याग कर देना, 2. इंगित मरण- एक निश्चित भू-भाग पर हलन-चलन आदि शारीरिक क्रियाएं करते हुए आहार आदि का त्याग करना, 3. पादोपगमन - आहार आदि के त्याग के साथ-साथ शारीरिक क्रियाओं का विरोध करते हुए मृत्युपर्यंत निश्चल रूप से लकड़ी के तख्ते के समान स्थिर पड़े रहना।

उपर्युक्त सभी प्रकार के समाधि मरणों में मन का समभाव में स्थित होना अनिवार्य है।

समाधि मरण ग्रहण करने की विधि

जैनागमों में समाधि मरण ग्रहण करने की विधि भी बतायी गई है। सर्वप्रथम मल-मूत्रादि अशुचि विसर्जन के स्थान का अवलोकन कर नर्म तृणों की शय्या तैयार कर ली जाती है। तत्पश्चात् सिद्ध, अरहन्त और धर्माचार्यों को विनयपूर्वक नमस्कार कर पूर्वग्रहित प्रतिज्ञाओं में लगे हुए दोषों की आलोचना और उनका प्रायश्चित ग्रहण किया जाता है। इसके बाद समस्त प्राणियों से क्षमायाचना की जाती है और अन्त में अठारह पाप स्थानों, अन्नादि चतुर्विध आहारों का त्याग करके शरीर के ममत्व एवं पोषण क्रिया का विसर्जन किया जाता है। साधक प्रतिज्ञा करता है कि मैं पूर्णतः हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ यावत् मिथ्यादर्शन शल्य से विरत होता हूँ, अन्न आदि चारों प्रकार के आहार का यावज्जीवन के लिए त्याग करता हूँ। मेरा यह शरीर, जो मुझे अत्यन्त प्रिय था, मैंने इसकी बहुत रक्षा की, कृपण के धन के समान इसे संभालता रहा, इस पर मेरा पूर्ण विश्वास था कि यह मुझे कभी नहीं छोड़ेगा। इसके समान मुझे अन्य कोई प्रिय नहीं था। इसके लिए मैंने इसे शीत, गर्मी, क्षुधा, तृषा आदि अनेक कष्टों से, विविध रोगों से बचाया और सावधानीपूर्वक इसकी रक्षा करता रहा, अब मैं इस देह का विसर्जन करता हूँ और इसके पोषण एवं रक्षण के प्रयासों का परित्याग करता हूँ।

बौद्ध परम्परा में मृत्यु वरण

यद्यपि बुद्ध ने जैन-परम्परा के समान ही धार्मिक आत्महत्याओं को अनुचित माना है, तथापि बौद्ध-वाङ्मय में कुछ ऐसे संदर्भ अवश्य हैं जो स्वेच्छापूर्वक मृत्यु-वरण का समर्थन करते हैं। संवृत्तनिकाय में असाध्य रोग से पीड़ित भिक्षु वक्कलि कुलपुत्र तथा भिक्षु छन्न द्वारा की गई आत्महत्या का समर्थन बुद्ध ने किया था और उन्हें निर्दोष कहकर दोनों ही भिक्षुओं को परिनिर्वाण प्राप्त करने बाला बताया था। जापानी बौद्धों में तो आज भी 'हरीकरी' की प्रथा मृत्यु-वरण की सूचक है।

फिर भी जैन और बौद्ध परम्पराओं में मृत्युवरण के प्रश्न को लेकर कुछ अन्तर भी है। प्रथम तो यह कि जैन-परम्परा के विपरीत बौद्ध परम्परा में शस्त्रवध से तत्काल ही मृत्यु वरण कर लिया जाता है। जैन आचार्यों ने शस्त्रवध आदि के द्वारा तत्काल मृत्यु वरण का विरोध इसलिए किया था कि उन्हें उसमें मरणाकांक्षा की संभावना प्रतीत हुई। यदि मरणाकांक्षा नहीं है, तो फिर मरण के लिए इतनी आतुरता क्यों? इस प्रकार यहाँ बौद्ध परम्परा शस्त्र के द्वारा की गई आत्महत्या का समर्थन करती है, वहीं जैन परम्परा उसे अस्वीकार करती है। इस संदर्भ में बौद्ध परम्परा वैदिक परम्परा के अधिक निकट है।

क्रमशः....

स्वाध्याय प्रश्नोत्तरी

प्र.स्थापनाचार्य पड़िलेहन के 13 बोल कौन से हैं?

उ. 1.शुद्ध स्वरूपना धारक गुरु
2. शुद्ध ज्ञानमय
3. शुद्ध दर्शनमय
4. शुद्ध चारित्रमय
5. शुद्ध श्रद्धामय
6. शुद्ध प्ररूपणामय
7. शुद्ध स्पर्शनामय
8. पंचाचार पाले
9. पंचाचार पलावे
10. पंचाचार अनुमोदे
11. मनगुप्तिए
12. वचनगुप्तिए
13. कायगुप्तिए गुप्ताए।

प्र.सम्यग्ज्ञान किसे कहते हैं? सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति से क्या लाभ होता है?

उ. 'सा विद्या या विमुक्तए'

जिस ज्ञान द्वारा आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है, उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं। सम्यग्ज्ञान द्वारा आत्मा में रहा हुआ अज्ञान (मिथ्यात्व ज्ञान) दूर होता है। जिससे हेय-ज्ञेय-उपादेय, कृत्य-अकृत्य, भक्ष-अभक्ष, गम्य-अगम्य आदि का बोध प्राप्त होता है और इस ज्ञान द्वारा ही आत्मा संसारचक्र का भवभ्रमण समाप्त करके परंपरा से मोक्ष प्राप्त करती है।

प्र.अरिहंत प्रभु के 12 गुण कौन-कौन से हैं?

उ. श्री तीर्थंकर परमात्मा के प्रबल पुण्योदय से देवता आकर्षित होकर आठ गुणों से भक्ति करते हैं तथा तीर्थंकर नामकर्म के उदय से चार चमत्कारी गुण प्राप्त होते हैं। इस प्रकार कुल 12 गुण होते हैं-

1. अशोकवृक्ष,
2. सुरपुष्पवृष्टि,
3. दिव्यध्वनि,
4. चामर,
5. आसन,
6. भामंडल,
7. दुंदुभि,
8. छत्र,
9. अपायापगमातिशय,
10. ज्ञानातिशय,
11. पूजातिशय,
12. वचनातिशय।

इसमें अंतिम चार गुणों को अतिशय कहते हैं।

ओसवाल जाति और उसकी उत्पत्ति

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

भारतीय इतिहास को उठाकर देखा जाये तो उसमें इतनी खोजबीन के बाद भी कई जानकारियाँ अधूरी ही हैं। पुरातत्ववेत्ताओं की वर्षों से खोज जारी है। परन्तु आज भी कई विषय अधूरे हैं।

भारत में अलग-अलग जातियों का उदय किस तरह हुआ इसका इतिहास भी स्पष्ट नहीं है। यहाँ हम ओसवाल जाति की उत्पत्ति के बारे में जानना चाह रहे हैं। इस जाति की उत्पत्ति के बारे में कई आधार सामने आते हैं। इस आधार पर स्थापना का सन् निश्चित करना कठिन लगता है।

फिर भी पुरातत्ववेत्ताओं के सतत प्रयासों, यतियों के शास्त्र भण्डारों में, भाटों की वंशावलियों में और जैनाचार्यों के जैन ग्रन्थों में ओसवाल जाति की उत्पत्ति के विषय में अनेक दंतकथाएं, अनेक किवदंतियां और अनेक काव्य प्राप्त होते हैं।

कहा जाता है कि वीर निर्वाण संवत् 70 में ओसिया नगरी में ओसवंश का उद्‌भव हुआ। यह उपकेश वंश पट्टावलियों और उपकेशचरित्र पर आधारित है। इसी तरह 'तपागच्छ पट्टावली' और 'अंचलगच्छ पट्टावली' के अनुसार रत्नप्रभसूरि द्वारा ओसवंश की उत्पत्ति मानी गई है। इन पट्टावली आदि के प्रमाणों से ओसवाल जाति की उत्पत्ति का समय वि.पू.400 वर्ष माना गया है।

जैन ग्रन्थों और जैनाचार्यों के अनुसार विक्रम संवत् 400 वर्ष पूर्व ओसवाल जाति और ओसिया नगरी की स्थापना विषयक जो कथा है, वह इस प्रकार है-

भीनमाल नगरी में भीमसेन नामक राजा राज्य करता था। राजा के दो पुत्र थे। इनमें से एक का नाम श्रीपुंज और दूसरे का नाम उपलदेव था। एक दिन युवराज श्रीपुंज और उपलदेव के बीच किसी बात को लेकर कहा-सुनी हो गई। इस पर श्रीपुंज ने उपलदेव को कहा कि इस प्रकार के हुक्म तो वही चला सकता है जो अपनी ताकत के बल पर राज्य की स्थापना करे। यह तीखी बात उपलदेव को चुभ गई। वह तुरन्त नए राज्य की स्थापना की प्रतिज्ञा करके अपने मंत्री उहड़ और उधरण को साथ लेकर वहाँ से निकल पड़ा। उसने देलीपुरी (दिल्ली) के राजा साधु की आज्ञा लेकर मण्डोर के पास उपकेशपुर का ओसियापट्टण नामक नगर बसा कर अपना राज्य स्थापित किया। उस

समय ओसिया नगरी का क्षेत्र बहुत लम्बा चौड़ा था। ऐसा कहा जाता है कि वर्तमान ओसिया नगरी से 12 मील दूर जो तिवरी गांव है, वह पहले ओसिया का तेलीवाड़ा था और जो इस समय का खेतार ग्राम है वह पहले यहाँ का क्षत्रीपुरा था।

एक बार भगवान पार्श्वनाथ के सातवें पट्टधर आचार्य रत्नप्रभसूरि अपने उपदेशों के द्वारा प्रचार करते हुए उपकेशपट्टण आये तथा लुणाद्रि नामक पहाड़ी पर 2 माह के लिए ध्यान में चले गये। उनके साथ 500 मुनियों का संघ भी था। लेकिन उपकेशपट्टण में मुनियों के लिए भिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं होने से मुनियों का रहना कठिन हो गया था। मुनियों ने इस संबंध में आचार्यश्री से निवेदन किया तब आचार्यश्री ने विहार का निश्चय कर लिया था। तब वहाँ की अधिष्ठायित्री देवी चामुंडा प्रकट हुई और आचार्यश्री से कहने लगीं–'हे महात्मन्! यहाँ से इस तरह जाना ठीक नहीं है। यदि आप यहाँ चातुर्मास करेंगे तो संघ और शासन को लाभ होगा।' इस बात पर विचार कर आचार्यश्री ने मुनियों से कहा कि जो साधु कठिन तपस्या करने में सक्षम हों, वे यहाँ रहें शेष यहाँ से विहार कर जाएं। आचार्यश्री की बात पर 465 मुनि आज्ञा लेकर उपकेशपट्टण से विहार कर गए। शेष बचे 35 मुनियों ने आचार्यश्री के साथ 4 माह की कठिन तपस्या में अपने को लीन कर दिया।

संयोगवश एक दिन राजा के दामाद त्रिलोकसिंह को रात के समय एक सर्प ने डस लिया। इस खबर से पूरे नगर में कोहराम मच गया। दामाद के ईलाज के लिए कई मंत्र–तंत्र शास्त्री आए लेकिन वे राजा के दामाद को ठीक न कर सके। राजा के दामाद त्रिलोकसिंह की मृत्यु हो गई। अंत में जब श्मशान ले जाने की तैयारी हुई तब किसी को आचार्यश्री की याद आई और उसने आचार्यश्री के पास ले जाने की सलाह दी। जब राजकुमार त्रिलोकसिंह की अर्थी आचार्यश्री के स्थान पर लाई गई तो आचार्यश्री के शिष्य वीर धवल ने गुरु महाराज के चरणों का प्रक्षालन कर राजकुमार के मृत शरीर पर जैसे ही छिड़का राजकुमार त्रिलोकसिंह जीवित हो उठा। इस चमत्कार से राजा व उनकी प्रजा बड़ी प्रसन्न हुई।

राजा ने खुश होकर बहुत सारे बहुमूल्य जवाहरातों की थालों को आचार्यश्री के चरणों में अर्पित कर दिया। इस पर आचार्यश्री ने राजा को कहा– राजन्! त्यागियों को इस तरह के धन–वैभव से कोई मतलब नहीं होता है। हम तो यह चाहते हैं कि आप लोग मिथ्यात्व को छोड़कर पवित्र जैन धर्म को श्रद्धा सहित स्वीकार करें, जिससे आपका कल्याण हो। इस बात पर प्रसन्न होकर सभी लोगों ने आचार्यश्री के उपदेश स्वीकार कर 12 व्रतों का श्रवण कर जैन धर्म को स्वीकार किया।

–क्रमशः

गतांक से आगे

ईर्ष्या का कटु फल

आचार्य श्री रत्नसेन सूरिश्वरजी म.सा.

यह जानकर महाराजा को बहुत आघात लगा परन्तु चाणक्य की बुद्धिमत्ता से भावी सम्राट का रक्षण हो गया यह जानकर खुशी भी हुई।

महारानी के भोजन के विष का प्रभाव बालक के मस्तक पर पड़ा था अतः बालक का नाम रखा गया– बिंदुसार। चाणक्य ने बिंदुसार के सर्वांगीण विकास की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

काल का प्रवाह तीव्र गति से आगे बढ़ने लगा। बाल वय पूर्ण कर बिंदुसार ने यौवन काल में प्रवेश किया। उसी समय चन्द्रगुप्त की काया मृत्यु के बिछौने पर जा पहुँची थी। महाराजा को बचाने के लिए अनेक द्रव्योपचार किए गए परन्तु सभी उपाय निष्फल ही सिद्ध हुए। बाध्य होकर चाणक्य ने भावोपचार चालू किया।

एक दिन नमस्कार महामंत्र का श्रवण करते हुए चन्द्रगुप्त महाराजा ने अपने प्राण छोड़ दिए। उस समय बिंदुसार की उम्र मात्र 16 वर्ष की थी। पिता की मृत्यु उसके लिए वज्राघात की तरह असह्य थी। ऐसे में ही मगध का राजमुकुट बिंदुसार के मस्तक पर रखा गया।

महामंत्री चाणक्य अपनी सूझबूझ के साथ बिंदुसार के राज्य की देखभाल करते थे। वृद्धावस्था का असर महामंत्री पर भी दिखने लगा था। चाणक्य अब राज्य के कार्यभार से निवृत्त होना चाहते थे परन्तु बाल राजा बिंदुसार को लक्ष्य में रख वे राज्य के कार्यभार में अपना पूरा ध्यान देते थे। चाणक्य ने ही राज्य के कार्यभार में सहायता के लिए योग्य पद पर सुबंधु की नियुक्ति करवाई थी। सुबंधु हालांकि बुद्धिमान था पर मन ईर्ष्या से ग्रस्त और स्वभाव से छिद्रान्वेषी भी था। चाणक्य के उत्कर्ष को सहन करना उसके लिए असह्य था। चाणक्य के प्रति बिंदुसार के दिल में जो आदर–सम्मान था, उसे खत्म किए बिना सुबंधु का स्तर ऊंचा उठना संभव नहीं था। वह किसी भी उपाय से चाणक्य के कार्यों में दोष ढूंढने

लगा।

एक दिन बिंदुसार राजा अपने राज सिंहासन पर आसीन थे। मंत्रीश्वर चाणक्य किसी प्रयोजन से आज दरबार में नहीं थे। अवसर देख सुबंधु, बिंदुसार के निकट पहुँच गया। राजा के कान फूंकते हुए बोला–'सम्राट! कई दिनों से एक विचार मेरे दिल में घुमड़ रहा है किन्तु आज तक आपके सामने कहने की हिम्मत नहीं कर पाया हूँ। आपके भावी हित की चिंता मेरे अंतर्मन को कुरेद रही है। एक ओर मुझे शंका है कि आप मेरी बात पर तनिक भी विश्वास नहीं करेंगे वहीं दूसरी आपका अहित भी है। अत: कहूँ या न कहूँ , मेरा मन बस इसी असमंजस में फंसा हुआ है।'

सुबंधु की बात सुनकर राजा ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, 'सुबंधु! तुम शंका मत पालो। सब विकल्प छोड़ दो और जो भी बात हो सब सत्य कह दो।'

सुबंधु ने देखा, राजा को उस पर विश्वास हो गया है। अवसर देख वह बोला–'राजन्! आपने अपनी माँ का मुख कभी देखा है?' 'नहीं।' बिंदुसार ने आगे कहा–'मेरे दिल में इसका खूब अफसोस था। आज भी माँ की याद आने पर मेरी आँखे भींग जाती हैं।' सुबंधु ने कहा– 'आज आपको माँ की याद सता रही है परन्तु आपकी माँ आज आपके साथ क्यों नहीं हैं? इस बात का क्या आपको पता है?'

'अरे! जब माँ की मौत हो चुकी है तो वह आज मेरे साथ कैसे होगी?' बिंदुसार ने कहा।

'राजन्! इसी बात से आप अनभिज्ञ हैं। आपकी माता की मौत हुई या उसे मारा गया है? यही तो मेरा सवाल है।'

'क्या मेरी माँ की स्वाभाविक मौत नहीं हुई थी। क्या किसी ने उसकी हत्या की है? क्या उनके साथ षड्यंत्र हुआ था? यदि ऐसा है तो कौन है वह हत्यारा? मैं उस पापी का मुँह भी देखना नहीं चाहता हूँ।'

राजन्! यदि इस सत्य का खुलासा हुआ तो आप चौंक उठेंगे।

जरा जल्दी बताओ, वह कौन है?

राजन्! आपके दिल पर पूरी तरह अपना कब्जा किए हुए, चाणक्य ने ही आपकी माँ की हत्या की थी । महाराजा चन्द्रगुप्त भी महारानी की विरह वेदना को सहन नहीं कर पाए और जल्द ही परलोक सिधार गए।

'सुबंधु! आखिर ऐसी क्या घटना बनी थी जिसने हमें अपनी माता से दूर कर दिया था?

(क्रमश:)

अध्यात्म जगत का महासूर्य

पू. आचार्य यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

(साध्वी श्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.)

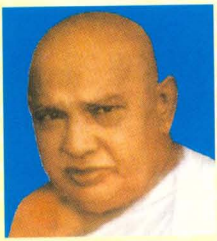

शब्द परिमित है एवं पू. आचार्य यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. का उदार एवं उदात्त व्यक्तित्व अपरिमित हैं। आचार्य यतीन्द्रसूरिश्वरजी म. याने शील, संयम,त्याग, तप, ज्ञान एवं क्षमा की उत्ताल तरंगों को समेटे सागर। शब्दों से और मात्र काया को देख उनके व्यक्तित्व की थाह पाना कठिन ही नहीं कठिनतम कार्य है। पू. गुरुदेव के विषय में यह लेखन अन्तःकरण में उमड़ते भावों के वशीभूत होकर की गई एक बालचेष्ठा मात्र है। श्रमण संस्कृति के समुज्जवल इतिहास में पू. गुरुदेव एक निर्भिक, तेजस्वी, आत्मप्रज्ञ, फक्कड़ संत की ख्याति से अलंकृत हैं। जैसे पुष्प में सुगंध, दुग्ध में धवलता, चन्द्र में शीतलता, गन्ने में मधुरता अंतर्निहित है, ठीक वैसे ही पू. गुरुदेव के जीवन में, उनके रोम-रोम में, चाहे दिन हो या रात हो, एकांत हो पर्षदा, चाहे जागृत अवस्था हो या निद्रावस्था, अनुशासन, अप्रमत्तता एवं आत्मसाधना अभिव्याप्त थीं। वे ऐसे कोहिनूर हीरा थे जिन्हें महामहिम प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने स्वयं अपने हाथों तराशा था। महामहिम विश्वपूज्य गुरुदेव के अन्तेवासी होने का गौरवशाली ताज उनके शीर्ष पर अभिमंडित था। पू. गुरुदेव की औजस्वी एवं प्रभावशाली अनुशासना में जैन संस्कृति एवं त्रिस्तुतिक संघ को नित नई ऊँचाइयाँ उपलब्ध हुई।

महासूर्य का उदय :- 'सौ दंडी एक बुंदेलखंडी' कहावत वाली क्रांतिकारी भूमि के धवल मन वाले लोगों की धवलपुरी नगरी में पू. गुरुदेव का जन्म हुआ। जायसवाल गौत्रीय श्रेष्ठीवर्ग श्री बृजलालजी एवं धर्मानुरागिणी उनकी धर्मपत्नी की पावन कुक्षी से पू. गुरुदेव का अवतरण हुआ। वि.सं.1940 कार्तिक सुदी 2 के मंगलमय दिन अध्यात्म जगत के महासूर्य के रूप में आपश्री का उदय हुआ। आत्मा के लिए कोष में राम शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। सो आत्मा की अतल गहराई में उतरकर सम्यग्दर्शन, ज्ञान एवं चारित्र रूपी रत्न निकालने में अत्यंत ही दक्ष एवं कुशल पू. गुरुदेव का नाम 'रामरत्न' बहुत ही सार्थक रहा। स्नेहिल परिजन में भाई दुलीचंदजी, भाई किशोरीलालजी, बहनों में रमाकुंवर एवं प्रेमकुंवर का सुखद संयोग रहा।

बालक रामरत्न बचपने से ही विशिष्ट प्रतिभा एवं योग्यता से समलंकृत थे। रामरत्न को संस्कारों एवं शिक्षा की उत्तम खुराक मिल सके इस उद्देश्य से पिताश्री बृजलालजी सपरिवार भोपाल में बस गए। उस समय रामरत्नजी की उम्र महज सात वर्ष की थी। वहाँ दिगम्बर पाठशाला में धार्मिक अध्ययन हेतु प्रवेश प्राप्त किया और अल्पावधि में ही आपने पंचमंगल पाठ, तत्वार्थ सूत्र, रत्नकरंडक, श्रावकाचार, आलापपद्धति, द्रव्यसंग्रह, देवधर्म परीक्षा एवं भक्तामर आदि नित्य स्मरण पाठ का सार्थअध्ययन कर अपनी तीक्ष्ण मेधा का परिचय दिया। अपने बालक की पैनी प्रज्ञा संपन्नता को जानकर पिता श्री बृजलालजी अत्यंत आनंदित रहने लगे। किन्तु विधि के विधान को शायद कुछ और ही मंजूर था। काल के क्रूर प्रहार से 12 वर्ष की अल्पायु में ही रामरत्नजी के सिर से माता-पिता का साया उठ गया। रामरत्नजी को भोपाल में अपने मामा श्री ठाकुरदासजी के यहाँ रहना पड़ा। बच्चों के सम्पूर्ण विकास में वात्सल्य पहली आवश्यकता होती है। माता-पिता के वात्सल्य पूर्ण संरक्षण के बिना रामरत्नजी उदास हो गए। इष्ट के वियोग एवं अनिष्ट के संयोग का निमित्त पाकर रामरत्नजी सत्य के शोध में प्रेरित हुए।

संयम पथ पर प्रस्थान :- एक बार रामरत्नजी उज्जैन में सिंहस्थ देखने के बहाने घर से निकल गए। उज्जैन से मक्सी तीर्थ की यात्रा करते हुए महिदपुर पहुँचे। महिदपुर में उस समय विश्वपूजित श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. (दादागुरु) विराजमान थे। तारों के बीच चन्द्रमा की भांति पूज्य गुरुदेव अपने शिष्य परिवार के बीच शोभित हो रहे थे। रामरत्नजी वहाँ दादा गुरु के दर्शन हेतु गए। विश्वपूज्य दादा गुरु की शांत छवि, सौम्य मुद्रा के दर्शन कर रामरत्नजी को अपूर्व आनन्द की अनुभूति हुई। वहीं निर्णय कर लिया कि त्राण देने वाली उत्तम शरण यही है। अब मुझे आचार्यश्री के पावन चरण छोड़कर कहीं नहीं जाना है। सो साथ में रहने लगे। विश्वपूज्य आचार्य श्री की तेजस्वी एवं अनुभवी आँखों ने रामरत्नजी के उन्नत भविष्य को मानो परख लिया था। रामरत्नजी भी वैराग्य के रंग में आकंठ डूब गए। वि.सं.1954 आषाढ़ी द्वितीया सोमवार को खाचरौद के प्रांगण में विशाल जनसैलाब के समक्ष चौदह वर्ष की उम्र में रामरत्नजी को विश्वपूज्य आचार्यश्री के हस्तकमल से दीक्षा प्रदान की गई। रामरत्नजी का नाम मुनिराज यतीन्द्रविजयजी घोषित किया गया। मुनिराज यतीन्द्रविजयजी अपने महामहिम गुरुदेव के चरणों में पूर्णरूपेण समर्पित हो गए। ज्ञान के प्रति दृढ़ अनुरक्ति होने से ज्ञानसाधना में नख-शिख तक निमग्न हो आत्मोन्नयन की प्रक्रिया में संलग्न हो गए। आपको अपने परमोपकारी गुरुदेव का स्वर्णिम सान्निध्य मात्र 9 वर्ष ही प्राप्त हो पाया। उसके बाद गुरुदेव अनन्त में विलीन हो गए।

(क्रमशः)

गतांक से आगे

अन्यत्व भावना 3

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.)

परिवारजनों को अन्यत्व स्वीकार करने से जीव के राग-द्वेष सीमित हो जाते हैं। शरीर को अन्य अनुभव करने से जीव को स्व (आत्मा) के प्रति रुचि जागती है। स्व के प्रति रुचि स्व को स्व से मिला देती है। तत्पश्चात् आनंद ही आनंद।

जब शरीर ही आत्मा से भिन्न है तो भौतिक (पोद्‌गलिक) पदार्थ तो आत्मा से सर्वथा भिन्न ही हैं। भौतिक वस्तुओं को भोगने की अनादिकाल से कुटेब पड़ी है। जीव को पौद्‌गलिक आनंद में ही रुचि है। पुद्‌गल के मोह में फंसे हुए जीव को स्वयं (आत्मा) के गुणों का विचार नहीं होता। आत्मा में 8-10 गुण नहीं है वरन अनंत गुणों का समावेश है, किन्तु आत्मा को आत्मा की शक्ति का भान नहीं।

शान्त सुधारस में उ. विनयविजयजी म.सा. कहते हैं- तिर्यञ्नारकयोनिषु प्रतिहतच्छिन्नो विभिन्नो मुदुः। सर्वं तत्परकीयं दुर्विलसितं विस्मृत्य तेष्णेव हा रज्यन् म्ह्यसि मूढ़। तानुपचरन् नात्मन्न किं लज्जसे।'

हे आत्मन्! इस जगत में ऐसी कौन सी पीड़ा है, दुःख है जो तूने सहन न किया हो। पशु और नरक योनि में तू बार-बार हणाया है। तेरे टुकड़े टुकड़े हुए हैं। यह सब पर-पदार्थ की आसक्ति के कारण ही हुआ है, किन्तु दुःख की बात तो यह है कि तू यह सब भूलकर मूढ़ता से पुनः उन्हीं पर-पदार्थों में आनंद समझने लगता है। क्यों तू लज्जा से मरता नहीं?

उपाध्याय विनयविजयजी म.सा. यहाँ जीव को उपालंभ देते हुए कहते हैं। हे मूरख! तू क्यों लज्जा नहीं रखता। तुझे शर्म आनी चाहिए कि अभी तक तूने जो भी पीड़ा, दुख, कष्ट सहन किए हैं वे सब पुद्‌गल की आसक्ति के कारण ही सहे हैं। जैसे जैसे पुद्‌गल राग बढ़ता गया वैसे वैसे दुःख भी बढ़ता गया। फिर भी तू बेफिक्र है।

इस बात को एक दृष्टांत से अच्छी तरह समझा जा सकता है। शक्कर घुले पानी से भरी एक गिलास रखी हुई है। आप विचारते हैं कि कुछ समय बाद जलपान करूँगा। इतने में चीनी की

गंध से एक चींटी आ जाती है। चींटी को दूर से ही गंध की पहचान हो जाती है। धीमे धीमे चींटी ग्लास के समीप आती है। मिठास को प्राप्त करने की अदृश्य इच्छा से वह ग्लास के ऊपर चढ़ती है, फिसलकर पानी में गिरने से तड़पने लगती है। कुछ सेकंड पहले तक मिठास को ढूंढने में लगी चींटी मिठास को छोड़ प्राण बचाने की कोशिश में लग जाती है। उसी समय आपकी नजर पानी पर जाती है। आप सावधानी से चींटी को पानी से बाहर कर देते हैं। चींटी कुछ समय पश्चात् स्वस्थ हो जाती है।

अब यदि कोई आपसे पूछे कि चींटी का अगला रुख क्या होगा? आप कहेंगे कि चींटी फिर से ग्लास की ओर ही जाएगी। तात्पर्य यह कि इतना कड़वा अनुभव होने के बाद भी चींटी अनुभव को भूलकर मिठास पाने को पुनः तत्पर हो जाती है। आप जानते हैं कि यह चींटी की मूर्खता है। किन्तु चींटी तो अज्ञानी है। तीन इन्द्रियों वाली ही है। और हम और आप?

संसार में अनेक प्रकार की विडंबनाओं को झेलते हुए भी आपकी गति किस ओर है? आप पुनः कहाँ जाते हैं?

शान्त सुधारस के रचनाकार कह रहे हैं कि मुर्खाई की भी कोई हद होनी चाहिए। चींटी तो अज्ञानी है किन्तु मानव को तो कड़वा अनुभव होने के पश्चात सीख लेना चाहिए, कुछ विचारना चाहिए। एक ही भूल बार-बार दोहराने की मूर्खता से बचना चाहिए।

अतः पुद्गल पर से मन को हटाकर नरक निगोद और तिर्यंचगति में ले जाने वाली इच्छाओं पर नियंत्रण करना चाहिए। एक बात ध्यान में रखना चाहिए कि 'पदार्थ मिलते हैं पुण्योदय से किन्तु उनका अच्छा लगना पापोदय के कारण से है।'

जड़ एवं चेतन का भेद हो जाने पर आत्मा जड़ पदार्थों में मोह नहीं करती है। प्रत्येक पदार्थ को ज्ञान दृष्टि से देखती है। संसार में रहने की छूट है, रमने की छूट नहीं है। ज्ञानी महल में रहते हैं, सुविधाओं के बीच रहते हैं किन्तु असलियत को भूलाते नहीं। मन से भौतिक पदार्थों से नहीं जुड़े वही ज्ञानी है। अभी तक बाहर के रत्नों को ही आपने देखा है। आत्मा के अनमोल रत्नों को देखना अभी बाकी है। पौद्गलिक पदार्थों से ममत्व हटाने पर ही वे दिखेंगे।

(क्रमशः)

कायोत्सर्ग के दोष

(सुरेन्द्र गंग, रतलाम)

कायोत्सर्ग (काउस्सग्ग) का अर्थ शरीर का त्याग करना है। इसका विधान यह है कि शरीर से जिन मुद्रा में खड़े होकर अपवाद (रूप-वृहता, ग्लानत्व आदि के कारणवश) एकाग्रतापूर्वक स्थिर होकर बैठना। शब्द से मौन धारण करना और मन से शुभ ध्यान करना। श्वासोच्छवासादि अनिवार्य शारीरिक चेष्टाओं के सिवाय मन-वचन-काया की समग्र प्रवृत्तियों का त्याग कायोत्सर्ग कहलाता है। वह काउस्सग्ग जितने श्वासोच्छावास का हो उतने प्रमाण में नवकार या लोगस्स का चिंतन करें। उसके पूर्ण होने पर नमो अरिहंताणं का उच्चारण करना। काऊस्सग्ग जघन्य आठ से लेकर पच्चीस, सत्ताईस, तीन सौ, पाँच सौ और ज्यादा से ज्यादा एक हजार आठ श्वासोच्छवास प्रमाण वाला होता है। काऊसग्ग के इक्कीस दोष आचार्यों ने बताए हैं-

1. घोटक दोष :- घोड़े के समान एक पैर से काऊससग्ग करना।
2. लता दोषः- जोरदार हवा से कांपती हुई बेल के समान शरीर-कंपाना।
3. स्तंभ दोष :-खंभे या स्तम्भ का सहारा लेकर काउस्सग्ग करना।
4. कुड्य दोषः- दीवार आदि का सहारा लेकर काउस्सग्ग करना।
5. माल दोषः- ऊपर छत से मस्तक अड़ाकर काउस्सग्ग करना।
6. शबरी दोषः- भीलनी के समान दोनों हाथ गुह्य प्रदेश पर रखकर काउस्सग्ग करना।
7. वधु दोष :- कुल वधु के समान मस्तक नीचे झुकाकर काउस्सग्ग करना।
8. निगड़ दोषः-बेड़ी में जकड़े हुए के समान दोनों पैर लम्बे करके या इकट्ठे करके काउस्सग्ग करना।
9. लंबोत्तर दोषः- नाभि के ऊपर और घुटने से नीचे तक चोल पट्टा बांधकर काउस्सग्ग करना।
10. स्तन दोष :- डांस-मच्छर के भय से, अज्ञान व लज्जा के भय से छाती को आच्छादन करके, नमाकर काऊस्सग्ग करना।
11. शकटोर्दिवका दोषः- दोनों पैरों की एडियों या आगे के दोनों अंगूठों को इकट्ठा करके अथवा दोनों को अलग-अलग रखकर अविधि से काउस्सग्ग करना।

12. संयति दोष :– शीतादिक के भय से साध्वी की तरह दोनों स्कंध या समग्र शरीर आच्छादन कर काउस्सग्ग करना।

13 खलिन दोष:– अश्व के चाबुक की तरफ हाथ में रजोहरण रखें।

14 बायस दोष:– कौए की तरह नैत्र के अंदर का भाग घुमाएं, इधर–उधर नचाएं, अलग–अलग दिशाओं में देखते हुए काउस्सग्ग करना।

15 कपित्थ दोष:–पहने हुए वस्त्र जूँ, पसीने, धूल से मलीन हो जाने के भय से कोठे के फल की तरह छुपाके रखें या मुट्ठी बंद करके काउस्सग्ग करना।

16 शीर्षोत्कंपित दोष:– भूतग्रस्त व्यक्ति की तरह काउस्सग्ग में बार–बार सिर धुनना।

17 मूक दोष:– गूंगे के समान समझ में न आवे ऐसे अस्पष्ट शब्द बोलना।

18 अंगुली दोष:–लोगस्स की संख्या गिनने के लिए पोरों पर उंगली चलाते हुए काउस्सग्ग करना।

19 भ्रूदोष:–आँखों की भौहों को नचाते, घुमाते काउस्सग्ग करना।

20 वारूणी दोष:–मदिरा पी हो ऐसे बड़बड़ाहट करते काउस्सग्ग करना।

21 अनुप्रेक्षा दोष:–स्वाध्याय करते हुए दोनों होंठ हिलते हों वैसे होंठ हिलाकर काउस्सग्ग करना।

काउस्सग्ग का फल निर्जरा है। अतः कहा है कि काउस्सग्ग में विधिपूर्वक खड़े रहने से शरीर के अंगोपांग ज्यों–ज्यों टूटते–दुखते प्रतीत होते हैं त्यों–त्यों सुविहित आत्मा के आठ प्रकार के कर्म समूह टूटते हैं।

* वि.सं. 1258 में पू. आ. श्री जगत्चंदसूरि म. ने अखंड 12–12 साल तक आयंबिल तप से तेजस्वी शुद्ध चारित्र की प्रभा, देदीप्यमान कांति को देखकर मेवाड़ के राणा जेत्तसिंह ने पू. आ. श्री को 'तपा' पद से अलंकृत किया एवं उनका शिष्य परिवार 'तपागच्छ' नाम से प्रसिद्ध हुआ जो आज भी विद्यमान है।

* वि.सं. 1100 में मलधारी पू.आ. श्री अभयदेव सूरि म. के शिष्य मलधारी पू.आ. श्री हेमचंद्रसूरि म. ने विशेषावश्यक के ऊपर 28 हजार श्लोक की टीका–रचना की एवं अजमेर के राजा जयसिंह प्रवचन श्रवण करने आते थे। सौराष्ट्र के राखेगार, शाकंभरी नगरी के पृथ्वीराज, भूवनपाल, सिद्धराज जयसिंह, परम भक्त थे । जब पू.आ. श्री कालधर्म हुआ तब श्मसान यात्रा में अजमेर के राजा जयसिंह भी आये थे ।

इच्छा का निरोध ही तप है

(शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)

इच्छारोधे संवरी परिणति समता योगे रे।
तप ते एहिज आतमा वर्ते निज गुण भोगे रे।।

इच्छा का निरोध ही तप है। कई बड़ी-बड़ी तपस्या करने वाले भी वह प्राप्त नहीं कर पाते हैं जो अन्य खाते-खाते प्राप्त कर लेते हैं।

तामली तापस ने साठ हजार वर्ष तक तप किया। वह इक्कीस बार अनाज धोकर उसमें से सारा तत्व निकल जाने के बाद बचे हुए अनाज से लंबी तपस्या के बाद पारणा करते थे। लेकिन तामली तापस का भाव वृद्धिहीन सम्यक तप होने से उनका कल्याण नहीं हुआ।

इधर कुरगड़ू मुनि को खाते-खाते भी केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। कूरगड़ू मुनि को प्रतिदिन सुबह से ही वेदनीय सुधा सताने लगती। वे हर रोज एक घड़ा चांवल खाते ही थे। एक अवसर आया कि संवत्सरि के दिन उनके साथ वाले सभी साधु बड़ी-बड़ी तपश्चर्या याने कोई मासखमण, कोई अट्ठाई, कोई छट अट्ठमतप तो कोई उपवासादि की तपस्या कर रहे थे लेकिन कूरगड़ू मुनि को तो चांवल खाने की क्षुधा सताने लगी।

कूरगड़ू मुनि का नाम भी उनकी इसी आदत से पड़ा था। कूर याने चाँवल और गड़ू याने घड़ा। अर्थात् एक घड़ा चांवल रोज खाने वाले कूरगड़ू । आखिर भूखे नहीं रह सकने वाले मुनि कूरगड़ू महापर्व संवत्सरि के दिन भी मन को मार न सके और उपवासादि को तिलांजलि देकर घड़ा भर चांवल गोचरी लेकर आये और गोचरी करने बैठ गए। यह दृश्य देखकर उनके सभी तपस्वी साधु उनकी आलोचना करने लगे और कोई तो उनके चांवल के पात्र में थूकने लगा। इतना सब होते हुए भी कूरगड़ू मुनि अपनी आत्मध्यान की मस्ती में लीन रहे। वे न तो कभी किसी की निंदा करते, न क्रोध करते, बस उनके मन में यही भाव आता कि मैं पर्व के दिन भी खाना नहीं छोड़ पा रहा हूँ जबकि मेरे ये सभी महान तपस्वी साथी , मुनि भगवंतों ने चांवल में घी सा अमृत थूक कर मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है। इस तरह तपस्वियों की प्रशंसा और स्वयं की आत्मनिंदा में लीन कूरगड़ू मुनि को चांवल खाते-खाते केवल ज्ञान हो गया, जो बड़े-बड़े ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वियों को प्रयासों के बाद भी नहीं होता। यह सब भाववृद्धि करने वाले सम्यग् तप का परिणाम था। यह अभ्यंतर तप संसार के दुःख से मुक्ति दिलाने वाला था।

सुख-दुःख परिस्थिति नहीं, मनःस्थिति पर निर्भर

(अनूप जैन)

सुख क्या है? वर्त्तमान संदर्भों में समग्र भौतिक संसाधनों की उपलब्धता को व्यवहारतः सुख के रूप में ग्रहण किया जाता है, यानि सुख इन्हीं संसाधनों में समाया होता है। इस परिप्रेक्ष्य में संसाधन जुटाने में जो जितना कामयाब हो, उतना ही सुखी होता है, ऐसी लोक-चिंतन की परम्परा रही है। इस तरह से भौतिक संसाधनों को सुख का पर्याय मानने वालों के पीछे वर्तमान जीवन दर्शन, जिसमें वे जीवन जी रहे होते हैं, का ठोस आधार होता है। जैसे आज कमरतोड़ महंगाई के समय में जिनके पास दोनों समय का भोजन, रहने के लिए आवास व पहनने के लिए कपड़े सुगमतापूर्वक उपलब्ध हो जाते हों, उनके लिए यही सबसे बड़ा सुख होता है।

यथार्थतः यह बात स्वाभाविक व उचित भी प्रतीत होती है लेकिन मूल प्रश्न यह उठ खड़ा होता है कि मनुष्य की महत्त्वाकांक्षा क्या इतने सीमित दायरे में ठहर रही है? उत्तर 'नहीं' में मिलता है। ठीक इसी प्रकार क्या मनुष्य गाड़ी, बंगला, खूबसूरत पत्नी, अकूत धन सम्पत्ति, अन्य भौतिक संसाधनों को जुटा लेने के बाद भी अपनी आकांक्षाओं-तृष्णाओं पर अंकुश रख पाता है। क्या, इतने भौतिक सरंजाम जुटाने के पश्चात् मनुष्य मानसिक रूप से शांत व संतुष्ट रह पा रहा है? यदि वह शांति का अनुभव कर सका होता तो उसकी आकांक्षाएं-तृष्णाएं तिरोहित हो गई होतीं, उसका चित्त शांत और स्थिर हो गया होता, असीम सुख के महासिंधु में वह गोते लगा रहा होता। पर वर्त्तमान में कहीं भी ऐसा कुछ नहीं दिखता। आदमी की विकलता, उसके चित्त की अशांति उसे क्षणमात्र के लिए भी चैन की सांस नहीं लेने देती। तृष्णा और अहन्ता सुरसा की भांति मुंह बांये मनुष्य के सुखमय क्षणों को हर समय ग्रास बनाने को तत्पर रहती है। ऐसे में आदमी को सुख और शांति मिलने की बात सपने जैसी ही लगती है।

इन विवेचनों से यह तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि भौतिक संसाधनों के भारी से भारी इंतजाम भी मानव

जीवन को कदापि सुखमय नहीं बना सकते हैं। सुविधाएं हमारे ओजस्-तेजस्-वर्चस् को न सिर्फ आहिस्ते-आहिस्ते कमजोर करती हैं, अपितु एक तरह से क्रमशः आत्मघात की ओर भी धकेलती है। ऐसी दशा में भौतिक सुविधाओं के सरंजाम में सुख तलाशना हमारी मृगतृष्णा के अलावा और क्या हो सकता है? हम उन्हीं के जीवन से अपनी तुलना करके देखें जिन्हें हर प्रकार की सुविधाएं, भोग-विलास के साधन उपलब्ध हैं। सुविधा संपन्न जीने वाले न सिर्फ तरह तरह के रोगों के शिकार होते हैं, अपितु संघर्ष कर जीवनयापन करने, तनावपूर्ण जीवन जीने को भी मजबूर होते हैं। भूख नहीं लगती है, नींद नहीं आती है, जीवन में बनावटीपन का बोलबाला रहता है, सब ओर कृत्रिमता रहती है। ऐसे में चैन कहाँ? भूख नहीं लगती, नींद नहीं आती, तो सुख कहाँ? सारी ऊर्जा तरह-तरह से उत्पन्न रोगों से जूझने में ही खप जाती है, सुख तो वहाँ नाममात्र भी नहीं मिलता।

इसके विपरीत प्रतिकूल परिस्थितियों में जीवनयापन करने वालों को, जिन्हें एक-एक रोटी के लिए भारी श्रम करना पड़ता है। भूख भी अच्छी लगती है और पेट में अन्न गया नहीं कि नींद भी समय पर आ जाती है। ऐसे में उनके पास बीमारी होने व उसके बारे में चिंतन-मनन करने का समय ही नहीं बचता है। लेकिन यहां पर भी जो सात्विक विचार वाले होते हैं, जिनमें संतोष की भावना रहती है, जीवन जीने का कोई सार्थक उद्देश्य होता है, उनके लिए ही यह प्रतिकूलता-संघर्षशीलता स्वर्णिम उपलब्धियों वाला, स्वर्णिम सुखों वाला साबित होता है, अन्यथा चिन्ता-अनिद्रा अनेकानेक रोगों की जड़ भी बन जाती है।

सामान्यतः आदमी अनुकूलता-प्रतिकूलता की स्थिति से अप्रभावित नहीं रह पाता है। जाहिर सी बात है कि अनुकूलता की दशा में व्यक्ति को अपने उद्देश्य प्राप्त करने में सुगमता तो होती ही है। वह तेजी से अपने लक्ष्य तक पहुँच भी जाता है। जबकि प्रतिकूल स्थितियों का सामना न कर पाने की दशा में उसके भीतर से अधकचरापन-अपरिपक्वता की बू निरंतर आती रहती है। परिणामस्वरूप फिसलन की स्थितियाँ बड़ी तेजी से पनपने लगती हैं, जिसका अंत वहीं होता है, जहाँ से चलने की शुरुआत की थी। कभी कभी उससे भी नीचे जाकर...।

इस प्रकार के सुख अंततः दुःखदायी होते हैं। अतः सुख की आकांक्षा रखने वाले व्यक्तियों को प्रतिकूलता को अभिशाप नहीं वरदान

मानकर अंगीकार करना चाहिए। तभी उसमें उस तरह के सुखोपभोग करने की सामर्थ्य जगती है, जिसकी अपेक्षा रहती है। साथ ही उसमें ऐसी परिपक्वता आती है, जिसके बल पर वह निरंतर अग्रगामी बना रहता है। उसे कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ता, मुंह की नहीं खानी पड़ती है और न ही किसी अन्य प्रकार की मानसिक यातना ही झेलनी पड़ती है।

भारतीय संस्कृति के ध्वजवाहक-मनीषियों एवं आचार्यों ने इसी नाते व्यक्तित्व को परिष्कृत करने के उद्देश्य से ही गुरुकुल परम्परा की स्थापना की थी। इसमें नवांकुरों को हर प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने का अभ्यास कराया जाता था। उस निर्माणशाला से निकलने वाले व्यक्ति सौ टंच सोने की भांति खरे होते थे। जीवन में आने वाली प्रतिकूलताओं को वरदान रूप में परिवर्तित कर विकास के शिखर पर जा पहुंचते थे। प्रतिकूलताओं से जूझने का अभ्यास सेना में भी कराया जाता है। सर्कस वाले भी प्रतिकूलताओं से लड़कर तरह-तरह की कलाबाजियाँ दिखाते रहते हैं, जो देखने वालों को दांतों तले अंगुलियाँ दबाने व प्रशंसा करने को मजबूर कर देती हैं।

अगर सीधे कहें तो सुख प्रतिकूलताओं से जूझते हुए उस पर विजय पाने की स्थिति में है। भौतिक संसाधनों, विलास सामग्रियों में डूब जाने की स्थिति को सुख कतई नहीं कहा जा सकता। क्योंकि यह तो धीमी गति से आत्महत्या की ओर धकेलने का सरंजाम भर है। इसलिए हमें अपनी दृष्टि के सामने पड़े संशय के पर्दे को हटाकर परिस्थिति का रोना रोने की बजाय अपनी मनःस्थिति में बदलाव लाने की जरूरत है, ताकि सुख-दुःख का सही अंदाजा हो सके....।

जयंतसेन-अमृतवाणी

वटवृक्ष केवल ग्रीष्म का संताप मिटाता है, किन्तु नमस्कार महामंत्र जन्म-मरण के भ्रमण का सन्ताप मिटाता है। सरोवर एक समय की प्यास थोड़े समय के लिए बुझाता है, परन्तु महामंत्र जिज्ञासा की अनादिकालीन प्यास अनन्त समय के लिए बुझाता है। थकावट मिटाने वाला विश्रान्ति भवन अमुक समय बाद छोड़ना पड़ता है परन्तु महामंत्र आत्मरमण रूपी ऐसे विश्रान्ति भवन में पहुँचाता है, जहाँ से कभी लौटना नहीं पड़ता।

सफलता का सूत्र है-आत्मबल

- कोमल कुमार 'उमरी'

संघर्ष देता है सफलता ?

दो व्यापारी थे– एक जापानी और दूसरा अमेरिकन। दोनों एक ही वायुयान से अफ्रीका पहुँचे। दोनों जूता कम्पनी के दलाल थे। एक ही लक्ष्य से दोनों यात्रा पर गये थे। वहाँ पहुंचकर उन्होंने स्थानीय लोगों को देखा। दोनों के मन में प्रतिक्रिया हुई और दोनों ने अपनी–अपनी कम्पनियों को मोबाइल से संदेश भेजा। अमेरिकन ने अपनी कम्पनी को सूचना दी कि मैं इसी जहाज से अमेरिका लौट रहा हूँ। यहाँ जूतों की बिक्री संभव नहीं है। यहाँ सब नंगे पैर रहते हैं। जापानी ने अपनी कम्पनी से हजारों दर्जन जूते भेजने के निर्देश देते हुए कहा– 'यहाँ किसी के पास जूते नहीं हैं, इसलिए माल भेजने में शीघ्रता करें..।' जापान का व्यापारी वहां जम गया और अमेरिकन मुँह देखता रह गया। जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष तभी सफल हुआ जब उस जापानी में आत्मीय शक्ति थी। उसका आत्मबल मजबूत था। आत्मबल स्वयं की छिपी हुई आन्तरिक शक्ति का उद्भव है। वह 'स्व' की प्रेरणा है तथा अंतःकरण से उपजी हुई स्वधारणा है। वह व्यक्ति को स्वयं की नजरों में अपने मूल्य को परखने की ताकत देता है। इसका उद्देश्य लक्ष्य की प्राप्ति है और लक्ष्य प्राप्ति ही ' स्व' की मौलिक समझ व गौरवपूर्ण अनुभूति है।

आत्मबल क्या है ?

आत्मबल अपने आपके प्रति विश्वास का नाम है, जो प्रगति के पथ पर आगे बढ़ाने में सहायक है। जीवन के हर क्षेत्र में स्वयं की गुणवत्ता को यह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करता है। वस्तुतः जीवन की सफलता एवं प्रसन्नता का आधार ही आत्मबल है जो आत्म गौरव की स्वस्थ विचारधारा को जन्म देता है। आत्मबल विहीन व्यक्ति जीवन को नीरस बना लेता है, जो असफलता का कारण बनता है। एक मुक्तक में कहा गया है –

तुम्हारे कदमों में करामात होगी,
तो फरिश्तों से मुलाकात होगी।
अगर बदल सको अपना नजरिया तो,
हर एक सफलता तुम्हारे साथ होगी।।

संसार क्षेत्र में बहुत सारे पदार्थ हैं। पदार्थों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। इसका निर्णय करने वाली चेतना है। दर्शन जगत् में दो शब्द प्रचलित हैं–ज्ञान और ज्ञेय। सम्पूर्ण पदार्थ ज्ञेय हैं और ज्ञान कराने वाली चेतना है।

जानने का उपक्रम है ज्ञान और ज्ञान का ही दूसरा नाम है दर्शन। संसार, दृश्य (जगत) क्षेत्र है, उसे आँखों से देखते हैं। दार्शनिक दृष्टि से देखा जाए को दर्शन का अर्थ बहुत व्यापक है। पच्चीस बल में दर्शन के चार प्रकार हैं– चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधि दर्शन और केवलदर्शन। दर्शन का साधना में भी प्रयोग हुआ है। एक दृष्टि से चिंतन करें तो सूक्ष्म पर्यायों का ज्ञान सूक्ष्म जगत का ज्ञान दर्शन के द्वारा है। ज्ञान का काम है विश्लेषण करना। एक परोक्ष ज्ञान है, एक प्रत्यक्ष ज्ञान है। साक्षात्कार प्रत्यक्षीकरण दर्शन है। उसमें कुछ परोक्ष नहीं होता। उस

साक्षात्कार की चरम कोटि तक पहुँचने के लिए हम देखना शुरू करते हैं।

उसके बीच हमारी साधना है। चरम बिंदु में साधना की आवश्यकता नहीं रहती। वह सिद्धि में समाविष्ट हो जाती है। प्रेक्षाध्यान पद्धति में कहा जाता है कि आत्मा के साथ आत्मा को देखो, किन्तु यह तो साधना की चरम स्थिति है। हमने एक लक्ष्य बनाया है कि आत्म–साक्षात्कार करना उसकी प्राप्ति के लिए अभ्यास के रूप में कहा जाता है। आत्मा के द्वारा आत्मा को देखो। दर्शन का प्रारंभ बिन्दु अपने शरीर से शुरू होता है। देखने के तीन साधन हैं हमारे पास– शरीर, वाणी और मन। शरीर, मन और वाणी पौद्गालिक हैं, अतः आत्मा से भिन्न हैं। आत्मा को देखने का एक अर्थ है–हम शरीर को देखें, शरीर में होने वाले प्रकम्पनों को देखें, पर्यायों के परिवर्तन को देखें। हमारे पास मापन का कोई यंत्र नहीं है अन्यथा पता चलता कि एक दिन में हजारों परिवर्तन घटित हो जाते हैं। इन परिवर्तनों को देखने का अभ्यास है–आत्मबल।

आत्मबल जीवन की सफलता का रहस्य है क्योंकि यह तमस में, सघन कोहरे में तेजस्वी सूर्य के समान चमकता है। ज्यों–ज्यों संघर्ष के क्षण बढ़ते हैं, त्यों–त्यों आत्मबल भी बढ़ता जाता है। कठिनाइयों, बाधाओं, विपत्तियों के बीच हर पल बढ़कर यह और भी उत्तम और प्रखर होता जाता है। यह हर विपरीत परिस्थिति को चीरकर निकलता है। प्रतिकूलता में अनुकूलता इसका मुख्य लक्ष्य है। आत्मबलशाली पुरुष कभी हार नहीं मानता, कभी थकता नहीं, रुकता भी नहीं। वह सदैव अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है, क्योंकि आत्मबलशाली व्यक्ति अपने अन्तर्मन से अच्छाइयों तथा बुराइयों का गहन विश्लेषण करता है। वह अपने चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में समाये हुए आत्म–गौरव को धूमिल करने वाले नकारात्मक तत्वों को अलग–अलग कर देता है, जिससे हमारी शक्ति बढ़ती है। इससे दृढ़ता एवं निश्चयात्मकता उत्पन्न होती है।

आत्मबल को कमजोर करते हैं, जीवन के नकारात्मक भाव एवं व्यक्ति की हठधर्मिता जो उसके पथ में रोड़े बनकर लक्ष्य के चरम बिंदु तक पहुंचने में बाधा उत्पन्न करती है, लेकिन आत्मबल इतना ताकतवर होता है कि सदैव जाग्रत रहता है, तूफान की भांति सामने आए अवरोधों को उड़ा देता है। मस्तिष्क में जो प्रमाद का कचरा, कायरता की गंदगी व मलिनता है, उसे साफ कर देता है। सफलता के शिखर तक जा पहुंचता है, लेकिन वहां भी वह गर्वित नहीं होता–शांत और स्थिर रहता है। यदि असफलता भी हासिल होती है तो निराशा के घोर अंधेरे में घिरता नहीं है, उसकी आत्मचेतना जाग्रत रहती है।

आत्मबल सफलता का मूल मंत्र है, जो अत्यन्त छोटे बीज की तरह होता है। आत्मविश्वासी इस बीज को उपयोगी पोषण देकर विशालकाय छायादार वृक्ष के रूप में विकसित कर ही लेता है, जिसकी छाँव तले न जाने कितने थके–हारे पथिकों को शीतलता मिलती है। आगे बढ़ने से पूर्व थोड़ा विश्राम मिलता है। इस प्रकार वह स्वयं भी तृप्त होता है और दूसरों को भी तृप्ति में सहायता प्रदान करता है।

युग प्रभावक, राष्ट्रसंत, आचार्य देवेश श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

(श्री सज्जनसिंह लोढा)

विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।
चरण कमल मैं जाऊँ बार-बार बलिहारी।।

मगसर वदि तेरस जन्मे, हुआ धरू कुल जयकारी,
पार्वती स्वरूपचन्द के घर, जब भरी पूनम ने किलकारी।
नाचे गाये हर्ष मनाये, पेपराल के सब नर नारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।1।।

बाल्यकाल में शुभदिन आया, मिले यतीन्द्र सूरिराया,
नतमस्तक हुए पूनमचंद, मन ही मन खूब हर्षाया।
करे निवेदन यतीन्द्रसूरि से, शरण लें अपनी गुरुराया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।। 2।।

धर्मनगरी निम्बाहेड़ा में, कवि कुन्दनमलजी रहते,
गुरु आज्ञा से हिंदी, इंग्लिश, उर्दू का अध्ययन करते।
संस्कृत भाषा की शिक्षा पंडित रंगलालजी देते,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।3।।

अभिधान राजेन्द्र विश्व कोष का उद्गम स्थल,
नगर सियाणा जो स्थित है माय मरूस्थल।
हुई दीक्षा, नाम दिया जयन्तविजय तत्पल,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।4।।

विक्रम संवत् दोय हजार दस, माघ सुद चौथ जयकारी,
मुराद पूरी हुई पूनमचंद की, मिली शरण यतीन्द्र थारी।
हर्षित हो उत्सव मनावे, सियाणा नगर के सब नर नारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।5।।

नौ सौ बिम्ब प्रतिष्ठा कीनी, राजेन्द्र सूरि जगजानी,
किया प्रथम चौमासा आहोर, यतीन्द्र गुरु सानी।
उपनाम मिला 'मधुकर', सबने जाना गुण खानी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।6।।

मिली लगभग आठ वर्ष तक, पावन गुरु की छत्रछाया,
ज्ञान ध्यान और गुरु आज्ञा से, जीवन सरल बनाया।
'युवाचार्य' संबोधित कर, गुरु यतीन्द्र ने दर्शाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।7।।

कहे यतीन्द्र गुरुवर, किया मेरा तुम करना,
परिषद् और शाश्वत धर्म का संचालन करना।
लिया संकल्प गुरु आज्ञा हरदम पूरी करना,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।8।।

स्वर्ग सिधारे गुरु, पौष सुद तीज दिन कैसा आया,
ना जोर ना उपाय, बात जान, दुःख को बिसराया।
मुनि सौभागविजय संग,चौमासा निम्बाहेड़ा ठाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।9।।

सावन की सातम से पूनम तक, करी आराधना नवकार संग,
जानो अखण्ड आराधना चल रही, नहीं करी अब तक भंग।
महामंत्र नवकार से मिली कीर्ति, सुख शांति अभंग,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।10।।

मोहनखेड़ा मुनि विद्याविजयजी का, सूरि पद स्थल जान,
त्रि-शिखर मन्दिर बना, बढ़ी त्रिस्तुतिक जन की शान।
मुनि जयन्त भी सहभागी बने, हुई जय-जय विद्या गुरु महान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।11।।

मरूधर में भाण्डवपुर तीर्थ, महावीर का प्राचीन जान,
'मधुकर' जयन्त विजय का, पाट महोत्सव स्थल मान।
दिया नाम जयन्तसेन, स्थवीर शान्तिविजय महान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।12।।

उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने, नजर अपनी घुमाई,
सूरि जयन्तसेन के दर्शन-ज्ञान-चारित्र की समझ आई।
'राष्ट्रसंत'से सुशोभित कर, भावना अपनी प्रगटाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।13।।

लिया आशीर्वाद जावरा नगर में, पत्नी विमला संग आई,
कर स्वागत हर्षित हुए, त्रिस्तुतिक संघ अध्यक्ष गयाभाई।
जैन, जैनेत्तर भी हर्षित, उपराष्ट्रपति को बीच अपने पाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।14।।

भाण्डवपुर तीर्थ पर बना कमलाकार चऊँमुखा राजेन्द्र धाम,
फैलाया चहुँ दिशाओं में, सत्य, अहिंसा परमोधर्म का पैगाम।
गगनचुंबी ऊंचाई लिए, उत्तम भाव यह जयन्तसेन के मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।15।।

यतीन्द्र जयन्त ज्ञान पीठ, धार्मिक शिक्षण हेतु खुलवाया,
पाठ्यक्रम के माध्यम से हजारों ने जीवन उन्नत बनाया।
श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् ने भी योगदान कराया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।16।।

मोहनखेड़ा तीर्थ पर जयन्तसेन म्यूजियम बनवाया,
स्वस्तिक आकार पर सम्पूर्ण जैन दर्शन दर्शाया।
विश्व की अनमोल आकृति देख, सब जन मन हर्षाया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।17।।

संयम के पूरे कर पचास वर्ष, नगर सियाणा आये,
मुमुक्षु मनीष को दीक्षा दे, संयम रत्न नाम दर्शाये।
अर्धशताब्दी महोत्सव मना, सब जन मन हर्षाये,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।18।।

गुरु आज्ञा से गाँव–गाँव शाखा परिषद् सज्जित कराई,
शाश्वत धर्म पत्रिका में भी ज्ञान–ध्यान की बात बताई।
अर्ध शताब्दी महोत्सव भी जाय नैल्लोर नगर मनाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।19।।

शताब्दी वर्ष मोहनखेड़ा, भाव से वन्दे गुरुवरम्,
उग्र विहार कर पधारे एकता शिल्पी, हुए गुरु चरणम्।
लाखों भक्त जमा हुए, प्रेम से बोले राजेन्द्र गुरुवरम्,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।20।।

ज्योति राजेन्द्र की कश्मीर से कन्याकुमारी तक फिराई,
गांव–गांव, नगर–नगर दर्शन करा, भरतपुर में आई।
सूरि जयन्त आशीर्वाद से, राजेन्द्र कीर्ति मंदिर समाई,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।21।।

सूरि राजेन्द्र का जन्म स्थल नगर भरतपुर जान,
राजेन्द्र कीर्ति मंदिर बना, बढ़ाई जिनशासन की शान।
मात–पिता का भी मंदिर बनाकर, दिया उन्हें सम्मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।22।।

बहोत्तर जिनालय प्रतिष्ठा, इक्कीसवीं सदी महान,
लुंकड़ परिवार भीनमाल ने बढ़ाई, राजेन्द्र गुरु की शान।
जाकर दर्शन वंदन करना, बात जयन्तसेन की मान
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।23।।

कम समय में दिया मधुकर, जन्म भूमि पर तीर्थ आकार,
पेपराल बना तीर्थ, हुआ मुनि नित्यानंद का स्वप्न साकार।
भारी महिमा महावीर की, जाय देखो सब नर–नार,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।24।।

मोटा मंदिर महावीर का, बना थराद नगर की शान,
बना डीसा महाविदेह, जिनशासन की पहचान।
शुभ आशीर्वाद यह मधुकर, जयन्तसेन का मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।25।।

दक्षिण भारत में तीर्थ राजेन्द्र नगर अलौकिक अभिराम,
महाविदेह, गुम्मीलेरू, विजयवाड़ा बना राजेन्द्र धाम।
अभिवृद्धि से प्रफुल्लित हुआ मन, देख जयन्तसेन का काम,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।26।।

मरूधर, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात विहार स्थल खास,
तमिल, आंध्र, कर्नाटक, सूरि जयन्त के हरदम पास।
बंगाल, बिहार, यूपी, दिल्ली करते बार–बार यह आस,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।27।।

कई मुमुक्षु हुए दीक्षित, दीक्षा दानेश्वरी जयन्तसेन को जान,
विपुल साहित्य लिखा अब तक, साहित्य मनीषी मान।
करी कई अंजनशलाका प्रतिष्ठा, मिला तीर्थोद्धारक सम्मान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।28।।

जीव दया संकल्प भारी, बनवाये अस्पताल, गौशाला बहुतारी,
सुखी रहे जीव जगत के, बात यह जयन्तसेन विचारी।
ज्ञान विज्ञान से रहे संपन्न, हैं विद्यार्थियों के हितकारी।
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।29।।

पर्यावरण प्रेमी सुविशाल गच्छाधिपति जन–जन के आधार हैं,
वर्तमान के वर्धमान सूरि जयन्तसेन को कोटि कोटि प्रणाम है।
आशीर्वाद मिलता रहे, निवेदन परमात्मा से यह खास है,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।30।।

अनन्त ज्ञानी अनन्त उपकारी, आप हैं भाग्य विधाता,
हस्तकमल से मिले वासक्षेप, पाये सब सुख शाता।
जयन्तसेन से सुनी मांगलिक, काम सब बन जाता,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।31।।

साध्वी प्रमुखा शशिकला, अविचल, अनुपम, मैत्री, निरूपम,
पधारे निम्बाहेड़ा चातुर्मास, बही ज्ञान गंगा अविराम।
त्याग, तपस्या से किया जाग्रत, वंदे जयन्त गुरुवरम्,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।32।।

बना ज्ञान मंदिर हम सभी जयन्तसेन के आभारी,
हुई प्रतिष्ठा बिराजे श्रेयांस मनोहर मोहन अविकारी।
पचरंगी ध्वजा फहराई, नयनाभिराम जयकारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।33।।

चौमासा साठवाँ बड़नगर सम्पूर्ण मालवा में धूम मचाया,
प्रतिष्ठा, उपधान, सामूहिक तप सहित अधिवेशन मनाया।
बाद जन्मदिन छःरिपालित संघ ले मोहनखेड़ा आया,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।34।।

महावीर की तुंगीया जयन्तसेन की पारा नगरी जान,
धर्म संस्कृति से सुशोभित, परमभक्त श्रावक विद्वान।
गुरु मन्दिर बनाकर, पाटोत्सव मनाया भव्य आलीशान,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।35।।

जयवन्ता हो जयन्तसेन, प्रार्थना सूरि राजेन्द्र से हमारी,
स्वस्थ रहें आप सदा, कामना करते सब नर–नारी।
'सज्जन' नत–मस्तक हो कहता आप सदा उपकारी,
विजय जयन्तसेन महाराज बड़े उपकारी।।36।।

तुम बड़े होशियार हो

(सा.रुचिदर्शनाश्रीजी म.)

धन्य हैं वे लोग
जो कठोर चट्टानों में भी
निर्मल झरना ढूँढ लेते हैं।
काँटों में भी खिला
गुलाब देख
प्रसन्न हो जाते हैं।
कीचड़ में भी
कमल की सुवास ले लेते हैं।
किन्तु तुम बड़े होशियार हो,
जो अनेक गुणों युक्त
मुनियों में भी दोष ढूँढ लेते हो।
जहाँ-तहाँ चर्चा कर लेते हो
अच्छे-बुरे का भेद कर लेते हो
मन को राग-द्वेष से भर लेते हो।
किंतु यह भेदभाव कुछ और नहीं
तुम्हारी अज्ञानता का ही सूचक है,
तुम्हारे अहंकार का प्रदर्शन है।
तुम्हारा वैचारिक भ्रम है,
तुम्हारी सोच ही विषम है।
तुम स्वयं को बुद्धिमान समझते हो,
और ज्ञानियों की आशातना करते हो।
भेदभाव का चश्मा उतारो जरा,
अपने ज्ञान चक्षु खोलो जरा।
तभी जान पाओगे,
स्व और परहित के लिए
उनका कितना श्रम है।
उनका जीवन कितना उत्तम है,
कितना निर्मल है।

परिवार

(गीतादेवी डागा)

कब, कैसे और कहाँ हुई, हमसे ये सब भूल,
इस सुंदर परिवार पर, जम गयी काली धूल।
शनैः शनैः कुछ इस तरह, बिगड़ा घर का हाल,
पहले दिल में, फिर उठी आंगन में दीवाल।
समता का आलम रहा, तब तक घर था एक,
ममता आ गयी तो हो गये, घर में किचन अनेक।
घर की खुशियों को लगा, जाने किसका श्राप,
खेत बंटे, घर बंटा, और बंटे माँ-बाप।
पहले दिल में प्यार था, फिर आया अभिमान,
टकराये अभिमान तो, घर हो गया वीरान।
मैं उसको दोषी कहूँ, वो दे मुझको दोष,
हम हिस्से तो पा गये, ना पाये संतोष।
घर के टुकड़े देखकर, हर कोई है हैरान,
दिल भी टूटा इस तरह, रही न जान में जान।
मुखिया चिंता में पड़ा, हुई कहां पर भूल,
पेड़ लगाया आम का, कैसे हुआ बबूल।
बूढ़े पंछी सोचते-कहाँ करें फरियाद,
कोई भी करता नहीं, अब हमसे संवाद।
घर पिंजरे सा लग रहा, मन में उठता शोर,
रुख बदलो और बढ़ चलो, अब समाज की ओर।
घर को कभी ना बांटना, टूटेगा परिवार,
यदि बांटना ही चाहते हो तो तुम बांटो बहनों प्यार,
तो तुम बांटो बहनों प्यार, तो तुम बांटो बहनों प्यार।

जमींकंद खाए तो...

(राग–श्याम तेरी बंसी को बजने से काम)

– जयंत चरणवासी संयमरत्नविजयजी 'प्रवासी'

जिनवाणी सुनते ही, आए आनंद
जमींकंद खाए तो, आए दुःख द्वंद्व–2।।0।।

भोजनानंदी को, प्रभु ने समझाया,
समझाने पर भी, समझ न आया।
छूटे साधु संत–2 होऽऽ, नहीं छूटे जमींकंद।। जमींकंद खाते।।1।।

एक शरीर में, अनंत जीव रहते,
आनंद तुम करो, वेदना वो सहते।
समझ न आए–2 होऽऽ, ये कैसा है द्वंद्व।। जमींकंद खाते।।2।।

वैसा ही फल पाए, जैसा बीज बोते,
तामसिक भोज खाए, फिर वह रोते।
तमस में रहते–2 होऽऽ, सभी जमींकंद।। जमींकंद खाते।।3।।

तामसिक खाए तो, बुद्धि भ्रष्ट होती,
वैभव संपत्ति भी शीघ्र नष्ट होती।
रहती सदा उसमें –2 होऽऽ, बहुत दुर्गंध।। जमींकंद खाते।।4।।

जहाँ जहाँ अंधेरा, वहाँ जीव रहते,
'जयणा' पालन करो, जिनवर कहते।
जमीन में रहे –2 होऽऽ, वह होता जमींकंद।। जमींकंद खाते।।5।।

'सूरि राजेन्द्र' छाँव, सदा सुखकंद है,
'जयन्त सेन सूरि', पूनम के चंद हैं।
'भुवन में' संयम से–2 होऽऽ, होवे नित्यानंद।। जमींकंद खाते।।6।।

जिंदगी और मौत

(कु.पूजा कटारिया, रानापुर)

जिंदा थे तो किसी ने पास बैठाया नहीं,
और अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।

पहले कभी किसी ने मेरा हाल न पूछ
अब सभी आँसू बहाये जा रहे हैं।

एक रूमाल भी नहीं दिया जब हम जिन्दा थे,
और अब शाल-दुशाले, कपड़े डाले जा रहे हैं।

सबको पता है कि ये कपड़े मेरे नहीं काम के
फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाये जा रहे हैं।

कभी किसी ने एक दाना भी खिलाया नहीं,
अब देशी घी मेरे मुंह में डाले जा रहे हैं।

जिंदगी में कभी, किसी के साथ एक कदम न चल सका कोई,
अब फूलों से सजाकर कंधों पर उठाकर ले जा रहे हैं।

कभी किसी ने राम का नाम लिया नहीं,
अब राम नाम सत्य है, सत्य बोलो सत्य हैं,
की रट जोरों से लगाये जा रहे हैं।

अब पता चला कि मौत बेहतर है, हम बेवजह ही,
जिंदगी की चाहत किये जा रहे हैं।

हमने जिंदगी में कभी उधार लिया नहीं
अरे कफन भी लिया तो जिंदगी के बदले लिया।

अरे दुनियां वालों, पैदा हुए तो नंगे पैदा हुए,
मरने पर खाली मुट्ठी खोलकर जा रहे हैं,
मरने पर खाली मुट्ठी खोलकर जा रहे हैं ।

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

શ્રી સકળ સંઘને મિચ્છામી દુક્કડમ્

વર્ષ દરમ્યાન જાણતા-અજાણતા મન-વચન-કર્મથી અમારા દ્વારા કોઈપણ જીવને દુઃખ પહોંચ્યુ હોય... વર્ષભરમાં બીજાને સુખી જોઈ ઈર્ષા કરી હોય... ધુળ ચાટતો કરી દઉં... બરબાદ કરી દઉં... એના ટાંટિયા ખેંચીને એને જમીનદોસ્ત કરી દઉં... આવી ઈર્ષા દ્વારા ક્રોધ કરી આત્માના પાપના સરવાળા કર્યા હોય... દ્વેષ અને ક્રોધથી ઘણા ધમપછાડા કર્યા હોય... બીજાને હલકા, નકામા કહીને નવાજ્યા હોય... જીવનભર આંખમાંથી આંસુ પાડો તો પણ તેનાથી આત્માને થયેલ નુકસાનની ભરપાઈ ન થાય તેવો એક ક્ષણ માટે પણ ક્રોધ કર્યો હોય તો સંવત ૨૦૭૧ ના ભાદરવા સુદ-૪ ને ગુરૂવાર તા. ૧૭-૯-૧૫ ના રોજ સંવત્સરીની સલુણી સંધ્યાએ... મૈત્રીના માંડવે... હૈયાના હેતે... ચોર્યાસી લાખ જીવાયોનીને ખમાવી શ્રી સકળ સંઘને મિચ્છામી દુક્કડમ્...

क्षमा विरस्य भूषण्

અમારા પ્રાણ જેટલા જ વ્હાલા વાંચક મિત્રો, આવો સહુ ભેગા મળી આત્માને નિષ્પાપ બનાવી રતિભાર દોષ ન રહી જાય... ક્ષમાના અમૃત ઘુંટાઈને આપણા સહુના મન મંદિરમાં પ્રતિષ્ઠિત થાય... આપણા વાત્સલ્યની મીઠી મધુર વાંસળી વાગવા મંડી જાય... ચિંતામાં પણ અપૂર્વ શાંતિનો અનુભવ થાય તેવો દૃઢ સંકલ્પ કરી વિતરાગ પરમાત્માએ પ્રબોધેલા માર્ગ પર ચાલી માનવમાંથી મહામાનવ બનાવાનો શ્રેષ્ઠ પ્રયાસ કરીએ.

લિ.
શાશ્વત ધર્મ / ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર

શ્રી પેપરાલ તીર્થે નવ દિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના ભવ્યાતિભવ્ય રીતે સંપન્ન

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થભૂમિની ધન્ય ધરા પર યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ વિશાળ સંખ્યામાં સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે.

ચાતુર્માસ પ્રારંભે વરસાદના વિઘ્નને બાદ કરતાં પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ અને વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોથી શ્રી પેપરાલ તીર્થની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી ઉઠી છે. અત્યારે શ્રી પેપરાલ તીર્થમાં ચોથો આરો વર્તાતો હોય તેવું ધર્મમય વાતાવરણ છવાઈ ગયું છે.

શ્રી સૌધર્મ બૃહત તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ, શ્રી જયંતસેન જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ-પેપરાલ, ચાતુર્માસ સમિતિ, ડીસા પરિષદ, લાખણી પરિષદ વિગેરેની હોંશિલી જહેમતથી શ્રી પેપરાલ તીર્થની પુણ્યવંતી ધરા પૂજ્યશ્રી સપરિવારના પાવન પગલે વધુમાં વધુ ધર્મમય બની ગઈ છે.

જેમના રોમે રોમમાં નવકાર વ્યાપીત છે એવા નવકાર મંત્રના પરમોપાસક તથા પરમાધારક યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવનકારી નિશ્રામાં છેલ્લા ૪૫ વર્ષથી પ્રતિ વર્ષના શ્રાવણ માસમાં સામૂહિક નવકાર મહામંત્રના જાપનું ભવ્યાતિભવ્ય રીતે આયોજન કરાય છે. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં યોજાતા નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રમના જાપમાં જોડાયેલ આરાધક કોઈપણ વર્ષે જાપ કરવા આવવાનું ચૂકતો નથી. પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા ગવાતા મીઠા મધુરા નવકાર મહામંત્રના સ્તવન, ત્રણેય ટાઈમ દેવવંદન, સફેદ વસ્ત્રોમાં સજ્જ આરાધકો સાથેની ચૈત્યપરી પાટી, ભાવયાત્રા વિગેરે શાસન પ્રભાવનાનું આકર્ષણ બની રહે છે. આ નવકાર મહામંત્રના આયોજનમાં જોડાવું એ તો મહાભાગ્યની વાત છે પણ એક દિવસ નિહાળવો તે પણ મોટો લ્હાવો છે.

સંવત ૨૦૭૧ ના શ્રાવણ સુદ-૬ ને શુક્રવાર તા. ૨૧-૮-૨૦૧૫ ના રોજથી શ્રી જયંતસેન જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ-પેપરાલ દ્વારા આયોજીત નવદિવસીય એકાસણા સહિત શ્રી નવકાર મહામંત્રના જાપનો પ્રારંભ થયો હતો. જે આરાધનામાં ૬૫૦ થી વધુ આરાધકો જોડાયા હતા. નવેય દિવસ સફેદ વસ્ત્રોમાં સજ્જ આરાધકો તપ-જપ માં મગ્ન બની નાચી-ગાઈને નવકાર મહામંત્રની ભવ્યાતિભવ્ય રીતે ભક્તિ કરી હતી.

તા. ૨૧-૮-૨૦૧૫ ના રોજથી પ્રારંભાયેલ શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના તા. ૨૯-૮-૨૦૧૫ ને શનિવારના રોજ સુધી ચાલી હતી અને તા. ૩૦-૮-૨૦૧૫ ના રોજ પૂર્ણાહૂતિ કરાઈ હતી અને આરાધકોએ પારણા કર્યા હતા. ત્યારબાદ ભવ્ય વરઘોડો નીકળ્યો હતો. સમસ્ત આરાધકોનું રોકડ રકમનું કવર તેમજ અન્ય ઉપકરણ અર્પણ કરી બહુમાન કરાયું હતું. આ મહામંગલકારી નવેય દિવસનો શ્રી નવકાર મહામંત્રનો કાર્યક્રમ ભવ્યાતિભવ્ય રીતે સંપન્ન થયો હતો.

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજયજયંત સેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારના...

ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ અને ધર્મ આરાધનાથી શ્રી પેપરાલ તીર્થની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી ઉઠી

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની મર્મોપદેશ જિનવાણીના શ્રવણ થકી વર્ષના બારેમાસ શિરમોર ગણાતા એવા પુણ્ય પાવન શાસન કાર્યોનો પવિત્ર નાદ ચારેય ફીરકાઓના સમુદાયમાં દરેક ઘરના આંગણે ગુંજી ઉઠે છે.

પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવ શ્રી જે સ્થળે નિશ્રા પ્રદાન કરતા હોય છે અને પ્રેરણા પ્રદાન કરતા હોય છે તે સ્થળ તપ-જપ અને આરાધનાના રચાતા તોરણોથી ધર્મનગરમાં ફેરવાઈ જાય છે. જેનો સાક્ષાત્કાર અત્યારે સમસ્ત જૈન સમાજ કરી રહ્યો છે.

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. તેમજ વિશાળ સંખ્યામાં સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો શ્રી પેપરાલ તીર્થના આંગણે ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે.

પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાના આગમનથી શ્રી પેપરાલ તીર્થે ધર્મશ્રધ્ધાના ડંકા વાગતા થઈ ગયા છે. અને તેના પડઘા ઈઢાટાથી એન્ટવર્પ સુધી સમસ્ત જૈન પરિવારોના ઘેર સંભળાઈ રહ્યા છે.

અમારા ગુરૂદેવનું ચાતુર્માસ તેમની જન્મભૂમિમાં થાય એટલે અમારે કોઈને કોઈ તપશ્ચર્યા કરવી છે તેવા મનોરથ લઈને બેઠેલા શ્રધ્ધાવંત શ્રાવક-શ્રાવિકાઓના મનોરથ સાકાર થઈ રહ્યા છે. શ્રી જયંતસેન જૈન શાસન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ-પેપરાલ દ્વારા આયોજીત કેટલીય તપશ્ચર્યાઓ થઈ ગઈ છે અને ઉપધાનતપમાં વિક્રમસર્જક તપસ્વીઓ જોડાય તેવું અત્યારે દેખાઈ રહ્યું છે.

પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યદેવશ્રીએ મર્મોપદેશ જિનવાણીના શ્રવણ થકી શ્રાવક-શ્રાવિકા સમુદાયને તપનો મહિમા સમજાવી તપ કરવા પ્રેરણા કરી હતી. ઘુઘરા બાંધી બેઠેલા સમાજના તપસ્વી રત્નોએ પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણાને હરખભેર વધાવી લઈ તપશ્ચર્યાની ગંગામાં સ્નાન કરી શુધ્ધ થવા ઉત્કૃષ્ટ ભાવો સાથે શ્રેણી તપ, સિધ્ધિતપ, ૩૦,૧૬,૧૧,૧૦,૯ અઠ્ઠાઈ, અઠ્ઠમ અને મોટી સંખ્યામાં ચોસઠ પોરી પૌષધમાં જોડાયા હતા ઉપરોક્ત તપસ્વીરત્નોએ સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૮-૯-૨૦૧૫ ના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થ ખાતે વાજતે ગાજતે પારણા કર્યા હતા. પારણાનો લાભ નડીઆદ સ્થિત વોહેરા કાન્તાબેન બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવારે લીધો હતો. સિધ્ધિતપના તપસ્વીઓના પારણા છઠના દિવસે થયા હતા. સમસ્ત તપસ્વીઓનું રોકડ રકમના કવર સાથે શ્રી પેપરાલ ટ્રસ્ટ અને શ્રી કાન્તાબેન બાબુલાલ વોહેરા પરિવાર દ્વારા કંકુના તિલકથી બહુમાન કરાયું હતું. પૂજ્ય સાધુ-સાધ્વીજી સહિત સમસ્ત તપસ્વીરત્નોની યાદી અત્રે પ્રસ્તુત છે.

તપસ્યાના તોરણ બાંધનાર પૂજ્ય શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો

સિદ્ધિતપની આરાધના

પૂ. મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.
પૂ. મુનિરાજશ્રી તારકરત્નવિંજયજી મ.સા.

પૂ. સા. શ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મૈત્રીકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી આગમકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી શાશ્વતપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી વિરાગનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સિધ્ધાંતરસાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી વિરાગદષ્ટાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી વિબુધપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી પરાર્થપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સુવ્રતપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સત્વપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી શુભનિધિશ્રીજી મ.

વિવિધ તપારાધના

પૂ. મુનિરાજશ્રી પવિત્રરત્નવિજયજી મ.સા.-૧૧ ઉપવાસ

પૂ. સા. શ્રી વિજ્ઞાનલત્તાશ્રીજી મ.-૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.-૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.- આઠ અઠ્ઠાઈ
પૂ. સા. શ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.-૩૬+૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી ધ્યાનદષ્ટાશ્રીજી મ. - માસક્ષમણ
પૂ. સા. શ્રી સ્મિતપ્રિયાશ્રીજી મ. - ૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી સંવરલત્તાશ્રીજી મ. - ૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી વીરનિધિશ્રીજી મ. - ૨૧ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી મેરૂનિધિશ્રીજી મ. - ૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ. - ૧૬ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી સોહમપ્રિયાશ્રીજી મ. - માસક્ષમણ
પૂ. સા. શ્રી શ્રેયાંસનિધિશ્રીજી મ.-૮ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી તીર્થનિધિશ્રીજી મ. - ૮ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી મંત્રકલાશ્રીજી મ. - ૧૬ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી અર્પણપ્રિયાશ્રીજી મ. - માસક્ષમણ
પૂ. સા. શ્રી નયનિધિશ્રીજી મ.- ૧૧ ઉપવાસ
પૂ. સા. શ્રી નિરૂપમકલાશ્રીજી મ. - ૧૦૮ અઠ્ઠમ
પૂ. સા. શ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ. - ગુરૂતપ
પૂ. સા. શ્રી અર્હતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. - ચત્તારી, અઠ્ઠ, દશ, દોય

વર્ધમાન તપની ઓળી

પૂ. મુનિરાજશ્રી વિનયરત્નવિજયજી મ.સા.
પૂ. મુનિરાજ પ્રત્યક્ષરત્નવિજયજી મ.સા.
પૂ. મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્નવિજયજી મ.સા.
પૂ. મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નવિજયજી મ.સા.

પૂ. સા. શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી અપૂર્વકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી નિરંજનકલાશ્રીજી મ.
(સળંગ ૧૦૦૮ આયંબિલ)
પૂ. સા. શ્રી અક્ષયકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી નિર્વેદકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સુમનકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સૌરભકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી આશાનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી ઋજુપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી ચિત્તપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી ધૈર્યકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સ્મિતપ્રિયાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી રિદ્ધીનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મેઘનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મેરૂનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મંગલનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મંત્રકલાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી શ્રેયાંસનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી તીર્થનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી મૌનદક્ષાશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી આજ્ઞાનિધિશ્રીજી મ.
પૂ. સા. શ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.

આ ઉપરાંત મુમુક્ષુ સંયમકુમારની સાથે સાથે શ્રાવક-શ્રાવિકાગણમાં ખુબ મોટી સંખ્યામાં તપસ્યાઓ થયેલ છે. તે નામાવલી અત્રે પ્રસ્તુત છે.

૩૦ ઉપવાસ - માસક્ષમણ

૧. ભારતીબેન જગદીશભાઈ
૨. અદાણી રીન્કુબેન જીગ્નેશકુમાર
૩. વારીયા સીમાબેન સમકિતકુમાર
૪. ધરૂ નીરીક્ષાબેન નિતેશભાઈ

શ્રેણી તપ

૧. સંઘવી જ્યંતીલાલ નાથાલાલ
૨. સંઘવી સવિતાબેન જ્યંતિલાલ

સિદ્ધિ તપ

૧. શેઠ મોક્ષાલી અશોકભાઈ
૨. વોરા હીરલ રમેશભાઈ
૩. વોરા સાક્ષી રમેશભાઈ
૪. દોશી સીમોની જગદીશભાઈ
૫. માનસીબેન મહેન્દ્રભાઈ
૬. આયુષીબેન મહેશભાઈ
૭. ધરૂ સ્વેની કીરીટભાઈ
૮. ધરૂ રૂષિકા ધીરજલાલ
૯. વોરા ભાવનાબેન નીતીનભાઈ
૧૦. સંઘવી ફેની પ્રવિણચંદ્ર
૧૧. વોરા લક્કી નીતીનભાઈ
૧૨. શેઠ સંયમ અરવિંદભાઈ
૧૩. વોરા વિપુલ ચીમનલાલ
૧૪. દોશી સંગીતાબેન અશોકભાઈ

૧૬ ઉપવાસ

૧. સંઘવી સંગીતાબેન જયેશભાઈ

૧૧ ઉપવાસ

૧. કોરડીયા શિલ વિનોદભાઈ

૧૦ ઉપવાસ

૧. બલ્લુ સપનાબેન મયુરભાઈ
૨. વોહેરા ભરતકુમાર ચીમનલાલ
૩. ધરૂ નિરવકુમાર પ્રવિણચંદ્ર
૪. દોશી રીંકલ અરવિંદભાઈ

૯ ઉપવાસ

વોરા મનીષાબેન વિક્રમકુમાર

સળંગ ૫૧ આંયબિલ

પૂજાબેન દીનેશભાઈ

અઠ્ઠાઈ ૮ ઉપવાસ

૧. દવે સેજલબેન પરમેશ્વરભાઈ
૨. દોશી મીત જગદીશભાઈ
૩. મોરખીયા વિશ્વેશ ભરતભાઈ
૪. મોરખીયા દિપક જગદીશભાઈ
૫. ભણશાલી નિતીનભાઈ અમરતભાઈ
૬. મોરખીયા સોનલબેન પ્રકાશભાઈ
૭. વોહેરા પૃથ્વી દિપકભાઈ
૮. માજની યશ્વી પરેશભાઈ
૯. મોરખીયા શ્રુત દિનેશભાઈ
૧૦. ગાંધી વિકેન મહેન્દ્રભાઈ
૧૧. મોરખીયા વિરાગ ભરતભાઈ
૧૨. વિરવાડીયા સુરેખાબેન અરવિંદભાઈ
૧૩. ધરૂ રાજેન્દ્રકુમાર રમેશભાઈ
૧૪. શેઠ ખુશ્બુ ભરતભાઈ
૧૫. વોરા કીરીટકુમાર અમૃતલાલ
૧૬. વોરા ચૈતાલીબેન મૌલીકભાઈ
૧૭. દોશી નવીનચંદ્ર મોહનભાઈ
૧૮. વોરા ચંદ્રકાંત વાઘજીભાઈ
૧૯. ભારતીબેન સેવંતીલાલ
૨૦. બલ્લુ મીલી દિનેશભાઈ
૨૧. શેઠ કંચનબેન અરવિંદભાઈ
૨૨. ધરૂ પ્રત્રીન્દ્ર દિનેશભાઈ
૨૩. વોહેરા રમેશચંદ્ર જ્યંતીલાલ
૨૪. વોહેરા પ્રકાશભાઈ ચીમનલાલ
૨૫. બલ્લુ ચંપકલાલ બબલદાસ
૨૬. દોશી ગોટુ પ્રવિણભાઈ
૨૭. શેઠ જ્યંતીલાલ મફતલાલ
૨૮. વોરા કાંતાબેન હિંમતલાલ
૨૯. વોરા ગુણવંતીબેન રમેશકુમાર
૩૦. વોરા કુણાલભાઈ રમેશભાઈ
૩૧. વોરા સમરતમલજી ફળફગર
૩૨. વોરા ચમનલાલ નાથાલાલ
૩૩. દેસાઈ મંજુલાબેન દિનેશકુમાર
૩૪. દેસાઈ દિનેશકુમાર ગગલદાસ
૩૫. અદાણી ઉવેશકુમાર હસમુખલાલ
૩૬. વોરા પિન્ટુકુમાર ફોજાલાલ
૩૭. ચંદ્રકાન્તાબેન રિંગનોદ
૩૮. શાહ રસીલાબેન હરખચંદ
૩૯. દોશી હીરાલાલ ભુદરમલ
૪૦. વોરા કુણાલ રમેશભાઈ
૪૧. વોરા શાંતાબેન ભરતકુમાર
૪૨. ધરૂ પ્રવિણચંદ્ર લહેચંદભાઈ
૪૩. ધરૂ ચંદ્રિકાબેન પ્રવિણચંદ્ર
૪૪. વોરા ચંદ્રકાન્ત ભુદરમલ

અક્ષમ-૩ ઉપવાસ

૧. દેસાઈ મીત કનુભાઈ
૨. સંઘવી રમીલાબેન વાડીલાલ
૩. વોરા તનુબેન વિપુલભાઈ
૪. વોરા નીતાબેન મુકેશભાઈ
૫. શેઠ મધુબેન બાબુલાલ
૬. વોહેરા સંજય પ્રકાશભાઈ
૭. વોહેરા નીકીતા પ્રકાશભાઈ
૮. વોહેરા પ્રભાબેન રસીકલાલ
૯. વોહેરા સંયમ પ્રકાશભાઈ
૧૦. વોહેરા બબુ પ્રકાશભાઈ
૧૧. વોહેરા રસીકલાલ હાલચંદ
૧૨. વોહેરા અલકાબેન ભરતભાઈ
૧૩. વોહેરા મીત ભરતભાઈ
૧૪. મોરખીયા કંચનબેન રમેશકુમાર
૧૫. મોરખીયા અલકાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૬. મોરખીયા સંગીતાબેન દિનેશભાઈ
૧૭. મોરખીયા શર્મિષ્ઠાબેન પ્રકાશભાઈ
૧૮. મોરખીયા મંજુલાબેન બાબુલાલ
૧૯. મોરખીયા રમીલાબેન રમેશકુમાર
૨૦. મોરખીયા વિરતીબેન બાબુલાલ
૨૧. મોરખીયા શીતલબેન વિનોદભાઈ
૨૨. બલુ પ્રવિણચંદ ગગલદાસ
૨૩. સંઘવી નિધી અશોકભાઈ
૨૪. વોરા પૂજા હિંમતભાઈ
૨૫. દોશી પૂજા નરપતલાલ
૨૬. ધરૂ શ્રુતિ શૈલેષભાઈ
૨૭. વોરા પ્રવિણાબેન ચંપકલાલ
૨૮. દોશી સવિતાબેન શાંતિલાલ
૨૯. દોશી રસીલાબેન સેવંતીલાલ
૩૦. મોરખીયા કંચનબેન અરવિંદકુમાર
૩૧. અદાણી લલીતાબેન વાડીલાલ
૩૨. મોરખીયા રમેશકુમાર ચીમનલાલ
૩૩. સંઘવી કોકીલાબેન દિનેશકુમાર
૩૪. ધરૂ જાસુબેન વાડીલાલ
૩૫. દોશી કોકીલાબેન પ્રવિણકુમાર
૩૬. કુસુમબેન કાકડીવાલા (અલીરાજપુર)
૩૭. શેઠ કુસલ વિજયભાઈ
૩૮. શેઠ મથુબેન બાબુલાલ
૩૯. દોશી ચૈત્ય અરવિંદકુમાર
૪૦. દોશી રવિ અરવિંદકુમાર
૪૧. દોશી શ્રુતિ અરવિંદકુમાર
૪૨. દોશી અરવિંદકુમાર ભોગીલાલ
૪૩. દોશી પ્રિયાબેન મહેન્દ્રભાઈ
૪૪. અદાણી નયન હસમુખભાઈ
૪૫. દેસાઈ શાંતાબેન ટીલચંદભાઈ
૪૬. દેસાઈ મોંઘીબેન બાબુલાલ
૪૭. દોશી રસીલાબેન વિનોદભાઈ
૪૮. મોરખીયા રસીલાબેન અશોકભાઈ
૪૯. ધરૂ મીનાબેન મહેશકુમાર
૫૦. વોહેરા શારદાબેન બાબુલાલ
૫૧. શાહ શાંતાબેન જવાનમલજી
૫૨. વોરા કંચનબેન બાબુલાલ
૫૩. અદાણી શારદાબેન જ્યંતિલાલ
૫૪. ધરૂ ધુરેન કીરીટભાઈ
૫૫. અદાણી જૈનમ દિનેશભાઈ
૫૬. વોરા મીતુલકુમાર વિક્રમભાઈ
૫૭. મોરખીયા શારદાબેન ભીખાલાલ
૫૮. દેવીબેન હરખચંદ્ર શાહ (સીયાણા)
૫૯. મોરખીયા શીલ્પાબેન જગદીશભાઈ
૬૦. અદાણી પુષ્પાબેન અરવિંદભાઈ
૬૧. દોશી પાર્શ્વ અજયભાઈ
૬૨. દોશી પર્વ અજયભાઈ
૬૩. મોરખીયા તેજ વિક્રમભાઈ
૬૪. શાહ કોકીલાબેન હસમુખભાઈ
૬૫. દોશી અલકાબેન વિનોદભાઈ
૬૬. વેદલીયા સીધ્ધી વિનોદભાઈ

૬૭. દોશી શારદાબેન બાબુલાલ
૬૮. દોશી લકી શૈલેશભાઈ
૬૯. દોશી ભવ્ય શૈલેશભાઈ
૭૦. વોરા ચંપાબેન બાબુલાલ
૭૧. વોરા પલક નીરવતભાઈ
૭૨. ગાંધી ખુશ્બુ મહેન્દ્રભાઈ
૭૩. વિરવાડીયા પ્રતિક અરવિંદભાઈ
૭૪. બલ્લુ સુરેખાબેન સુરેશભાઈ
૭૫. દોસી કંચનબેન વિનોદભાઈ
૭૬. દોશી કાંતાબેન કાળીદાસ
૭૭. વેદલીયા કેવલ જયેશભાઈ
૭૮. અદાણી પીયુષભાઈ ટીલચંદભાઈ
૭૯. અદાણી સુમનબેન સુરેશભાઈ
૮૦. કોરડીયા વર્ષાબેન રમેશભાઈ
૮૧. કોરડીયા રસીલાબેન પ્રવિણભાઈ
૮૨. દોશી પ્રભાબેન ભીખાલાલ
૮૩. વોહેરા મોંઘીબેન દિનેશભાઈ
૮૪. મોરખીયા નિર્મળાબેન મનુભાઈ
૮૫. વોહેરા પાર્થ અશોકભાઈ
૮૬. મોરખીયા શારદાબેન જ્યંતિલાલ
૮૭. દોશી કાંતાબેન પ્રકાશભાઈ
૮૮. વોહેરા શારદાબેન ચીમનલાલ
૮૯. અદાણી કંચનબેન હસમુખભાઈ
૯૦. વોરા મોંઘીબેન કીર્તીલાલ
૯૧. શાહ હેતલબેન કિરીટભાઈ
૯૨. શેઠ વર્ષાબેન અશોકભાઈ
૯૩. દેસાઈ ભોલુ કનુભાઈ
૯૪. દોશી મોંઘીબેન લહેરચંદભાઈ
૯૫. વોરા શારદાબેન વાડીલાલ
૯૬. સંઘવી રસીલાબેન હિંમતલાલ
૯૭. વોરા પાર્થ કિરણજી
૯૮. મનોજ ચંપાલાલજી
૯૯. દોશી પ્રવિણભાઈ મફતલાલ
૧૦૦. દોશી પ્રવિણલાલ મફતલાલ
૧૦૧. દિપીકાબેન ચંદ્રકાંતભાઈ
૧૦૨. દેસાઈ પુષ્પાબેન નવિનભાઈ
૧૦૩. ભણસાલી સવિતાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૦૪. મોદી બબીબેન કિર્તીલાલ
૧૦૫. અલકાબેન રોહિતકુમાર
૧૦૬. દેસાઈ ચંદ્રીકાબેન નવિનભાઈ
૧૦૭. કુસુમબેન મણીલાલ
૧૦૮. ભોજક ઈન્દુબેન લક્ષ્મીકાંત
૧૦૯. સુખડીયા જગદીશ કાંતિલાલ
૧૧૦. શાહ નરેશ ચીમનલાલ
૧૧૧. દેસાઈ ભરતભાઈ વાડીલાલ
૧૧૨. રમીલાબેન રસિકલાલ
૧૧૩. વોહેરા જ્યોતિબેન રમેશકુમાર
૧૧૪. કાજલબેન અશ્વિનભાઈ
૧૧૫. સુખડીયા સરોજબેન રમેશભાઈ
૧૧૬. વોહેરા કંચનબેન વસંતભાઈ
૧૧૭. મોરખીયા હિંમતલાલ વાઘજીભાઈ
૧૧૮. ધરૂ મયંક કિર્તીભાઈ
૧૧૯. સોહનબાલા ઈન્દોર
૧૨૦. પ્રભાવતીબેન કુક્ષી
૧૨૧. કેસરબેન કુક્ષી
૧૨૨. અદાણી દિનેશભાઈ અમરતલાલ
૧૨૩. સંઘવી પ્રેમિલાબેન વાડીલાલ
૧૨૪. દોશી કોકીલાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૨૫. વોહેરા ત્રેશા વિપુલભાઈ
૧૨૬.
૧૨૭. દોશી સવિતાબેન શાંતીલાલ
૧૨૮. દોશી કાંતાબેન પ્રકાશભાઈ
૧૨૯. વોરા સવિતાબેન ચંદુલાલ
૧૩૦. ઉગમબેન નેનાવા
૧૩૧. વોહેરા પુજા હિંમતભાઈ
૧૩૨. દોશી પુજા નરપતલાલ
૧૩૩. મોરખીયા અલકાબેન ધુડાલાલ
૧૩૪.

૧૩૫. ગુણીબેન કિર્તીલાલ
૧૩૬. લીલાબેન અમરતલાલ
૧૩૭. દોશી કેશુબેન શાંતીલાલ
૧૩૮.
૧૩૯. સંઘવી સુશીલાબેન રમેશભાઈ
૧૪૦. શેઠ વર્ષાબેન અશોકભાઈ
૧૪૧. વોરા મોઘીબેન કીર્તીલાલ
૧૪૨. વોરા વિમળાબેન વિનોદભાઈ
૧૪૩. ભાવસાર હેતલ કિરીટભાઈ
૧૪૪. સંઘવી સુશીલાબેન રમેશચંદ્ર
૧૪૫.
૧૪૬. સંઘવી સુશીલાબેન વાઘજીભાઈ
૧૪૭. દોશી રસીલાબેન હરીલાલ
૧૪૮. દેસાઈ પીનાબેન બિપીનકુમાર
૧૪૯. દેસાઈ પુષ્પાબેન હિંમતભાઈ
૧૫૦. મોદી ધારાબેન વિનોદકુમાર
૧૫૧. દીપાબેન ભરતભાઈ

ચોસઠ પૌરી પોષધ પુરૂષ

૧. અદાણી સુરેશભાઈ હીરાલાલ
૨. અદાણી પિયુષભાઈ ટીલચંદ
૩. દોશી ચંપકલાલ હરીલાલ
૪. દોશી સેવંતીભાઈ વાઘજીભાઈ
૫. દોશી રસીકલાલ માધવલાલ
૬. અશોક શ્રીશ્રીમાલ (ઈન્દોર) અઠ્ઠાઈ
૭. ધરૂ રમેશભાઈ અઠ્ઠાઈ
૮. જે. કે. સંઘવી (થાણા)
૯. શ્રી મોહનજી ઢાલાવત (જોગેશ્વરી)
૧૦. મીઠાલાલજી જૈન/પુનમચંદજી અઠ્ઠાઈ
૧૧. શ્રી કીશોરજી બજાવત
૧૨. સંઘવી જ્યંતિલાલ નાથાલાલ
૧૩. સંઘવી ડૉ. રાજેન્દ્રકુમાર જૈન
૧૪. વિજયકુમાર જૈન
૧૫. સંઘવી કીર્તીલાલ નાથાલાલ
૧૬. સંઘવી હસમુખ નાથાલાલ
૧૭. મહેતા બાબુલાલ રાજમલ અઠ્ઠાઈ
૧૮. છાજેડ મફતલાલ મીશ્રીમલ
૧૯. સંઘવી સમરથમલજી ગણેશજી
૨૦. દોશી રમેશચંદ્ર મફતલાલ અઠ્ઠાઈ
૨૧. દોશી જીગ્નેશ રસીકલાલ
૨૨. વોહેરા વિપુલ ચમનલાલ સિધ્ધિતપ
૨૩. વીરવાડીયા નવીનચંદ્ર ભોગીલાલ
૨૪. કોરડીયા હસમુખભાઈ ડાહ્યાલાલ
૨૫. વોહેરા ગીરીશભાઈ શાંતિલાલ
૨૬. સંઘવી બાબુલાલ અમુલખભાઈ
૨૭. સંઘવી હિંમતલાલ અમુલખભાઈ
૨૮. દોશી પ્રવિણચંદ્ર મફતલાલ
૨૯. વોહેરા વિક્રમભાઈ પુનમચંદ
૩૦. વોરા હરેશભાઈ પુનમચંદ
૩૧. શેઠ અમૃતલાલ ઓતમચંદભાઈ
૩૨. ધાકડ રાજેન્દ્રકુમાર શોભાલાલજી
૩૩. અદાણી નરેન્દ્રભાઈ પુનમચંદ અઠ્ઠાઈ
૩૪. અશોકકુમાર ભુરમલજી (સીયાણા)
૩૫. સાંકળચંદ ધેવરચંદજી
૩૬. કાંતિલાલ મગનાજી અઠ્ઠાઈ
૩૭. કોઠારી પારસમલજી ભગવાનમલજી
૩૮. લુણીયા મનોજ ચંપાલાલજી
૩૯. વોહેરા પાર્થ કીરણભાઈ
૪૦. ધરૂ રમેશકુમાર છોટાલાલ
૪૧. જીતમલજી વસ્તીમલજી
૪૨. વોહેરા અમૃતલાલ રાયચંદ
૪૩. વોહેરા રસીકલાલ પરસોત્તમદાસ
૪૪. વોહેરા વાઘજીભાઈ પરસોત્તમદાસ
૪૫. બલ્લુ વાડીલાલ બાદરમલ
૪૬. બલ્લુ રાતવીક જાગૃતભાઈ
૪૭. વોહેરા ચંદુલાલ ભોગીલાલ
૪૮. વોહેરા કીર્તીલાલ રાયચંદ

૪૯. દેસાઈ હીંમતલાલ ચીમનલાલ
૫૦. ગાંધી અમૃતલાલ વીરચંદભાઈ
૫૧. વોહેરા રસીકલાલ હાલચંદભાઈ
૫૨. સંઘવી બાબુલાલ વાઘજીભાઈ
૫૩. વોહેરા ચંપકલાલ ચીમનલાલ અઠ્ઠાઈ
૫૪. સંઘવી રમેશચંદ્ર મોહનલાલ
૫૫. કોરડીયા પ્રવિણચંદ્ર વાઘજીભાઈ
૫૬. દેસાઈ વૃષભ નવીનચંદ્ર
૫૭. મોરખીયા વિનોદકુમાર ડાહ્યાલાલ
૫૮. દોશી સુરેશભાઈ મોહનલાલ
૫૯. દોશી નવિનચંદ્ર મોહનલાલ અઠ્ઠાઈ
૬૦. દોશી બાબુલાલ ત્રિભોવનદાસ
૬૧. વોહેરા રમેશકુમાર જ્યંતીલાલ અઠ્ઠાઈ
૬૨. સુખડીયા કાળીદાસ
૬૩. દોશી વિનોદભાઈ ગગલદાસ
૬૪. દોશી પ્રકાશચંદ્ર કેશવલાલ
૬૫. દોશી અંકીત બાબુલાલ
૬૬. વોહેરા ચંદ્રેશ વાઘજીભાઈ અઠ્ઠાઈ
૬૭. ભણસાલી મીતેશ બાબુલાલ
૬૮. વોહેરા પ્રકાશકુમાર ચીમનલાલ
૬૯. બલ્લુ ચંપકલાલ બબલદાસ અઠ્ઠાઈ
૭૦. ધરૂ પ્રવિણચંદ્ર લહેરચંદ
૭૧. દેસાઈ વિનોદકુમાર પરસોત્તમદાસ
૭૨. શેઠ જ્યંતીલાલ મફતલાલ અઠ્ઠાઈ
૭૩. શેઠ ધીરજલાલ મફતલાલ
૭૪. શેઠ વિનોદચંદ્ર મફતલાલ
૭૫. વાણીગોતા ચંપાલાલ સોહનરાજ
૭૬. વાણીગોતા કાંતીલાલ સોહનરાજ
૭૭. વાણીગોતા અશોક સોહનરાજ
૭૮. મોરખીયા પથિક પ્રફુલભાઈ
૭૯. ધરૂ પ્રીત નરેશભાઈ
૮૦. મોદી જીતેન્દ્ર ચંદુલાલ
૮૧. પરીખ ભાવેશ સુરેશભાઈ
૮૨. વોરા મનીષ ચંપકલાલ
૮૩. દેસાઈ શૈલેષ કીર્તીલાલ
૮૪. અદાણી ઉર્વેશ હસમુખભાઈ અઠ્ઠાઈ
૮૫. અદાણી નમનકુમાર હસમુખભાઈ
૮૬. અદાણી સ્મીત નરેશભાઈ
૮૭. વોહેરા પીંટુ ફોજાલાલ અઠ્ઠાઈ
૮૮. દેસાઈ મિત ચંદ્રકાન્તભાઈ
૮૯. વોહેરા પ્રશાંત ચંદ્રકાન્તભાઈ
૯૦. વોહેરા વૃષભ મુકેશભાઈ
૯૧. વોહેરા કૃણાલ રમેશભાઈ અઠ્ઠાઈ
૯૨. સંઘવી રાહીલ મહેન્દ્રભાઈ
૯૩. ભણસાલી રાજ કલ્પેશભાઈ
૯૪. મોરખીયા રમેશકુમાર ચીમનલાલ
૯૫. મહેતા કિશોરકુમાર કાંતિભાઈ
૯૬. શેઠ પ્રીત અશોકભાઈ
૯૭. દોશી ભવ્ય અનિલભાઈ
૯૮. દેસાઈ દીનેશકુમાર ગગલદાસ અઠ્ઠાઈ
૯૯. વોરા સેવંતીલાલ વીરચંદભાઈ અઠ્ઠાઈ
૧૦૦. દોશી હીરાલાલ ભુદરમલ અઠ્ઠાઈ
૧૦૧. સંઘવી નવીનચંદ્ર ગગલદાસ
૧૦૨. ભણસાલી જયેશભાઈ વાઘજીભાઈ
૧૦૩. વોરા રસીકલાલ મફતલાલ
૧૦૪. પારસમલજી લોઢા અઠ્ઠાઈ
૧૦૫. શેઠ વાઘજીભાઈ બબલદાસ
૧૦૬. શા મહેન્દ્રકુમાર હુકમચંદ
૧૦૭. લુક્કડ સુખરાજ મણીલાલ
૧૦૮. સમરથમલ હુકમચંદ અઠ્ઠાઈ
૧૦૯. મોદી અમૃતલાલ નરપતલાલ
૧૧૦. ઓરા રમેશચંદ્ર વીસલાલજી
૧૧૧. મોરખીયા વિશેષ ભરતભાઈ અઠ્ઠાઈ
૧૧૨. વોહેરા પક્ષાલ વસંતભાઈ
૧૧૩. ભણસાલી નીતીન અમૃતલાલ
૧૧૪. વોહેરા જેનીશ બીપીનભાઈ
૧૧૫. વોહેરા રાજ વિક્રમભાઈ
૧૧૬. અદાણી રીત્વીક સંજયભાઈ

૧૧૭. દોશી હર્ષિલ દીનેશભાઈ
૧૧૮. કુલદીપ ગૌસ્વામી અશોકભાઈ
૧૧૯. વોહેરા મીત વિક્રમભાઈ
૧૨૦. દોશી આશિષ નરપતલાલ
૧૨૧. અદાણી વૃષભ સંજયભાઈ
૧૨૨. કોરડીયા વિશ્વ અશ્વીનભાઈ
૧૨૩. કોરડીયા મૌન પીંટુભાઈ
૧૨૪. કોરડીયા પક્ષાલ હસમુખભાઈ
૧૨૫. દોશી રીકેશ અરવિંદભાઈ
૧૨૬. ધરૂ પ્રવિણચંદ્ર ગગલદાસ
૧૨૭. ધરૂ કીર્તીલાલ ગગલદાસ
૧૨૮. ધરૂ દીનેશચંદ્ર ગગલદાસ
૧૨૯. ધરૂ મયંક કીર્તીલાલ
૧૩૦. મોરખીયા હીંમતલાલ વાઘજીભાઈ
૧૩૧. સંયમ શેઠ
૧૩૨. સંઘવી હેમીન મહેન્દ્રભાઈ
૧૩૩. ચોરડીયા સમરથલાલ કનૈયાલાલ
૧૩૪. મોરખીયા રસીકલાલ ભીખાલાલ
૧૩૫. કોટડીયા અશ્વીનકુમાર રસીકલાલ
૧૩૬. શેઠ અશોકકુમાર વાઘજીભાઈ
૧૩૭. ભણસાલી યશ રમેશભાઈ

ચોસઠ પૌરી પોષધ મહિલા

૧. શેઠ મોક્ષાલી અશોકભાઈ
૨. શેઠ ભારતીબેન અશોકભાઈ
૩. દોશી રીન્કલબેન અરવિંદભાઈ
૪. શેઠ વર્ષાબેન અશોકભાઈ
૫. કોરડીયા વર્ષાબેન રમેશભાઈ
૬. વેદલીયા નીતાબેન જયેશભાઈ
૭. વેદલીયા નીસી જયેશભાઈ
૮. કોરડીયા રસીલાબેન પ્રવિણભાઈ
૯. કોરડીયા ચંદ્રીકાબેન હસમુખભાઈ
૧૦. ધરૂ રસીલાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૧. અદાણી રસીલાબેન પુનમચંદ
૧૨. દોશી પ્રભાબેન ચંપકભાઈ
૧૩. સંઘવી પ્રભાબેન ચંપકભાઈ
૧૪. વેદલીયા સવિતાબેન જ્યંતિલાલ
૧૫. મોરખીયા સુશીલાબેન રમણીકલાલ
૧૬. વોહેરા મોઘીબેન દિનેશભાઈ
૧૭. સંઘવી કાંતાબેન વાઘજીભાઈ
૧૮. અદાણી ભારતીબેન ફોજાલાલ
૧૯. અદાણી ગુણીબેન ચીનુભાઈ
૨૦. વોહેરા મંજુબેન રસીકલાલ
૨૧. શેઠ વર્ષાબેન હીંમતલાલ
૨૨. શેઠ મથુબેન બાબુલાલ
૨૩. દેસાઈ રસીલાબેન કીર્તીલાલ
૨૪. બલ્લુ શારદાબેન ચંપકભાઈ
૨૫. વોહેરા પ્રવિણાબેન ચંપકલાલ
૨૬. વોહેરા ભારતીબેન સેવંતીભાઈ
૨૭. વોહેરા જ્યોત્સનાબેન રસીકલાલ
૨૮. વોહેરા પુષ્પાબેન પ્રવિણકુમાર
૨૯. વોહેરા આશાબેન સંજયકુમાર
૩૦. મોરખીયા કંચનબેન હરગોવનભાઈ
૩૧. દેસાઈ શાંતાબેન ટીલચંદ
૩૨. વોહેરા ચંદ્રીકાબેન ગગલદાસ
૩૩. દેસાઈ મંજુબેન દિનેશભાઈ
૩૪. રસીલાબેન બાબુલાલ
૩૫. વોરા ચંપાબેન બાબુલાલ
૩૬. લબ્ધિબેન પિયુષકુમાર
૩૭. મોરખીયા રમીલાબેન રસીકલાલ
૩૮. વોરા શારદાબેન બાબુલાલ
૩૯. દેસાઈ રમીલાબેન વસંતભાઈ
૪૦. વોરા કંચનબેન બાબુલાલ
૪૧. દોશી કાજલ હસમુખભાઈ
૪૨. બલ્લુ લબ્ધિ દિનેશભાઈ
૪૩. અદાણી શારદાબેન જ્યંતીલાલ
૪૪. દોશી જીલ અશોકકુમાર

૪૫. દોશી સિધ્ધી સંજયભાઈ
૪૬. દોશી માનવી સંજયભાઈ
૪૭. દોશી પલ મહેશભાઈ
૪૮. દોશી સોનલ સંજયભાઈ
૪૯. દેસાઈ હેતલ કિશોરભાઈ
૫૦. વોરા કીમી કીરીટકુમાર
૫૧. મધુબેન જ્યંતિલાલ
૫૨. ગાંધી કોકીલાબેન જગદીશભાઈ
૫૩. સવિતાબેન ચંદુલાલ
૫૪. શેઠ હીરાબેન જ્યંતિલાલ
૫૫. શેઠ સુશીલાબેન વિનોદભાઈ
૫૬. શેઠ રસીલાબેન ધીરજલાલ
૫૭. વોરા સરિતાબેન કાંતીલાલ
૫૮. દોશી રસીલાબેન હરીલાલ
૫૯. શાંતાબેન ભરતકુમાર
૬૦. મોરખીયા હંસાબેન ભીખાલાલ
૬૧. દોશી સવિતાબેન શાંતીલાલ
૬૨. સંઘવી વિમળાબેન નરપતલાલ
૬૩. સંઘવી રસીલાબેન હીમતલાલ
૬૪. વોરા જ્યોતિકાબેન રમેશકુમાર
૬૫. વોરા ભારતીબેન ભરતભાઈ
૬૬. સંઘવી ગુણીબેન ચંદ્રકાંત
૬૭. વોરા ગુણીબેન રમેશકુમાર
૬૮. વોરા કલગી જીગનેશકુમાર
૬૯. દેસાઈ મીનાબેન પ્રકાશભાઈ
૭૦. શાહ રીયાબેન મુકેશભાઈ
૭૧. સંઘવી કોકીલાબેન દીનેશભાઈ
૭૨. સંઘવી રીયા મહેન્દ્રભાઈ
૭૩. સંઘવી કેન્વી હીતેશભાઈ
૭૪. મોરખીયા ચીન્કી અરવિંદભાઈ
૭૫. ભણશાળી ગ્રેસી ભરતભાઈ
૭૬. વોરા મોઘીબેન કીર્તીલાલ
૭૭. ધરૂ જાસુબેન વાડીલાલ
૭૮. વેદલીયા સીધ્ધીબેન વિનોદભાઈ
૭૯. સંઘવી સવીતાબેન અમરતલાલ
૮૦. કેન્વીબેન વિજયભાઈ
૮૧. નીધીબેન અશોકભાઈ
૮૨. મોટી માનસી મહેન્દ્રભાઈ
૮૩. મોરખીયા પૂજાબેન દિનેશભાઈ
૮૪. વોરા રૂત્વી સંજયભાઈ
૮૫. દોશી પૂજા નરપતભાઈ
૮૬. વોરા પૂજા હીંમતલાલ
૮૭. દોશી પૂજા લલિતભાઈ
૮૮. વોરા પલક નીરવભાઈ
૮૯. દોશી કાંતાબેન બાબુલાલ
૯૦. વોરા અરૂણાબેન જ્યંતિલાલ
૯૧. મોરખીયા લીલાબેન રસીકલાલ
૯૨. સંઘવી શીલાબેન બાબુલાલ
૯૩. વેદલીયા જ્યોત્સનાબેન હીરાલાલ
૯૪. શાહ શાંતાબેન જવાનમલજી
૯૫. રાજુબેન અમૃતલાલજી
૯૬. વોરા નયનાબેન દિપકભાઈ
૯૭. જમનાબેન જીવરાજભાઈ નેનાવા
૯૮. ઉગમબેન ચુનીલાલ નેનાવા
૯૯. ચંપાબેન સમરતમલજી નેનાવા
૧૦૦. ટપ્પુબેન ઉકચંદજી નેનાવા
૧૦૧. મંજુબેન વર્ધીચંદજી નેનાવા
૧૦૨. કુસુમબેન કાકડીવાલા અલિરાજપુર
૧૦૩. ચંદ્રકાંતાબેન
૧૦૪. ચંદ્રીકાબેન
૧૦૫. ધરૂ મંજુબેન દિનેશભાઈ
૧૦૬. ધરૂ રસીલાબેન કીર્તિભાઈ
૧૦૭. ધરૂ ચંદ્રીકાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૦૮. સંઘવી સુશીલાબેન વાઘજીભાઈ
૧૦૯. કોરડીયા રીયા નવિનભાઈ
૧૧૦. મોરખીયા શારદાબેન જ્યંતિલાલ
૧૧૧. મોરખીયા જીન્સી ભરતભાઈ
૧૧૨. સંઘવી જાસુબેન શાંતીલાલ
૧૧૩. મોટી વિમળાબેન અમરતલાલ
૧૧૪. વોરા પ્રભાબેન પ્રવિણકુમાર
૧૧૫. સવિતાબેન હીરાલાલ
૧૧૬. કાંતાબેન કાળીદાસ

૧૧૭. સંઘવી ભાવનાબેન મીલનકુમાર
૧૧૮. બલ્લુ મોઘીબેન વસંતભાઈ
૧૧૯. સંઘવી ડીમ્પલ વિપુલભાઈ
૧૨૦. વોરા પ્રીતીબેન વસંતભાઈ
૧૨૧. દોશી રસીલાબેન વિનોદભાઈ
૧૨૨. મોરખીયા રસીલાબેન અશોકભાઈ
૧૨૩. સંઘવી કોકીલાબેન નવીનભાઈ
૧૨૪. દેસાઈ કંચનબેન સેવંતીલાલ
૧૨૫. દોશી બચીબેન રમેશભાઈ
૧૨૬. બલ્લુ માયબેન પ્રવિણભાઈ
૧૨૭. દોશી કોકીલાબેન પ્રવિણભાઈ
૧૨૮. દોશી પુષ્પાબેન સુરેશભાઈ
૧૨૯. દોશી અલકાબેન દિનેશભાઈ
૧૩૦. ધરૂ શ્રુતિ શૈલેષભાઈ
૧૩૧. વોહેરા માનસી ભરતભાઈ
૧૩૨. ધરૂ પુજા કિરણભાઈ
૧૩૩. મોરખીયા ગુણીબેન રમેશભાઈ
૧૩૪. મોરખીયા ગુણીબેન કીર્તીભાઈ
૧૩૫. ભણશાળી લીલાબેન અમરતલાલ
૧૩૬. અદાણી લલીતાબેન વાડીલાલ
૧૩૭. માનની કંચનબેન નટવરલાલ
૧૩૮. કુશી પુખરાજબેન તિલોકચંદજી
૧૩૯. કુશી તજુબેન ભાગચંદજી
૧૪૦. કુશી કેસરબેન ઈન્દરમલજી
૧૪૧. કુશી મણીકાન્તાબેન ધનરાજજી
૧૪૨. કુશી પ્રભાવતિબેન વિજયબાબુ
૧૪૩. કુશી સોહનબેન રાજનબાબુ
૧૪૪. કાંતાબેન હસમુખભાઈ
૧૪૫. અદાણી સંગીતાબેન પ્રફુલભાઈ
૧૪૬. વોહેરા રૂચીતા રમેશભાઈ
૧૪૭. જૈન પાયલ પ્રકાશભાઈ
૧૪૮. ધરૂ સુશીલાબેન નરેશકુમાર
૧૪૯. પ્રેમલતાબેન રમેશચંદ્રજી વડનગર
૧૫૦. બલ્લુ સુશીલાબેન વાધજીભાઈ
૧૫૧. અદાણી વર્ષાબેન અમરતલાલ
૧૫૨. અદાણી કંચનબેન હસમુખભાઈ
૧૫૩. દોશી જાસુબેન વાડીલાલ
૧૫૪. દેસાઈ લીલાબેન ચંપકલાલ
૧૫૫. દોશી કાંતાબેન પ્રકાશભાઈ
૧૫૬. બલ્લુ જીલ નવિનભાઈ
૧૫૭. બલ્લુ આંગી નવિનભાઈ
૧૫૯. ગાંધી રોમાબેન પીન્ટુભાઈ
૧૬૦. કાંતાબેન હીંમતલાલ બેન્કર
૧૬૧. દેસાઈ ગુણીબેન વિનોદચંદ્ર
૧૬૨. કંચનબેન સારચંદ ગોરજી
૧૬૩. વોરા રસીલાબેન ફોજાલાલ
૧૬૪. કોરડીયા મોઘીબેન શાંતીલાલ
૧૬૫. વોરા શારદાબેન સેવંતીલાલ
૧૬૬. રસીલાબેન બાબુલાલ
૧૬૭. મોરખીયા અલકાબેન ધુડાલાલ
૧૬૮. શેઠ મોઘીબેન હરીલાલ
૧૬૯. મોરખીયા લીલાબેન કીર્તીલાલ
૧૭૦. દેસાઈ મોઘીબેન બાબુલાલ
૧૭૧. દોશી ગંગાબેન પુનમચંદ
૧૭૨. દોશી અલકાબેન ભીખાલાલ
૧૭૩. અદાણી શારદાબેન પ્રકાશભાઈ
૧૭૪. અદાણી કંચનબેન ધીરજલાલ
૧૭૫. બલ્લુ કંચનબેન મહેન્દ્રભાઈ
૧૭૬. મોદી મીનાબેન મહેન્દ્રભાઈ
૧૭૭. વોરા શાંતાબેન જ્યંતિલાલ
૧૭૮. વોરા સવિતાબેન બાબુલાલ
૧૭૯. જાસુબેન રસીકલાલ
૧૮૦. વીરવાડીયા પુષ્પાબેન દીનેશકુમાર
૧૮૧. શાહ ગુણીબેન ચીનુભાઈ
૧૮૨. અદાણી મોંઘીબેન વિનોદકુમાર
૧૮૩. વીરવાડીયા મંજુબેન નવિનભાઈ
૧૮૪. દોશી પ્રભાબેન ભીખાલાલ
૧૮૫. દોશી કંચનબેન બાબુલાલ
૧૮૬. મોદી લીલાબેન મફતલાલ
૧૮૭. અદાણી કાંતાબેન રમેશભાઈ
૧૮૮. વોરા શારદાબેન ચમનલાલ
૧૮૯. સંઘવી ભાવનાબેન મિલનભાઈ

૧૯૦. બલ્લુ મોઘીબેન વસંતભાઈ
૧૯૧. દેવીબેન હરખચંદજી
૧૯૨. રસીલાબેન હરખચંદજી
૧૯૩. મહેતા ચંદ્રીકા બાબુલાલ
૧૯૪. મોરખીયા આશા જગદીશભાઈ
૧૯૫.મોરખીયા શિલ્પાબેન જગદીશભાઈ
૧૯૬. દોશી કેશીબેન શાંતીલાલ
૧૯૭. મોરખીયા શારદાબેન ભીખાભાઈ
૧૯૮. મોરખીયા જીવીબેન ભુદરમલ
૧૯૯. મોરખીયા કંચનબેન સુરેશકુમાર
૨૦૦. ખુશ્બુબેન સુમોલમલજી
૨૦૧. મુન્નીબેન સુમોલમલજી
૨૦૨. લુણીબેન સુમોલમલજી
૨૦૩. દોશી કાંતાબેન કીર્તીલાલ
૨૦૪. બબીબેન હાલચંદભાઈ
૨૦૫. મોરખીયા મધુબેન સેવંતીલાલ
૨૦૬. મોરખીયા ગુણીબેન નરપતલાલ
૨૦૭. શેઠ શારદાબેન અમરતલાલ
૨૦૮. શારદાબેન બાબુલાલ
૨૦૯. દેસાઈ રસીલાબેન કીર્તીલાલ
૨૧૦. વોહેરા જ્યોતિકાબેન રમેશભાઈ
૨૧૧. શેઠ મોઘીબેન હરીલાલ
૨૧૨. દેસાઈ ગુણીબેન હિંમતલાલ
૨૧૩. રસીલાબેન રસિકલાલ
૨૧૪. વોરા કંચનબેન રમેશકુમાર
૨૧૫. ગાંધી ખુશ્બુ મહેન્દ્રભાઈ
૨૧૬. બલ્લુ સુરેખાબેન સુરેશભાઈ
૨૧૭. બબીબેન હાલચંદભાઈ
૨૧૮. પરીખ જીનલ નવીનભાઈ
૨૧૯. સુરેખાબેન અરવિંદભાઈ
૨૨૦. મધુબેન ઈશ્વરભાઈ
૨૨૧. વોરા પૃથ્વીબેન દિપકભાઈ
૨૨૨. દેસાઈ શીમોની ચિરાગભાઈ

ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થે ક્ષમાપના તથા વિવિધ તપશ્ચર્યાની અનુમોદનાર્થે પંચ પરમેષ્ઠિયુક્ત પંચાન્હિકા મહોત્સવ સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તીર્થ પ્રેરક વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થે ચાતુર્માસ સંપન્ન કરી રહ્યા છે.

પૂજ્યશ્રી સપરિવારના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં હર્ષની લહેર દોડી રહી છે. પૂજ્યશ્રી તેમજ તેમના તેજસ્વી શિષ્યરત્નોના મુખારવિંદથી અનુપમ શૈલીમાં અપાઈ રહેલા ધર્મોપદેશથી અચિંત્ય મહિમાવંત શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના, શ્રી પર્વાધિરાજ પર્યુષણની ભવ્ય ઉજવણી તેમજ અનેકવિધ તપશ્ચર્યાઓ સંપન્ન થઈ છે.

પૂજ્યશ્રીની પ્રેરણા અને નિશ્રામાં ગુરૂ જન્મભૂમિ શ્રી પેપરાલતીર્થે સંવત ૨૦૭૧ ના ભાદરવા સુદ-૫ ને શુક્રવાર તા. ૧૮-૯-૨૦૧૫ ના રોજથી ક્ષમાપના તથા વિવિધ તપશ્ચર્યાની અનુમોદનાર્થે પંચ પરમેષ્ઠિયુક્ત પંચાન્હિકા મહોત્સવનો પ્રારંભ થયો હતો. મહોત્સવના પાંચેય દિવસ સંઘ ભક્તિના રંગે રંગાયો હતો. આ મહોત્સવ દરમ્યાન સ્નાત્રપુજા, પ્રવચન, પરમાત્માને ભવ્ય આંગી, ભક્તિભાવના, પ્રભુ આરતી, ગુરૂ આરતી અને ત્રણેય ટાઈમની નવકારશી સહિત આ પંચન્હિકા મહોત્સવ સફળતા સાથે સંપન્ન થયો હતો.

પ્રથમ દિવસ : સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૫ તા. ૧૮-૯-૨૦૧૫ શુક્રવાર
સવારે ૯-૦૦ કલાકે તપસ્વીઓના પારણા
લાભાર્થી : થરાદ નિવાસી શ્રીમતી કાંતાબેન બાબુલાલ લલ્લુભાઈ પરિવાર-નડીઆદ
બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે શ્રી સિધ્ધચક્ર મહાપૂજન
લાભાર્થી : ધાણસા (રાજ) નિવાસી શા. તોલાજી પુનમાજી પરિવાર

દ્વિતીય દિવસ : સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૬ તા. ૧૯-૯-૨૦૧૫ શનિવાર
બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે શ્રી ઉવસગ્ગહરં મહાપૂજા
લાભાર્થી : શા. મિશ્રીમલજી ગબાજી પરિવાર ધાણસા (રાજ)

તૃતીય દિવસ : સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૭ તા. ૨૦-૯-૨૦૧૫ રવિવાર
બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે શ્રી ગુરૂ રાજેન્દ્રસૂરિ ગુરૂપદ મહાપૂજન
લાભાર્થી : શા. લાલચંદજી સદાજી પરિવાર ધાણસા (રાજ)

ચતુર્થ દિવસ : સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૮ તા. ૨૧-૯-૨૦૧૫ સોમવાર
બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે શ્રી ૧૦૮ પાર્શ્વનાથ મહાપૂજન
લાભાર્થી : શા. તિલોકચંદજી સદાજી પરિવાર ધાણસા (રાજ)

પંચમ દિવસ : સંવત ૨૦૭૧ ભાદરવા સુદ-૯ તા. ૨૨-૯-૨૦૧૫ મંગળવાર
બપોરે ૧૨-૩૯ કલાકે શ્રી ભક્તામર મહાપૂજન
લાભાર્થી : શા. વસરાજજી ધુળાજી પરિવાર ધાણસા (રાજ)

શ્રી ચંદ્રકાન્ત કાકાની અઠ્ઠાઈ તપની અનુમોદના

માદરે વતન થરાદ જેમના હૈયામાં વસેલુ છે. એવા સમાજના હિત ચિંતક, નાના-મોટા સહુના લોકલાડીલા મોટા કાકાના હુલામણા નામથી પ્રચલિત શ્રી ચંદ્રકાન્તભાઈ ભુદરમલભાઈ વોરાએ તાજેતરમાં યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાથી અઠ્ઠાઈ તપની આરાધના કરી શ્રી પેપરાલ તીર્થે પારણું કર્યું હતું.

૭૫ વર્ષને વટાવી ચુકેલા અને જીવન પર્યંત ત્રણેય ટાઈમ ભોજનને ન્યાય આપતા મોટા કાકા એ અઠ્ઠાઈ તપની આરાધના કરી છે તે આશ્ચર્યજનક અનુમોદનીય બાબત છે. મોટા કાકા આજેય યુવાન જેવી સ્ફૂર્તિથી શાસન-સમાજ અને ગચ્છની સેવા કરી ગૌરવ બક્ષી રહ્યા છે.

મોટા કાકાની આ આઠ ઉપવાસની તપશ્ચર્યાની ભૂરીભૂરી અનુમોદના કરી અંતકરણ પૂર્વક શુભેચ્છા પાઠવીએ છીએ.

ગુરૂ અમારી દ્રષ્ટિએ....

પૂજયશ્રીનો સંસ્કાર વારસો એટલે શ્રી પોપટભાઈ ધરૂ (બેન્કર)

વિનય, વિવેક, ગાંભીર્ય, ઔદાર્ય, સરળતા, સાદગી, નિરાભિમાનતા, મિતભાષી, મિલનસારીતા અને માયાળુ સ્વભાવ ધરાવતા શ્રી પોપટભાઈ ધરૂ એ સંસ્કારોની અઢળક સંપતિ એકત્રિત કરી છે.

બનાસકાંઠા જીલ્લાની સ્ટેટ બેંકની વિવિધ શાખાઓમાં મોભાદાર હોદ્દા ઉપર રહી પ્રમાણીકતા અને નિતિમતા સાથે ફરજ બજાવી છે. આ કળયુગમાં રૂપિયા માટે જે લોકો હરણફાળ ભરી રહ્યા છે તે માટે છેતરપીંડી, ભ્રષ્ટાચાર, કોઈનું લુંટી લેવું કોઈનું પચાવી પાડવું, લાંચ રૂસ્વત, વિગેરે દાવપેચ રમતા હોય છે ત્યારે આવા સંજોગોમાં પણ નિષ્કાપૂર્વકની બેંકમાં ફરજ બજાવી પ્રતિષ્ઠાભરી શાખ સાથે નિવૃત થવું તે આજના સમય માટે ગૌરવની બાબત છે. શ્રી પોપટભાઈ ધરૂ જેવા અત્યારે ઘણા ઓછા પ્રમાણિક માણસ જોવા મળશે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના વિશ્વ વિખ્યાત યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શ્રી પોપટભાઈ ધરૂ (ગ્રેજ્યુટ) સાંસારિક લઘુબંધુ છે. છતાંય તેમનામાં અભિમાનનો છાંટો નથી, સરકારી નિવૃતિ પછી ગ્રેજ્યુટ હોવા છતાં સંઘના કોઈપણ હોદ્દા પર રહેવાની ખેવના નથી. સગા-સ્નેહી મિત્રોનો આદર સત્કાર કરવાની જે રીતે છે તે બતાવી આપે છે કે તેમને પૂજ્યશ્રીનો સંસ્કાર વારસો સંસારમાં જાળવી રાખ્યો છે. અને સંસ્કારની અઢળક સંપતિ એકઠી કરી છે. સંસાર પરિવર્તન શીલ છે તે ન્યાયે તેમના જીવનકાળ વચ્ચેના એક દસકામાં આર્થિક કટોકટીનો કપરો સામનો કરવો પડ્યો હતો છતાંય તેમના માયાળુ સ્વભાવમાં કોઈ પરિવર્તન આવ્યું નથી એજ હસતા મોઢે આદર સત્કાર કરતા જ રહ્યા અત્યારે પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં શ્રી પેપરાલ તીર્થે રહી લોચ કરાવી ધર્મ-ધ્યાનમાં જોડાયેલા છે સાથે સાથે તેમના ધર્મપત્નિ શ્રીમતી સવિતાબેન ધરૂ પણ તપ-જપ કરી ધર્મમય જીવન ગાળી રહ્યા છે. શ્રી પોપટભાઈ ધરૂની સુપુત્રી જ્યોત્સનાબેન છેલ્લા ૧૮ વર્ષથી પૂજ્યશ્રીની આજ્ઞામાં રહી પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સંવેગ પ્રિયાશ્રીજી મ.સા. ના નામથી સંયમ જીવન ગાળી રહ્યાં છે. જ્યારે શ્રી પોપટભાઈ ધરૂના સુપુત્રો ચિ. શૈલેષ અને ચિ. જીતેન્દ્ર પણ પપ્પાના સંસ્કારી જીવનનું અનુકરણ કરવા પ્રયાસ કરી રહ્યા છે.

અનુમોદના

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય ડૉ. શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાથી પ્રેરાઈ ચાતુર્માસ દરમ્યાન શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદ, શ્રાવક-શ્રાવિકા વિગેરે આરાધકોએ સંવત ૨૦૭૧ ના ભાદરવા સુદ-૫ ના રોજ શ્રી પેપરાલ તીર્થે પારણા કર્યા છે તે તપસ્વીરત્નોને શાતા પુછી શાશ્વતધર્મ-ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર ખરા અંતઃ કરણ પૂર્વક અનુમોદના પાઠવે છે.

पूज्य आचार्य भगवंत
डॉ. श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा.
के 80 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में उनके
द्वारा विरचित

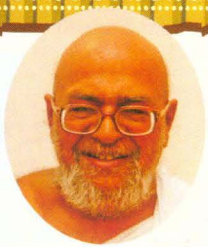

नवकार करे भवपार
पुस्तक पर प्रश्नावली

आशीर्वाददाता
प.पू. राष्ट्रसंत
आचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दिव्याशीष
समत्व साधिका प.पू. गुरुणी श्री महाप्रभाश्रीजी म.सा.

जावरा नगरे
चातुर्मास निमित्त

प्रस्तुति
साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी, रुचिदर्शना श्रीजी
श्रुतिदर्शना श्रीजी, तृप्तिदर्शना श्रीजी म.सा.

आयोजक :
विजयकुमार-विजयादेवी, विपेश-पूजादेवी, विवेक-मेघा, पलक, शुभि, दर्शिल आँचलिया परिवार, जावरा
फर्म-आँचलिया ब्रदर्स, फोन-07414-220688, 8889922899

प्रश्नावली के नियम : 1. उत्तर शुद्ध तथा स्पष्ट अक्षरों में लिखें । 2. पू. साधु-साध्वी भगवन्तों की सहायता न लें । 3. पूर्णांक 100 नंबर का पेपर है। 4. पीछे उत्तर पुस्तिका दी गई है, उसमें उत्तर लिखकर केवल उत्तर पुस्तिका ही वापस भेजना है। 5. एक घर से एक ही प्रश्नावली मान्य की जाएगी । 6. प्रश्नावली भरकर भेजने की अंतिम तारीख 9.1.2016 7. निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होगा। 8. समान अंक प्राप्त होने की स्थिति में विजेताओं को धन राशि समान रूप से वितरित की जावेगी। 9. परिणाम शाश्वत धर्म में दिया जाएगा। 10. पुरुस्कार वितरण की तारीख 9.2.2016 पालिताणा

प्रथम पुरुस्कार-7000/- रू. | **द्वितीय पुरुस्कार 5000/- रू.** | **तृतीय पुरुस्कार 3000/- रू.**

80 प्रोत्साहन पुरुस्कार दिये जाऐंगे।

उत्तर पुस्तिका भेजने का पता
श्रीमान् प्रकाशचन्द्रजी गादिया
127, नयापुरा, चौसठ यौगिनी मार्ग
उज्जैन (म.प्र.) मो. 09977824441

प्राप्ति स्थान
हेमेन्द्रराज चौरड़िया (नानू)
28, खारीवाल मोहल्ला, जावरा मो. 9827657831
जयेशभाई चौधरी
ओ.बी.सी. ज्वेलर्स, कुक्षी, मो. 9425914455

पुस्तक मूल्य-50 रू.

पेपर मूल्य-10 रू.

कुमकुम सने पगलिये

पेपराल में नवकार आराधना उत्तीर्ण

(अशोक श्रीश्रीमाल)

देवलोक में सौधर्म इन्द्र महाराजा की सभा चल रही थी। सभी देवी-देवता उपस्थित थे।

सौधर्म इन्द्र म.:- आज भी इस पृथ्वी लोक में देव, गुरु और धर्म के प्रति समर्पित आत्माऐं हैं। एक ऐसी भी आत्मा है जिसके रोम-रोम में नवकार व्याप्त है। जिनका पल-पल नवकार के स्मरण में रत और प्रत्येक कार्य नवकारमयी है। आराधना के माध्यम से लाखों नर-नारियों को जिन्होंने नवकार से जोड़ा। नवकार में श्रद्धा उत्पन्न की और नवकार के माध्यम से ही उन्हें भवपार करने का रास्ता भी दिखा रहे हैं। प्रतिवर्ष चातुर्मास के श्रावण माह में विधि-विधान के साथ भक्ति-आराधना, अड़सठ तीर्थों की भावयात्रा तल्लीनता से करवाते हैं। इस वर्ष भी उनकी जन्मभूमि पेपराल में यह भव्य आयोजन होगा।

इन्द्र महाराजा सुविशाल गच्छाधिपति की प्रशंसा किए जा रहे थे।

मिथ्यात्वी देवों को यह प्रशंसा अच्छी नहीं लगी। वे विचार करने लगे कि क्या सचमुच कोई ऐसी आत्मा है, जिनके आह्वान मात्र से लाखों गुरुभक्त खींचे चले आते हैं। क्यों नहीं इनकी परीक्षा ली जाए? पता तो चले कैसे नवकार आराधना और चातुर्मास करवाते हैं?

बस क्या था। दो मिथ्यात्वी देव रूप परिवर्तित कर पेपराल की धरातल ऐसी समर्पित आत्मा के दर्शनार्थ आ पहुँचे। यहाँ आकर वे भी विस्मित रह गए। जंगल में मंगल देखकर उनका स्वयं का मन दंगल करने लगा। भव्यातिभव्य मंडप, भोजनशाला आदि देखकर चकित रह गए। चातुर्मास प्रवेश का नजारा देखकर तो मानो मिथ्यात्वी देवों के होश ही उड़ गए। अब वे सोचने

लगे कि क्या ऐसे भी भक्त हैं जो इस मूर्ति को भगवान के रूप में देखते हैं।

मिथ्यात्वी देवों ने पुनः अपनी लीला आरंभ कर दी। पेपराल और आसपास के क्षेत्रों में चातुर्मास के आरंभ के साथ ही भयंकर वर्षा के रूप में तांडव ही रच डाला। जहाँ कभी लोग पानी को तरसते थे वहाँ देखते-देखते पानी के रूप में साक्षात प्रलय ने ही आकार ले लिया। तीन-चार दिनों तक वर्षा ने अपना घनघोर और विकराल रूप नहीं छोड़ा। मूसलाधार बारिश और चारों ओर पानी ही पानी। पेपराल के आसपास के गाँव के गाँव पानी में घिर गए। पशु, पक्षी, मवेशी, मानव सभी तबाही की चपेट में थे। कई लोगों ने वृक्षों पर चढ़कर या जहाँ भी सुरक्षित ऊँचा स्थान दिखा वहाँ भागकर किसी तरह अपने को बचाया। वर्षा और बाढ़ की यह स्थिति थी कि लगता था कि यह सब कुछ नष्ट कर के ही जाएगा। मवेशियों और पक्षियों को बड़ी संख्या में नुकसान हुआ।

इधर पेपराल तीर्थ पर राष्ट्रसंत श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. अपने विशाल गच्छ समुदाय को लेकर विराजमान थे। स्वयं नवकार का स्मरण करते हुए अन्य सभी को आत्मविश्वास दिलाते हुए नमस्कार महामंत्र के आराधन का कह रहे थे।

साधु जीवन मर्यादित और स्व-अनुशासित जीवन है। जिन आज्ञा और गुरु आज्ञा का हर हालत में पालन कर,समता का अलंकार धारण किए रहते हैं। स्थिति ऐसी हो गई कि चारों ओर पानी ही पानी था जो लगातार बढ़ रहा था। मधुकर महावीर का यह जिनालय साक्षात् पावापुरी के दर्शन करवाता प्रतीत हो रहा था। आहार-पानी की चिंता किए बिना सभी अपनी-अपनी साधना में तल्लीन बने रहे। नमस्कार मंत्र जिसके हृदय में बसा हो, वो क्यों अपनी चिंता करे? इसी दौरान साधु-साध्वीजी को तप-वृद्धि का लाभ मिलने लगा। नमस्कार महामंत्र तथा इसके धारक पूज्य गुरुदेव ने भी नवकार से बात की। भक्ति की। आराधना की। इसके आश्चर्यजनक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होने लगे।

क्षेत्रीय प्रभाव की बात करें तो देखने में आया कि पेपराल की तुलना में समीप के दूसरे गाँव ज्यादा प्रभावित हुए। अनेक गाँव पानी में डूबे। कुछ गाँवों के तो चिन्ह ही नहीं मिले। तेजी से बढ़ रहा बाढ़ का पानी पेपराल की ओर बढ़ रहा था । मानो पेपराल को अपने आगोश में ले लेना चाहता था। देशभर में सभी गुरुभक्त चिन्तातुर थे। सभी स्थानों पर नमस्कार महामंत्र के जाप आरंभ हुए। परिणाम भी आश्चर्यजनक थे। पेपराल से ठीक आधा कि.मी. की दूरी पर बाढ़ के रास्ते में एक बड़ा गड्ढा आया। कटाव बढ़ा और उसके

माध्यम से बहाव ने अपनी दिशा बदल दी। बाढ़ के पानी की विशाल जल राशि छः धाराओं में परिवर्तित हो गई। दबाव पहले की तुलना में काफी कम हो गया था। इसके बाद भी मंदिर, धर्मशाला, अस्थायी मंडप, भोजनशाला, आवास सभी स्थलों पर बाढ़ का पानी भर गया। यहाँ पाँच-पाँच फीट से ज्यादा पानी जमा था। यहाँ भी सभी ने एक ओर आश्चर्यजनक बात देखी। जहाँ गुरुदेव विराजमान थे, वहाँ उपाश्रय हाल यद्यपि नीचे हैं बावजूद इसके पानी सीढ़ियों से आगे नहीं बढ़ पा रहा था। ठीक इसी स्थल के सामने पेढ़ी की दीवार पर पानी ऊपर तक भर चुका था। इस स्थिति को देखकर प्रतीत हो रहा था मानों विज्ञान और संतुलन के सारे नियम यहाँ फेल हो रहे थे।

गुरुदेव बाहर आए। नमस्कार महामंत्र का स्मरण करते हुए कहा-'जल देवता अब आप पधारो। पेपराल और आसपास के सभी गाँवों के रहवासी और जीवमात्र जो आपसे भयभीत हो रहे हैं, उन्हें भयमुक्त करो। आप तो जीवनदाता हैं तो फिर जीवन क्यों ले रहे हैं?'

नमस्कार महामंत्र के प्रभाव का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। जलस्तर घटने लगा। स्थिति सामान्य होने की शुरुआत हुई। जैसे ही जल स्तर कुछ घटा समीपस्थ क्षेत्रों के गुरुभक्त जैसे-तैसे गिरते-पड़ते पेपराल पहुँचे। सूरत, थराद, डीसा, अहमदाबाद की परिषदें, संघ-तरुण परिषद् सभी दौड़ पड़े। करुणा के सागर परम पूज्य गुरुदेवश्री ने सभी को निर्देश देते हुए कहा -'हमारी छोड़ों, आप सभी तुरंत आसपास के क्षेत्रों में दौड़ पड़ो। परिषद्, संघ के माध्यम से राहत कार्य प्रारंभ करो। यह परिषद् की परीक्षा का अवसर है।'

'गुरुआज्ञा तहत्ती' गुरुआज्ञा पाकर सभी सेवार्थी चारों ओर फैल गए। जिससे जो बना उस माध्यम से सहायता कार्य आरंभ कर दिए। अनाज, स्वास्थ्य सेवा, दवाइयाँ सहित सभी प्राथमिकता वाली चीजों, सामग्रियों का व्यवस्थित पैकेट/ कीट बनाकर अलग-अलग दलों में उनका वितरण किया। पशुओं के लिए घास-आहार आदि की व्यवस्था भी थी। तहस-नहस हुए कारोबार से पीड़ित व्यापारियों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

गुजरात प्रांतीय परिषद् के अध्यक्ष श्री अरविंद देसाई तथा उनके साथियों ने संघ एवं परिषद् के साथ पशुओं के लिए घास की व्यवस्था, पांजरापोल या अन्य स्थलों पर मृत हुए पशुओं को दफन करवाने की व्यवस्था, महामारी का फैलाव न हो इस हेतु कीटनाशक का छिड़काव आदि की व्यवस्थाएं कीं।

तरुण परिषद् ने गुरुदेव के वचनों को आत्मसात करते हुए करुणा का श्रेष्ठ

उदाहरण प्रस्तुत किया। डीसा क्षेत्र में वर्षा व बाढ़ से प्रभावित व घायल हुए छोटे-बड़े पक्षियों को कीचड़ आदि स्थलों से हटाया। प्राथमिक उपचार के बाद अहमदाबाद पशु चिकित्सालय में समुचित इलाज करवाया। अनेक पक्षियों की जान बचाई जिन्हें स्वस्थ होने के बाद अभ्यारण्य में छोड़ा गया।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरु सहित अन्य राष्ट्रीय व स्थानीय पदाधिकारियों, मुंबई श्रीसंघ एवं परिषद् के सदस्यों द्वारा दो-तीन दिन लगातार घूमकर प्रभावित क्षेत्रों में प्रभावित जनों को आर्थिक सहायता सहित अन्य सुविधाएं मुहैया करवाई गईं। परिषद् के राजस्थान प्रांताध्यक्ष श्री बाबुलालजी कटारिया व साथियों ने भी ट्रेक्टर पर घूम घूम कर राहत कार्य में सक्रिय भागीदारी की। एक ओर राहत कार्य तो दूसरी ओर चातुर्मास आराधन की व्यवस्थाओं पर सभी की नजरें टिकी हुई थीं।

पूज्य गुरुदेवश्री के मुनि भगवंत, साध्वी भगवंतों ने गुरु जन्मभूमि, तीर्थभूमि में तारक गुरुदेव श्री की पावन निश्रा में उनके आशीर्वाद व मार्गदर्शन में अन्य गुरुभाइयों, बहनों के सहयोग से तपस्या का अति सुन्दर वातावरण निर्मित किया। अट्ठाई, सिद्धितप, अट्ठाई पारणे, मासक्षमण, 36 उपवास, गुरुतप, 108 आयंबिल, 108 अट्ठम तप सहित जिसे जो उचित लगा उस रूप में तपस्या की होड़ में दौड़ पड़ा। इसी कड़ी में नमस्कार महामंत्र के नियमित व वार्षिक आयोजन के संबंध में सम्पूर्ण भारत से विशाल संख्या में आने वाले आराधक पूज्यश्री के इशारे मात्र का मानों इंतजार कर रहे थे।

इधर मिथ्यात्वी देव, मिथ्यात्वी लोगों के मुँह से अनर्गल कहला रहे थे। हवा फैला रहे थे कि 'क्या करोगे पेपराल जाकर। वहाँ तो बाढ़ से सब तहस-नहस हो गया है। वहाँ से ही खबरें आ रही हैं कि पेपराल की तरफ मत जाना। आराधना निरस्त हो रही है। पेपराल में बाढ़ के पानी के जमाव के कारण जमीन से साँप, बिच्छू व जहरीले जानवर निकलेंगे। पशु-पक्षियों के मरने के बाद वहाँ महामारी फैलेगी। अभी तो कीचड़ बहुत है। ठहरने की व्यवस्था भी नहीं हो पाएगी। यदि हुई भी तो दूर-दूर ठहराएंगे। आदि..आदि..अफवाहें जोरों पर थी। मिथ्यात्वी कह रहे थे कि आराधना करना ही है तो इधर ही कर लो। यहाँ भी आयोजन होंगे। अथवा अपने गाँवों में ही कर लो। कुल मिलाकर मिथ्यात्वी, गुरुदेव और उनके नवकार आराधकों की परीक्षा लेना चाहते थे।

दूसरी ओर पूर्ण श्रद्धावान आराधकों का कहना था कि हम अनेक वर्षों से

गुरुदेव की निश्रा में जाप-आराधन करते आ रहे हैं। गुरुदेवश्री ने न केवल हमें सिखाया है बल्कि प्रत्यक्ष रूप से नमस्कार महामंत्र के प्रभाव के दर्शन भी कराए हैं। हम जानते हैं कि कैसे विकट और विपरीत परिस्थितियों में भी नवकार महामंत्र सहायक बनता है। नमस्कार मंत्र और गुरुदेव जहाँ हैं वहाँ कोई किसी का कैसे कुछ बिगाड़ सकता है? वैसे भी इस बार तो विशेष संयोग है। 'गुरुजन्म भूमि में इन्द्रदेवता तो मात्र प्रक्षालन के लिए आए थे।' हम तो अवश्य ही जाएंगे। हमने अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में अखण्ड आराधना-साधना की है। हम सुविधा के लिए नहीं साधना के लिए जा रहे हैं। जहाँ तक आराधना का प्रश्न है गुरुदेव की निश्रा, उनका आशीर्वाद, उनकी अमृतवाणी, उनका दर्शन-वंदन, नवकार रूपी नाव के खैवनहार का साथ अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी उपस्थिति में ही सच्चा आनंद है।

कुछ श्रद्धा से कमजोर व्यक्तियों ने संदेशों के माध्यम से पेपराल में नवकार, पर्यूषण, आराधना आदि के बारे में जानकारी मांगते हुए पूछा कि -'क्या विषम परिस्थितियों में ये सभी होंगे?'

पूज्यवर ने कहा-'प्रकृति ने अपना कार्य किया। हमें अपना कार्य करना है। जब हमारे पास नवकार है तो भय किसका? यह नवकार पर हमारी श्रद्धा की परीक्षा है। सिर्फ वर्षा का प्रकोप था, प्राणांतक कष्ट आने पर भी नवकार का सच्चा आराधक नवकार को विस्मरण नहीं करता। नवकार विपरीत व प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूलता में बदलने का सामर्थ्य रखता है। आत्मकल्याण में तो ये बाधाएँ आना ही हैं। सभी आओ और नवकार के सागर में डुबकी लगाओ, नवकारमयी बन जाओ।'

जैसे ही यह संदेश प्रसारित हुआ। हजारों-हजार आराधकों के चेहरे खिल उठे। उन्हें जैसे मन चाही मुराद मिल गई थी। और इसी के साथ आरंभ हो गई पेपराल जाने की यात्रा। मिथ्यात्वियों के चेहरे फक्क थे। गुरुदेव और भक्तों की अटूट आस्था देखकर वे आश्चर्यचकित थे।

देखते ही देखते आराधक पेपराल पहुँचने लगे। मधुकर महावीर की तीर्थभूमि, अपने हृदय सम्राट की जन्मभूमि की प्रदर्शना और प्रदक्षिणा मात्र से हृदय एक अलग ही सुखानुभूति महसूस करने लगा।

गुरुवर की आत्मीयता ने शीतलता का एहसास कराया। मिथ्यात्वी भी गुरुचरणों में शर्मिंदगी के साथ क्षमायाचना करते हुए, गुरु एवं गुरुभक्तों की नमस्कार महामंत्र पर आस्था-विश्वास को नमन करते हुए अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गए।

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य भगवंत

डॉ. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.

एवं आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणीवृंद चातुर्मास सूची 2015

पेपराल महातीर्थ गुजरात

सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति आचार्य भगवंत
डॉ.श्रीमद् विजय जयतंसेन सूरिश्वरजी म.सा.
वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अपूर्वरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री विनयरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री प्रशमसेन विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अजितसेन विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री विनितरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री पवित्ररत्न विजयजी म.सा.

श्री जयन्तसेनसूरि शासन प्रभावक ट्रस्ट
पो.पेपराल व्हाया जेतडा, जिला बनासकांठा गुजरात 385565

बागरा राजस्थान
मुनिराजश्री जयकीर्ती विजयजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन क्रिया भवन
पो. बागरा
जिला जालोर राजस्थान 343025

धाणसा राजस्थान
मुनिराज श्री जयरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री अशोक विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री आनन्द विजयजी म.सा.
श्री शान्ति पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर पेढी
पो.धाणसा जिला जालोर राजस्थान 343323

शाजापुर मध्यप्रदेश
मुनिराज श्री संयमरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री भुवनरत्न विजयजी म.सा.
श्री प्राच्य विद्यापीठ-दुपाडा रोड, पो. शाजापुर जि.उज्जैन

मुंबई 7 रास्ता महाराष्ट्र

मुनिराज श्री वैभवरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री शंखवेशरत्न विजयजी म.सा.
मुनिराज श्री गौयमरत्न विजयजी म.सा.

07 रास्ता जैन संघ दूसरी मंजिल 14 ब्लाक
जेकोब सर्कल महालक्ष्मी ईस्ट पो. मुंबई महाराष्ट्र 400011

साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीश्री पूर्णकिरणाश्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी म.सा.
साध्वीश्री हितप्रज्ञा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मोक्षगुणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री रत्नयशा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सौम्यगुणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अविचलदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अनुपमदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अमितदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विद्वदगुणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री दर्शितकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री दर्शनकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विज्ञानलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री जीवनकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कल्परेखा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री भक्तिरसा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री वैराग्यगुणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अर्पितकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री निरुपमकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अपूर्वकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मैत्रीकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री निरंजनकला श्रीजी म.सा.

साध्वीश्री चिंतनकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अक्षयकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री चिरागकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री रश्मिप्रभा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री निर्वेदककला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री आगमकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री संवेगप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री चैत्यप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अर्हतप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सुमनकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सौरभकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अमृतरसा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विरागनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री उपशमप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विवेकप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कुमुदप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री शाश्वतप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सिद्धांतरसा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री आज्ञानिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री नम्रगुणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री रिद्धिनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विरागदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री ऋजुप्रिया श्रीजी म.सा.

साध्वीश्री चित्तप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री ध्रुवकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री धैर्यकला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री ध्यानदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मौनदृष्टा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री स्मितप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री परागनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विबुधप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री संवरलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री परार्थप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री वीरनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मेघनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मेरुनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मौलीनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री मंगलनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सुपार्श्वनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री सुव्रतप्रिया श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री सोहमप्रिया श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री नेमिनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री आदिनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री श्रेयांसनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री तीर्थनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री सत्वप्रिया श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री मंत्रकला श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री अर्पणप्रिया श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री नयनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री परमरेखा श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री पदरेखा श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री शुभनिधि श्रीजी म.सा.
नूतन साध्वीश्री उदयनिधि श्रीजी म.सा.

महुआ राजस्थान
डॉ. साध्वीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा.
डॉ.साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन पौषधशाला
पो.महुआ जिला दौसा
राजस्थान 321601

.....

खानपुर अहमदाबाद गुजरात
साध्वीश्री कनकप्रभाश्रीजी म.सा.
साध्वीश्री दर्शितगुणा श्रीजी म.सा
साध्वीश्री विनितगुणा श्रीजी म.सा
साध्वीश्री वात्सल्यगुणा श्रीजी म.सा
साध्वीश्री संयमदर्शिता श्रीजी म.सा
साध्वीश्री विशुद्धदर्शिता श्रीजी म.सा
साध्वीश्री ज्ञानदर्शिता श्रीजी म.सा
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञानमंदिर
तुलसी विहार
पोस्ट आफिस के सामने
खानपुर पो. अहमदाबाद 380001

.....

मुंबई खेतवाड़ी
साध्वीश्री कोमललता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अनेकांतलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री यशोलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कौविदलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अतिशयलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कारुण्यलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री समर्पणलता श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री श्रेयसलता श्रीजी म.सा.

साध्वीश्री परमेष्टिलता श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
10वी खेतवाडी
पो. मुंबई महाराष्ट्र 400 001

.....

धाणसा राजस्थान
साध्वीश्री सूर्यकिरणा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री अरुणप्रभा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सम्यग श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री शरदप्रभा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री शीतलप्रभा श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विनितप्रभा श्रीजी म.सा.
श्री शांति पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर पेढी
पो. धाणसा जिला जालोर
राजस्थान 343323

.....

इन्दौर मध्यप्रदेश
साध्वीश्री सूर्योदया श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री कैलाश श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विपुलदर्शिता श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्र जैन उपाश्रय,
जूनी कसेरा बाखल
खजूरी बाजार, पो. इन्दौर 457 001

.....

पालीताणा गुजरात
साध्वीश्री चन्द्रयशा श्रीजी म.सा.
श्री यतीन्द्र भवन धर्मशाला,
तलेटी रोड पालीताणा
जि.भावनगर गुज. 364270

सियाणा राजस्थान
साध्वीश्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा.
श्री सुविधिनाथ जैन मंदिर
पो. सियाणा जिला जालोर
राज. 343024

.....

गुन्टूर आंध्रप्रदेश
साध्वीश्री आत्मदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री सम्यगदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री चारुदर्शना श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन आराधना भवन
आर अग्रहारम पो. गुन्टूर आंध्रप्रदेश

.....

मीठाखली अहमदाबाद
साध्वीश्री बसंतमाला श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री रंजनमाला श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
श्री राजेन्द्रसूरि मार्ग, मेडिसर्च
हॉस्पीटल के पास
मीठाखली 6 रास्ता अहमदाबाद
380001

.....

झाबुआ मध्यप्रदेश
साध्वीश्री पुण्यदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री हर्षदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीश्री विरतीदर्शना श्रीजी म.सा.
श्री आदिनाथ 52 जिनालय
महात्मा गांधी मार्ग, झाबुआ म.प्र.

डीसा गुजरात

साध्वीजी श्री केवल्यगुणा श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री शुद्धात्मदर्शिता श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री श्रेयसदर्शिता श्रीजी म.सा.

श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर

नेमीनाथ नगर, पो. डीसा गुज,

.....

अहमदाबाद-नवावाडज गुजरात

साध्वीश्री दिव्यदृष्टा श्रीजी म.सा.

साध्वीश्री पुनितकला श्रीजी म.सा.

साध्वीश्री पावनदृष्टा श्रीजी म.सा.

श्री राजेन्द्र सूरि जैन ज्ञान मंदिर

थीरपुर नगर सोसायटी, नववाडज

अहमदाबाद गुज.

.....

भीनमाल राजस्थान

साध्वीजी श्री नयनप्रभा श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री अनन्तदृष्टा श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री मयूरकला श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री वीतरागनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री श्रुतनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री योगनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री जिनाज्ञानिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री मुक्तिनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री परमनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री श्रद्धानिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री राजनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री गोयमनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री तपोनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री धृतिनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री मल्लिनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री दीपनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री अरिहंतनिधि श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री देवनिधि श्रीजी म.सा.

नूतन साध्वीजी श्री नमिनिधि श्रीजी म.सा.

नूतन साध्वीजी श्री नंदीनिधि श्रीजी म.सा.

श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर

सदर बाजार, भीनमाल,

जिला जालोर राज.

.....

मुम्बई-भायन्दर महाराष्ट्र

साध्वीजी श्री शासनलता श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री वीतरागलता श्रीजी म.सा.

नूतन साध्वीजी श्री संभवलता श्रीजी म.सा.

नूतन साध्वीजी श्री ज्योतिलता श्रीजी म.सा.

श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर

राजेन्द्रसूरि अपार्ट., 60 फीट रोड,

न्यू आनन्द नगर

पो. भायन्दर (वे.) मुंबई महाराष्ट्र

.....

इन्दापुर महाराष्ट्र

साध्वीजी श्री तत्वलता श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री कुसुमलता श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री राजयशा श्रीजी म.सा.

साध्वीजी श्री जिनांगयशा श्रीजी म.सा.

श्री संभवनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर

पो.इन्दापुर, जिला रायगढ़ महाराष्ट्र

जोधपुर राजस्थान
साध्वीजी श्री मोक्षपूर्णा श्रीजी म.सा.
स्थिरवास
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
खेरादियों का वास, पो. जोधपुर,
राजस्थान

.....

सूरत गुजरात
साध्वीजी श्री चारित्रकला श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री आर्जवकला श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री अर्हमनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री देशनानिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री क्रियानिधि श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
हनुमान चार रास्ता, गोपीपुरा,
पो. सूरत गुजरात

.....

अहमदाबाद-मोटेरा गुजरात
साध्वीजी श्री अध्यात्मकला श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री जयगणानिधि श्रीजी म.सा.
श्री राज राजेन्द्र नगर,
अशोक विहार, सी-ब्लॉक
इंजीनियर कॉलेज के सामने,
गांधीनगर हाइवे
पो.मोटेरा जिला गांधीनगर गुजरात

.....

अहमदाबाद-रतनपोल गुजरात
साध्वीजी श्री भाग्यकला श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री योगप्रिया श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री यशप्रिया श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
राजेन्द्र सूरि चौक,
रतनपोल, अहमदाबाद

.....

राजगढ़ मध्यप्रदेश
साध्वीजी श्री काव्यरत्ना श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री कुलरत्ना श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री विरतिरत्ना श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्र भवन, राजगढ़ मध्यप्रदेश

.....

जावरा मध्यप्रदेश
डॉ.साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी
म.सा.
साध्वीजी श्री रुचिदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री श्रुतिदर्शना श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री तृप्तिदर्शना श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन पौषधशाला
पीपली बाजार,
पो. जावरा जि. रतलाम

.....

पाटण गुजरात
साध्वीजी श्री सिद्धिनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री श्रीनिधि श्रीजी म.सा.
साध्वीजी श्री लब्धिनिधि श्रीजी म.सा.
श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर
पंचासरा मंदिर के पीछे,
पो. पाटण गुजरात

विराम दे गई सवालों पर त्रिपुटी की मेहनत

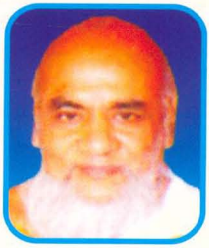

जब 4 अप्रैल 2015 को पूना में आचार्य भगवंत के चातुर्मास की घोषणा पेपराल महातीर्थ में करने की हुई तभी से समस्त गुरुभक्तों के मन में अपार उत्साह और उमंग तो था ही क्योंकि यह चातुर्मास घोषणा के दिन से ही अपने आप में इतिहास बन गया था। लेकिन सभी गुरुभक्तों के मन में एक ही सवाल चल रहा था कि पेपराल में चातुर्मास कैसे होगा? व्यवस्थाएँ कैसे होगी? छोटा सा ग्राम है। न ठहरने की व्यवस्था है और न ही साधनों की? क्या होगा अब? निश्चित ही यह प्रश्न हम सभी के मन में रहा होगा। लेकिन कहते हैं ना कि जहाँ सच्ची श्रद्धा, आस्था और सच्चा समर्पण हो वहाँ हर राह आसान हो जाती है। फिर जब ऐसे प्रभावी गुरुदेव का आशीर्वाद भी हो तो मानो जंगल में भी मंगल हो जाता है....

बस मन में यही गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी , मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजयजी एवं मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी तीनों गुरुभाइयों की त्रिपुटी एक माह पूर्व ही पेपराल आ गई और संघ व ट्रस्ट को अपना मार्गदर्शन देकर हर संभव प्रयास किया कि प्रवेश के पूर्व ही यहाँ सब कायाकल्प हो जाए। निश्चित ही तीनों मुनि भगवंतों की अथक मेहनत ने रंग ला दिया और जब पेपराल में गुरुभक्त आये तो यहाँ का नजारा अद्भुत नजर आ रहा था। इस प्रयास में मुनिगणों को हीराभाई वेदलिया, महेन्द्रभाई वोरा (बाबा), नवीनभाई लाखणी, शैलेष भाई सहित आसपास के सभी संघों व परिषदों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जो अनुमोदनीय है ।

सामायिक कार्यक्रम सम्पन्न

पेपराल–श्री नवकार महामंत्र आराधना के सातवें दिन पूज्य साधु भगवंतों एवं साध्वीजी भगवंतों की तपस्या के अनुमोदनार्थ श्री नवकार आराधना मंडप पेपराल में सामूहिक सामायिक का आयोजन रखा गया। इसमें बड़ी संख्या में गुरुभक्तों ने सामायिक ली।

इसअवसर पर मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा., श्री अपूर्वरत्न विजयजी म.सा. एवं सिद्धितप के तपस्वी श्री तारकरत्न विजयजी म.सा. ने निश्रा प्रदान की। उक्त आयोजन के लाभार्थी कुक्षी निवासी प्रीति प्रमोद जैन एवं बाग निवासी सेकेट्री परिवार–कमलाबाई परिवार थे।

'यह आजादी झूठी है'

गीतकार, लेखक और स्वराज को समर्पित चर्चित त्रैमासिक पत्रिका 'दाल–रोटी' के संपादक अक्षय जैन की नई पुस्तिका 'यह आजादी झूठी है' नि:शुल्क उपलब्ध है। इच्छुक व्यक्ति अपना नाम, पता और पिनकोड मो. 080807 45058 पर एसएमएस कर सकते हैं।

रजत रश्मियां

रू. 1100.00 स्व. श्रीमती दाखाबाई शांतिलालजी पोसित्रा, बाग की स्मृति में हस्ते श्री सुरेशजी, श्री राजेशजी, श्री सुनीलजी पोसित्रा बाग की ओर से

---

* वीर प्रभु की आत्मा 25 वें भव में नंदन ऋषि ने उत्कृष्ट 11,60,645 मासक्षमण की तपश्चर्या कर तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया था।

* श्री चंद्र केवली के अखंड साढे चौदह वर्ष तक वर्धमान तप की 100 ओली करके कर्मों की निर्जरा करनेवाले एवं तप के प्रभाव से 800 चौवीसी तक नाम अमर रहेंगे।

* श्री वीर परंपरा में सुधर्मास्वामी की पाट विभूषित पू. आ. श्री देवसूरि म.सा. ने आजीवन 11 द्रव्य वापरे (उपयोग) में थे एवं सहस्त्रावधानी पू.आ. श्री मुनिसुंदर सूरि म.सा. ने जीवन के अंत तक 12 द्रव्य का आहार किया था।

पेपराल में तपस्वी का बहुमान

राजगढ़। राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्री जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री जयन्तसेनसूरि शासन प्रभावक ट्रस्ट द्वारा पेपराल में राजगढ़ के मासक्षमणरत तपस्वी अंकुर वागरेचा का बहुमान किया गया।

राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में अनेक साधु-साध्वी भगवंत एवं श्रावक-श्राविकाएं तपस्यारत हैं, जिनकी पूर्णाहुति 19 सितम्बर को होगी। सभी तपस्वियों की राजगढ़ श्रीसंघ की ओर से सुख-शाता पूछकर तप की अनुमोदना की गई। तपस्यारत में सिद्धितप के तपस्वी मुनिश्री निपुणरत्न विजयजी, मुनिश्री तारकरत्नविजयजी, साध्वीश्री अविचलदृष्टा श्रीजी, साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी, साध्वीश्री मैत्रीकला श्रीजी, साध्वीश्री रश्मिप्रभा श्रीजी, साध्वीश्री आगमकला श्रीजी, साध्वीश्री शाश्वतप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री विरागनिधि श्रीजी, साध्वीश्री सिद्धांतरसा श्रीजी, साध्वीश्री विरागदृष्टा श्रीजी, साध्वीश्री विबुधप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री परार्थप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री सुव्रतप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री सत्वप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री शुभनिधि श्रीजी, 108 अट्ठम तप के तपस्वी साध्वीश्री निरुपमकला श्रीजी, चत्तारी अठ-दस-दोय तप के तपस्वी साध्वीश्री अर्हतप्रियाश्रीजी, निरंतर आठ अट्ठाई के तपस्वी साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी, 36 उपवास के तपस्वी साध्वीश्री कुमदप्रिया श्रीजी, मासक्षमण के तपस्वी साध्वीश्री ध्यानदृष्टा श्रीजी, साध्वीश्री सोहमप्रिया श्रीजी, साध्वीश्री अर्पणाप्रिया श्रीजी, 21 उपवास के तपस्वी साध्वीश्री वीरनिधि श्रीजी, 8 उपवास के तपस्वी साध्वीश्री विज्ञानलता श्रीजी व साध्वीश्री सवरलता श्रीजी, गुरुतप की तपस्वी साध्वीश्री भक्तिरसा श्रीजी म.सा. की तपस्याएं सानंद चल रही हैं। साथ ही अनेक श्रावक-श्राविकाओं के सिद्धितप, मासक्षमण, सोलह व आठ उपवास की तपस्याएं भी चल रही हैं। तप पूर्णता पर राजगढ़ सहित मालवा-निमाड़ से अनेक गुरुभक्त तप अनुमोदनार्थ पेपराल पहुंचेंगे।

कल्प सूत्र का श्रवण पाप निवारक

जावरा। साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा चार की प्रेरणा से चल रहे चातुर्मास अंतर्गत पर्यूषण महापर्व के तृतीय दिवस में साध्वीजी ने कहा कि कल्पसूत्र का श्रवण करने से कर्मों का क्षय तो होता ही है, नए कर्म भी नहीं बंधते हैं। इस कल्प सूत्र को श्रद्धा से विधिपूर्वक सशब्द ध्यान से सुनने पर कोई भी व्यक्ति आठ भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। कल्पसूत्रजी पाप निवारक हैं।

साध्वीश्री ने कल्पसूत्र का वाचन भी किया। उन्होंने बताया कि यह भद्रबाहुस्वामीजी द्वारा रचित है। गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी ने और बाद में राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् जयंतसेन सूरिजी म.सा. ने अलग-अलग भाषा में इसे संपादित किया। कल्पसूत्र 14 पूरब ज्ञान में सबसे उत्तम सूत्र माना गया है। एकाग्रचित्त हो विनयभाव से इसका श्रवण करना चाहिए। इसके समान कोई अन्य सूत्र नहीं है। श्रावक-श्राविकाओं को इस सूत्र की भक्ति करते हुए, गाजे-बाजे से लाकर चातुर्मासार्थ विराजित साधु-संतों के हाथों में समर्पित कर उनके मुखारविंद से इसका श्रवण करना चाहिए।

चल रहे तपस्या क्रम में साकली तेले की तपस्वी श्रीमति मेहताजी एवं लड़ी के आयंबिल के तपस्वी श्री शांतिलालजी सुराणा की श्रीसंघ द्वारा साता पूछी गई। कटारिया परिवार द्वारा तपस्वियों का बहुमान किया गया। प्रातः अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् द्वारा समर्पण भाव से पूजा पश्चात प्रभु प्रक्षाल का आयोजन किया गया। सभी पूजा करने वाले महानुभावों को अंगूठों को दूध से धोकर, कपड़े से साफ कर अष्टप्रकारी पूजा सामग्री दी गई। बाद में साध्वीजी म.सा. ने प्रभु मिलन का कार्यक्रम करवाया जिसमें सभी श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। रात्रि में अ.भा.श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् द्वारा 'सब खोलो-सब जीतो ' भक्ति का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में खेलने वाले महानुभाव एवं श्रद्धालु दर्शक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन जैन पंचायती नोहरा में हुआ। यह जानकारी चातुर्मास समिति प्रचार-प्रसार सचिव सचिन चत्तर ने दी।

वासुपूज्य स्वामी नूतन जिनालय की प्रतिष्ठा महा महोत्सव सम्पन्न

भारत के टॉपटेन उद्योगपति अदाणी परिवार द्वारा जिनालय का निर्माणराष्ट्रसंत गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का सान्निध्य

उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले मूल रूप से थराद निवासी भारत के टाप टेन उद्योगपतियों में सम्मिलित अदाणी परिवार ने औद्योगिक क्षेत्र में देश-विदेश में अपनी अलग पहचान बनाई है। अदाणी परिवार द्वारा अहमदाबाद-साबरमती-मोटेरा मार्ग स्थित राज राजेन्द्र नगर कॉलोनी का निर्माण किया गया है। कालोनी में थराद समाज के 200 परिवारों को फ्लेट वितरण किए। अदाणी परिवार के मातुश्री शान्ता बॉ की इच्छानुसार परिवार के श्री विनोदभाई, श्री महासुखभाई, श्री वसंतभाई, श्री गौतमभाई, श्री राजेश भाई,श्रीमती सुपर्णाबेन, श्रीमती रंजनाबेन, श्रीमती पुष्पाबेन, श्रीमती प्रीतिबेन, श्रीमती शिलीनबेन आदि परिवारजनों ने मंदिर निर्माण कार्य का शुभारंभ कर तेज गति से इसे पूर्ण किया। मंदिर की प्रतिष्ठा त्रिस्तुतिक जैन संघ के गच्छाधिपति श्री

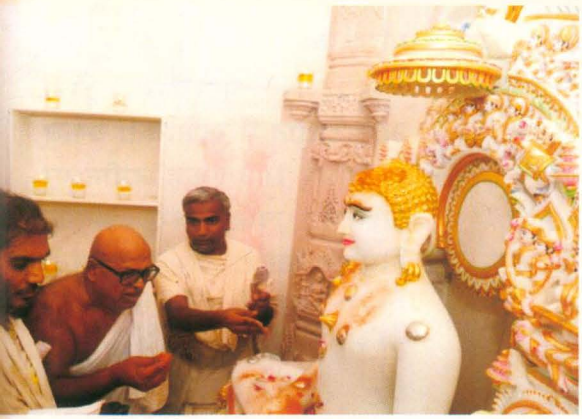

जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के करकमलों से हो, ऐसी इनके परिवारजनों की इच्छानुसार अदाणी परिवार के श्री महासुखभाई अदाणी, त्रिस्तुतिक जैन संघ के अध्यक्ष श्री वाघजीभाई वोरा ने (आसोपालव) बीजापुर नगरे चातुर्मासार्थे विराजित प.पू. गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. से विनंती की कि आपश्री यह प्रतिष्ठा आपके करकमलों से करें। पूज्य गुरुदेव ने अपनी सम्मति दी। अहमदाबाद श्रीसंघ एवं समाज के युवा कर्मठ कार्यकर्तागणों द्वारा बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ यह प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित हुआ। 12 जून 2015 को भव्यतम प्रतिष्ठा संपन्न हुई। सुवर्ण अवसर पर सोने में सुगंध जैसी चार मुमुक्षुओं की दीक्षाएं भी सम्पन्न हुईं। थराद निवासी टीलचंदभाई मोरखीया (लाखणी) के सुपुत्र प्रकाशभाई की दो बेटियों ने दीक्षा अंगीकार की। बहुत ही छोटी उम्र में दोनों बहनों कु. आशा एवं कु. रिद्धी ने संयम मार्ग अंगीकार कर इनके परिवार का गौरव बढ़ाया। साथ में उज्जवलाबेन वाणीगोता एवं शारदाबेन दोशी की भी दीक्षा सम्पन्न हुई। चारों दीक्षार्थियों का पूज्य साध्वीश्री परमरेखाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री पदरेखाश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री शुभनिधिश्रीजी म.सा., पू.सा.श्री उदयनिधि श्रीजी म.सा के रूप में नामकरण हुआ।

वैसे तो ख्याति प्राप्त अदाणी परिवार का परिचय देने की जरूरत नहीं है। उल्लेखनीय यह है कि अदाणी ग्रुप के चेयरमेन श्री गौतमभाई अदाणी ने औद्योगिक जगत में नई आर्थिक ऊंचाइयों को छूकर भी अपने समाज, अपने गाँव, अपने मात-पिता, पूरे परिवार के प्रति स्नेह, लगाव, प्रेम हमेशा बनाए रखा है। आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व कच्छ मुद्रा पोर्ट की बंजर

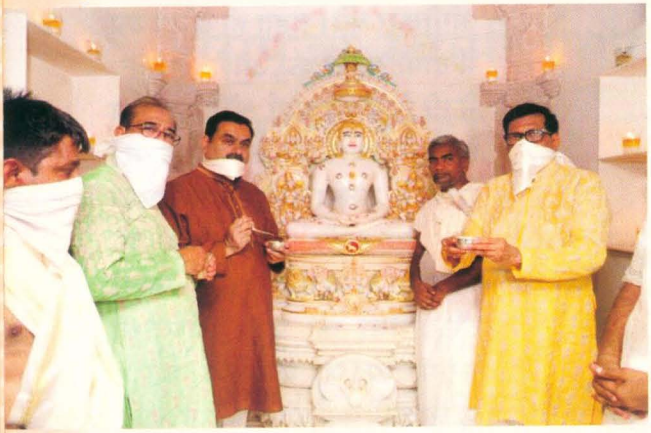

जमीन जिसे कोडी के मूल्य से भी कोई खरीदने वाला न था उसी बंजर जमीन पर एक ऐसा पोर्ट निर्माण किया जिसकी गिनती आज भारत के प्रथम पांच पोर्ट में की जाती है। वर्तमान में जैसे प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्रभाई मोदी ने गुजरात को पहचान दी है ऐसी ही पहचान अदाणी मुद्रा पोर्ट से मिली है। थराद में जन्में श्री अदाणी ने अपनी सख्त मेहनत, लगन, प्रबल पुरुषार्थ, आत्मविश्वास, मात-पिता श्री शांतिभाई एवं मातुश्री शान्ता बॉ के आशीर्वाद के साथ दादा गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. की असीम कृपा से सफलता प्राप्त की। वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. का आशीर्वाद इनके परिवार पर हमेशा बरसता है। पूरे परिवार में धार्मिकता जैसे कूट-कूट कर भरी है। ऐसे परिवार ने गुजरात की आन-बान-शान, गरिमा और गौरव को बढ़ाया है।

अदाणी परिवार द्वारा अहमदाबाद में कर्णावती क्लब के सामने 100 एकड़ जमीन पर अद्यतन लक्झुरीयस स्कूल निर्माण करवा कर एक सुंदर सेवा कार्य किया है। डॉ.प्रीतिबेन अदाणी विद्यामंदिर की चेयरपर्सन हैं। कमजोर परिवार के 1200 से ज्यादा बच्चे यहाँ उच्चतम शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। पूरी तरह से निःशुल्क संचालित इस विद्यामंदिर में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों जिनकी सालाना आमदनी 1 लाख से कम है के होशियार बच्चों को प्रवेश मिलता है। इस सेवाकार्य की जितनी अनुमोदना करें उतनी कम है। यह परिवार थराद समाज का, त्रिस्तुतिक समाज का तो गौरव है ही पूरे गुजरात का भी गौरव है।

મોટેરા-અમદાવાદ મધ્યે
શ્રી રાજ-રાજેન્દ્રનગરે
શાંતાબેન શાંતીલાલ ભૂદરમલ અદાણી પરિવાર નિર્મિત

પ્રતિષ્ઠા સહ ચાર મુમુક્ષુઓની પારમેશ્વરી પ્રવ્રજ્યા

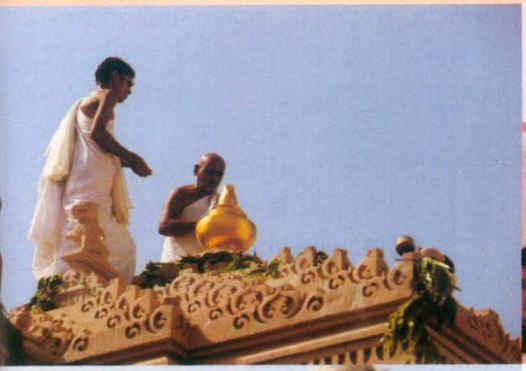

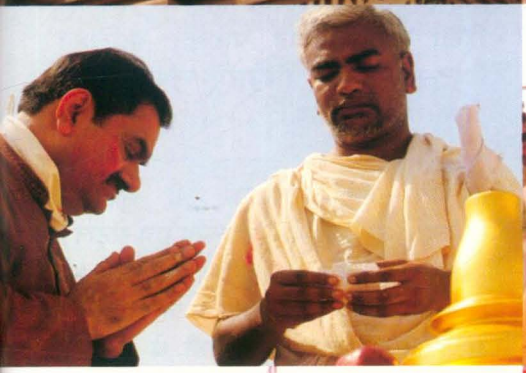

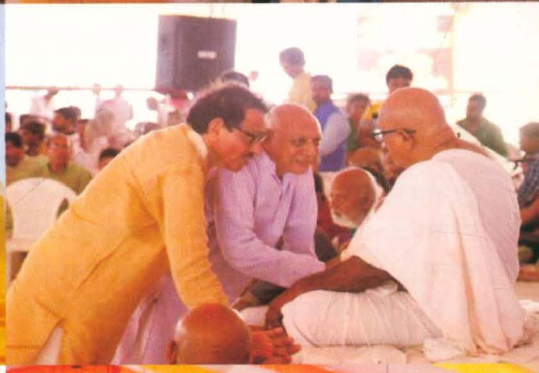

जावरा में मेरू तप की तपस्या

जावरा । साध्वी श्रीजी डॉ. प्रीतिदर्शना म.सा. आदि ठाणा चार की प्रेरणा से चल रहे चातुर्मास के अंतर्गत मेरू तप तपस्या सतत् चल रही है, जिसमें एक दिन उपवास व एक दिन बियासणा करना पड़ता है । तपस्या दि. 20–9–2015 को पूर्ण होगी । इसी कड़ी में दि. 21–अगस्त से नमस्कार महामंत्र आराधना प्रारंभ हुई जो 29–8–2015, को पूर्ण हुई । श्रीमती चन्दादेवी धर्मपत्नी श्री लक्ष्मीचंदजी बरमेचा (दलौट वाले) ने मास क्षमण की तपस्या की । 15 अगस्त को अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा, जावरा में त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व पर्यावरण प्रेमी श्री किशोरजी खेमावत की स्मृति में किशोर वाटिका (गीता भवन के सामने) वृक्षारोपण किया गया। जिसमें परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री श्री अनिलजी दसेड़ा (न.पा. अध्यक्ष) मुख्य अतिथि रहे, पूज्य साध्वीजी की निश्रा में जैन पंचायती नोहरे में 16 अगस्त को सामूहिक नवकार मंत्र का जाप हुआ। जिसमें 700 श्रावक श्राविकाओं ने भाग लिया ।

त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ एवं चातुर्मास समिति के बाबुलालजी तातेड़, तेजमलजी मेहता, नानूजी चौरड़िया, अशोकजी बोरदिया, प्रकाशजी मोदी, महेन्द्रजी कोलन, यशवंतजी चौरड़िया, दीपक सकलेचा, अंकित मालक, वैभव मुणत, रूपेश सिसोदिया, जितेन्द्र मेहता, अरविन्द मोदी, मुकेश चौरड़िया, विकास वन्याक्या, प्रवीण वन्याक्या, पवन कटारिया, शशांक मेहता, प्रभात चौरड़िया एवं नवयुवक परिषद्, तरूण परिषद्, महिला परिषद्, बहु परिषद्, बालिका परिषद् एवं परिषद् परिवार ने सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया । – सचिव चत्तर

दिनांक 16 सितम्बर को जैन पंचायती नोहरा में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् द्वारा राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के जीवन चरित्र पर म्यूजिक एवं प्रोजेक्टर द्वारा तरुण साथियों के सहयोग से अलग–अलग रूप में राजेन्द्र सूरिजी म.सा. के जन्म से लेकर देवलोकगमन तक की झांकियाँ प्रस्तुत की गई ।

पर्युषण महापर्व में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक मंडल परिषद शाखा जावरा द्वारा ''सब खेलो सब जीतो भक्ति के संग'' प्रतियोगिता वृहद स्तर पर आयोजित की गई । प्रतियोगिता में कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेशजी पगारिया (अध्यक्ष जैन सौश्यल ग्रुप सेंट्रल) ने की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजीत जी चत्तर श्री प्रकाशजी जैन पटवारी सा. एवं श्री प्रवीणजी मोदी थे । उनके साथ मंच पर श्रीसंघ के महासचिव श्री प्रदीपजी सिसोदिया चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री तेजमलजी मेहता (बोदिना वाले) एवं महामंत्री श्री हेमेन्द्रराजजी चोरड़िया उपस्थित थे । यह जानकारी परिषद के प्रचार सचिव श्री मुकेशजी चौरड़िया ने दी । पर्युषण महापर्व के पश्चात क्षमापना दिवस मनाया गया ।

त्रिस्तुतिक समाज के 150 वर्ष के इतिहास में अभूतपूर्व प्रसंग

सूरत में आचार्यदेव श्रीमद् जयंतसेनसूरिजी म.सा. के सान्निध्य में सामूहिक बारह दीक्षा

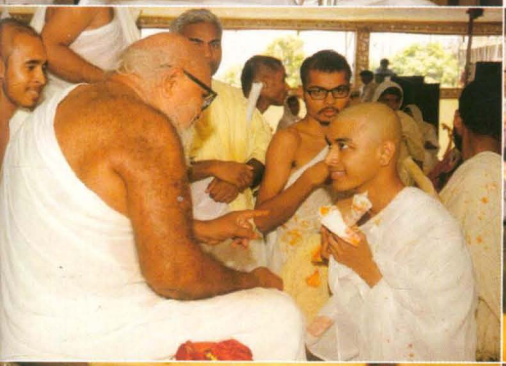

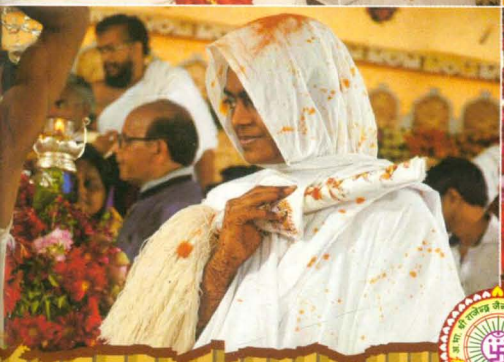

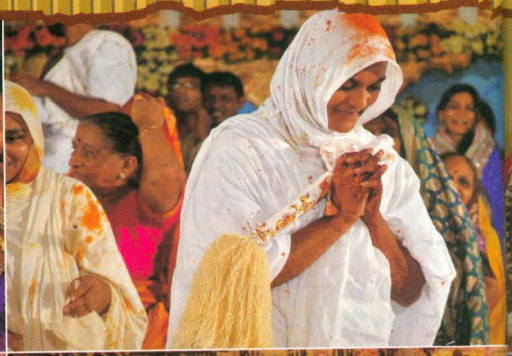
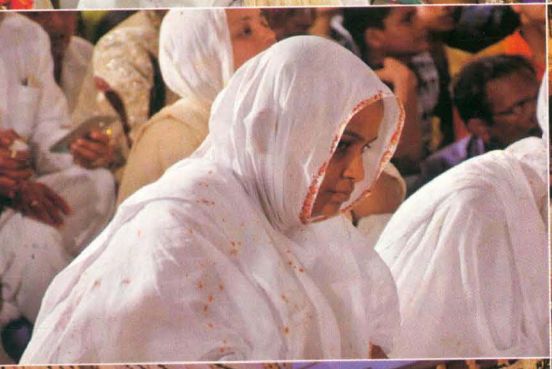
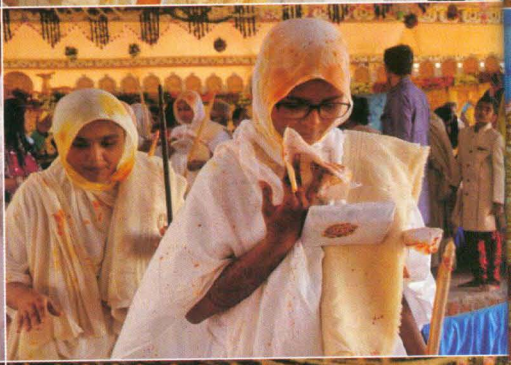
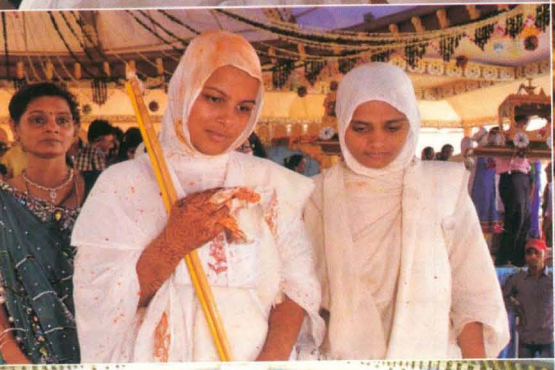
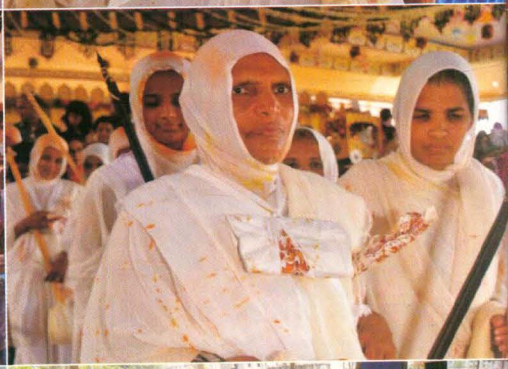

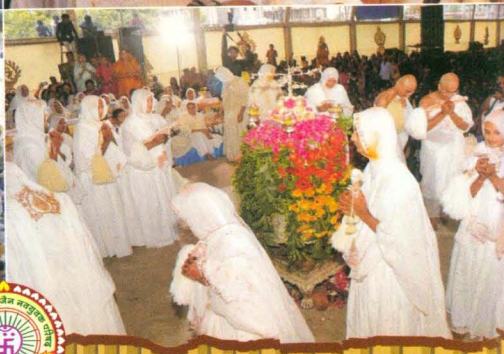

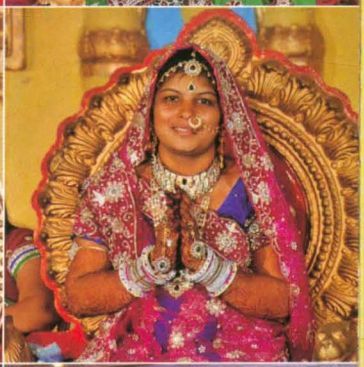

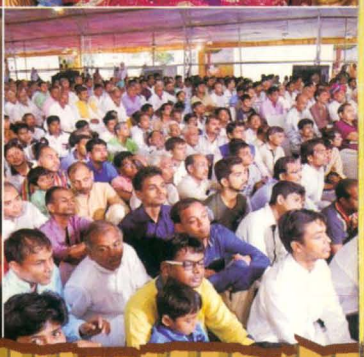

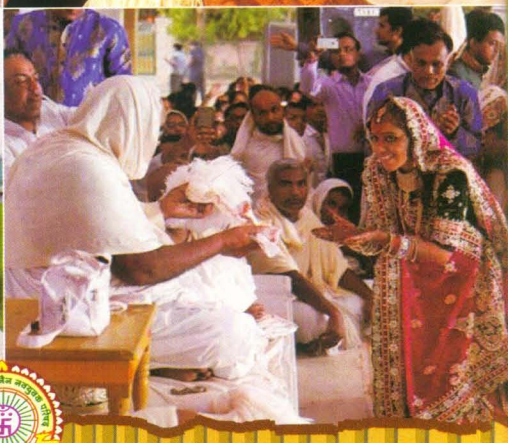

धर्माराधना जारी, पर्यूषण पर्व में सहभागिता की

रतलाम। नीमवाला उपाश्रय में चातुर्मासिक आराधना-उपासना महोत्सव में सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध एवं जाप हुए। सभी समाजजनों ने पर्युषण पर्व में सहभागिता की। उत्साह एवं आनंदपूर्वक इसे मनाया एवं प्रवचनों का लाभ लिया। उल्लेखनीय है कि नीमवाला उपाश्रय पर चातुर्मास नहीं होने से खरतरगच्छ साध्वीश्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. ने अनुरोध पर दो साध्वीजी को उपाश्रय पधारकर प्रवचन की आज्ञा प्रदान की थी।

त्रिस्तुतिक श्रीसंघ एवं ट्रस्ट अध्यक्ष डॉ.ओ.सी.जैन, उपाध्यक्ष संजय घोचा, सचिव अनोखीलाल भटेवरा, ट्रस्टीगण सर्वश्री सुरेशचन्द्र बोराना, सुशील छाजेड़, श्रेणिक घोचा, रमणिक मालक, शिखर दुग्गड़, पारसमल खेड़ावाला एवं राजेन्द्रकुमार ने पयुर्षण पर्व में सहभागिता करने एवं प्रवचनों का लाभ लेने का अनुरोध किया गया था। यह जानकारी महोत्सव संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने दी।

एक अन्य जानकारी में नवकार आराधना संयोजक ने बताया कि रक्षाबंधन को नवकार आराधना का समापन हुआ। अगले दिन रविवार को पांच माला जाप पश्चात् पारणा करवाया गया। इस आराधना में सर्वश्री सुजानमल सोनी, गेंदालाल सकलेचा, महेन्द्र गंग,संदीप लुणावत, श्राविका बहनों विमला बाठिया, ममता भंडारी, हंसा खाबिया, राजुल सकलेचा, विमला चोपड़ा, शांता कटारिया, श्यामा नांदेचा, मधु गंग, उषा मेहता, प्रमिला सौलंकी, चन्द्रकांता खिमेसरा, निर्मला भटेवरा, मनोरमा बाफना, शकुंतला ओस्तवाल, रोशन डुंगरवाल, निर्मला रांका, पुष्पा ओरा, शोभा कटारिया, दाखा पारख, सीमा नाहटा, शशी संघवी, चंद्रकांता दुग्गड़, बेबी सकलेचा ने भाग लिया।

एक अन्य जानकारी में महोत्सव प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी ने बताया कि चातुर्मास अवधि में 108 सामायिक में सुभद्रा गंग, विमला चोपड़ा, रमिला कोचर, चंदनबाला खेड़ावाला, मधु चोपड़ा, ममता

भंडारी, शांता कटारिया, श्यामा नांदेचा, दाखा पारख, चंद्रकांता खिमेसरा, राजल सकलेचा, संतोष सोनी, स्नेहलता जैन, कुसुम भंडारी, पुष्पा ओरा, प्रेमलता कटारिया, सारिका डूंगरवाल, ज्योति कटलेचा, मोनिका खिमेसरा और मंजू ओरा भाग ले रही हैं। श्री शांतिनाथ प्रभु के 68 दिवसीय जाप, 108 प्रतिक्रमण तथा पौषध की तपस्याएं एवं आराधनाएं चालू हैं।

इसी क्रम में श्री खेड़ावाला ने बताया कि गुरुदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी की प्रतिमा की चांदी की आंगी श्री मिश्रीमल पूनमचंद लुणावत द्वारा बनवाई गई, जिसे हर्ष लुणावत ने धारण करवाई। अन्य प्रतिमाओं की भी अंगरचना हो रही है। कल्पसूत्र का वाचन किया गया। 14 सितंबर को महावीर जन्मोत्सव धूमधाम से मना और सपनाजी की बोलियाँ लगीं। गुरुवार 17 सितंबर को संवत्सरी, चैत्यपरिपाटी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट मंडल के पदाधिकारियों सहित सैंकड़ों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

नगर बंद

बखतगढ़। राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा संथारे पर रोक लगाने के फैसले के विरोध में बखतगढ़ जैन समाज के आह्वान पर 24 अगस्त को नगर बंद रखा गया। बंद में सभी समाज के लोगों ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर ऐतिहासिक समर्थन दिया। सुबह से ही बाजार में सन्नाटा पसरा रहा। समग्र जैन समाज महावीर भवन पर एकत्रित हुआ। यहाँ से मौन रैली निकाली गई। समाज के बच्चे व नवयुवक

हाथों में 'महावीर प्रभु की देशना, आत्महत्या नहीं संलेखना' जैसे विभिन्न नारों की तख्तियाँ लेकर चल रहे थे।

नगर के विभिन्न मार्गों से होती हुई रैली सदर बाजार पहुँची जहाँ वैभव चौरड़िया ने 'संथारा आत्महत्या नहीं अपितु आत्मकल्याण का माध्यम है' विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला और संथारे पर लगी रोक हटाने की बात पुरजोर तरीके से रखी। संदीप वरमेचा ने भी अपने विचार रखे और सभी के प्रति सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर माणकलाल पटवा, जयंतिलाल वरमेचा, पुखराजमल कटारिया, संजय पोरवाल, विनोद औरा, राकेश ललवानी, शिखरचंद बड़ोला, निलेश पटवा, मनीष गादिया, वर्धमान बोहरा, नीलेश कांकरिया सहित बड़ी संख्या में समाजजन, महिलाएं व बच्चे उपस्थित थे। समग्र जैन समाज के लोग बदनावर पहुँचे। बदनावर में आयोजित तहसील स्तरीय महाजुलूस में सम्मिलित होकर हाईकोर्ट के फैसले का विरोध किया पश्चात संथारे पर लगी रोक हटाने के विषय में राष्ट्रपति के नाम एक ज्ञापन एसडीएम एकता जायसवाल को सौंपा।

85 मासक्षमण पारणा महोत्सव

थाने। श्री शांतिधाम पदयात्री तीर्थ मानपाड़ा थाने में श्री के.के.संघवी के संयोजन में आहोर निवासी संघवी कुंदनमलजी भुताजी परिवार द्वारा आयोजित 85 सामूहिक मासक्षमण का पारणा महोत्सव श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थधाम, कासारवडवली में 29 अगस्त को आयोजित किया गया।

आचार्य श्रीमद विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद से आयोजित पारणा महोत्सव में आचार्यश्री अजितशेखर सूरिश्वरजी म.सा., मुनिराज श्री विश्वानंदविजयजी आदि ठाणा ने निश्रा प्रदान की। तपस्वियों को सामूहिक संघ पूजन के साथ विविध प्राचीन तीर्थों की यात्रा करवायी जाएगी।

श्रद्धांजलि दी गई

झकनावदा। झाबुआ जिले के पेटलावद नगर में विस्फोटक पदार्थों डिटोनेटर, जिलेटिन में हुए विस्फोट में हुई भारी जनहानि पर झकनावदा श्रीसंघ एवं तरूण परिषद् परिवार द्वारा स्थानीय दादा केसरियानाथ जैन देरासर के बाहर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर सभी दिवंगत आत्माओं को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। सभी घायलों के जल्द स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना की। देरासर के व्यवस्थापक कनकमल मांडोत, शैतानमल कुमठ, अर्जुन सेठिया, तरुण परिषद् अध्यक्ष मनीष कुमठ, मनीष सेठिया, कांतिलाल कांसवा, विमल सेठिया सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि विस्फोट की घटना में लगभग 90 लोगों की मृत्यु हो चुकी है वहीं बड़ी संख्या में रहवासी घायल भी हुए हैं।

झकनावदा (मनीष कुमट द्वारा) :

झकनावदा स्थित श्री केशरीयानाथ जैन मंदिर पर भगवान का जन्मोत्सव बडे ही धूमधाम से मनाया गया । प्रातः से ही समाजजन भगवान की केसर पूजन करते नजर आये । भगवान की प्रतिमा को दुल्हे की तरह सजाया गया । भगवान की अंगरचना रवि सेठिया व मनीष सेठिया द्वारा की गई । भगवान की आरती व चढावे में बढचढ कर हिस्सा लिया व साथ ही भगवान की महाआरती उतारी गई। आरती के बाद भगवान के जन्मोत्सव की समस्त समाजजनों ने एक दूसरे को बधाईया दी व मिठाईयाँ बांटी। साथ ही सभी समाजजनों ने एक दूसरे को केसर के छापे लगाये साथ ही मूर्ति पूजक जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ से झमकलालजी माण्डोत द्वारा प्रदीप व्होरा जिन्होंने नौ उपवास किये का शाल श्रीफल भेंट कर बहुमान किया । भगवान की आकर्षक अंगरचना करने वाले भाई रवि सेठिया का डॉ. इन्दरमलजी व्होरा द्वारा बहुमान किया गया । इस अवसर पर कनकमल माण्डोत, शैतानमल कुमठ, कान्तिलाल कोटडिया, अजीत मेहता, अर्जुन सेठिया, शंभु सेठिया, तरुण परिषद् अध्यक्ष मनीष कुमट, विमल सेठिया, मोनू सेठिया, निर्मल माण्डोत आदि समाजजन उपस्थित थे ।

शिक्षक सम्मान समारोह

हुबली : अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् हुबली द्वारा श्री शांतिनाथ हिन्दी हाई स्कूल में शिक्षक दिवस के उपलक्ष में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया । स्कूल के पूर्व प्रधानाध्यापक डॉ. पारसमल जैन एवं परिषद के अध्यक्ष ललित जैन ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । परिषद् के सहमंत्री संजय सेठ एवं मुकेश जैन ने शिक्षक एवं छात्र के रिश्ते का महत्व बताया। इस अवसर पर पूर्व एवं वर्तमान अध्यापकों का परिषद् द्वारा शाल एवं मोमेन्टो द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर सुरेश गांधीमुथा, आकाश जैन, बन्टी जैन, योगेश जैन, हर्षल पोरवाल आदि उपस्थित थे। निलेश जैन ने सबका आभार व्यक्त किया।

तेजस को राष्ट्रीय स्पर्धा में स्वर्णपदक :

मेघनगर के तेजस संदीप जैन ने बेडमिंटन की राष्ट्रीय स्पर्धा में स्वर्णपदक प्राप्त किया। यह स्पर्धा नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी ने अगस्त के अंतिम सप्ताह में बेंगलोर (कर्ना.) में आयोजित की थी। स्पर्धा में तेजस ने भारती विद्यापीठ लॉ कॉलेज (महा.) का प्रतिनिधित्व किया। शाश्वत धर्म के पूर्व संपादक धर्मपाल महेन्द्र जैन के भतीजे व परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता तेजस ने नित्य पूजा, नवकारसी, आरती, तिविहार व पर्व तिथि के नियमों का पालन करते हुए यह मुकाम हासिल कर लिया। पुणे (महा.) में लॉ की पढाई जारी रखते हुए राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराजा के इस परम भक्त ने ज्ञानायतन के तीनों शिविरों में भाग लिया। नौ वर्ष की छोटी सी उम्र से ही राष्ट्रीय प्रशिक्षकों से खेल प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे तेजस, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के प्रशिक्षु व मध्यप्रदेश के उपविजेता रह चुके हैं। उनकी इस उपलब्धि पर मेघनगर त्रिस्तुतिक श्री संघ अध्यक्ष श्री मनोहर चौरड़िया, जयंत ज्योति संपादक रजत मनोहर कावडिया, ज्ञानमंदिर के ट्रस्ट मंडल आदि ने उन्हें बधाई दी ।

संयम संवेदन

लेखक :- पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा.

प्राप्ति स्थान :- श्री राज-राजेन्द्र प्रकाशन ट्रस्ट अहमदाबाद,
श्री राजेन्द्र जयंतसेन म्यूजियम श्री मोहनखेड़ा तीर्थ आदि

लाभार्थी :- राजरतन ज्वेलर्स, नवापुरा, सूरत, मो. 09374721699

छपाई :- साफ, अच्छी

प्रस्तुत पुस्तक जीवन में संयम की महत्ता को परिभाषित करती है। पुस्तक में जीवन के लक्ष्य तक पहुँचने में 'संयम' की भूमिका का सहज वर्णन किया गया है। 112 पेज की इस पुस्तक का आलेखन परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. ने बड़े ही सरल शब्दों में सरल तरीके से किया है। पुस्तक में संयमशील और सहजशील साधु के सफल लक्ष्य प्राप्ति का वर्णन भी समाहित है। पुस्तक का प्रत्येक 'संयम संदेश' सफलता, सिद्धि के साथ आत्मानुभूति कराने में समर्थ है। वास्तव में ''संयम जीवन'' का, वैराग्य रत्न का सार है। यह पुस्तक चारित्र की ओर अग्रसर होने वाले आत्मार्थियों के लिए प्रेरक तथा मार्गदर्शक है। -राजेन्द्र सोनी

जीवन की सार्थकता

आत्मबोध ही जीवन है, यह अमूल्य है। उसे स्वीकार करो, ठहर कर देखो कि यह एक ऐसा अवसर है जो खोने के लिए नहीं मिला, इससे भागो मत, लड़ो मत पलायन और अस्वीकार न करो, अगर आप इसे स्वीकार करके इसकी महत्ता, अर्थ और तत्व न खोज पाये तो चूक हो जायेगी, इसे खोजो अन्यथा मृत्यु इसे खा जायेगी। मृत्यु प्रतिक्षण निकट आ रही है। मृत्यु एक क्रमिक घटना है,जो निरंतर घटित हो रही है। जन्म के अगले क्षण से ही वही क्रमिक रूप से जीवन को निगल रही है। जन्म से ही उसकी विजय यात्रा आरंभ हो चुकी है। ठहरो, उसकी विजय को पराजय में बदल दो। बदल दो उसकी दिशा अन्यथा उसकी विजय निश्चित है। आपकी शक्ति, सम्पत्ति, प्रतिष्ठा और वैभव सभी कुछ उसके समक्ष निर्जीव चित्र की भांति है। मृत्यु की उपस्थिति में सभी कुछ व्यर्थ है। मृत्यु की उपस्थिति का अर्थ है सर्वस्व का क्षय हो जाना। मृत्यु के आने पर सभी कुछ व्यर्थ और अर्थहीन ही है।

मृत्यु की उपस्थिति में सभी कुछ निर्जीव जैसा है। स्वयं को छोड़कर स्व की अमर सत्ता व स्व अस्तित्व की अनुभूति है, अमृत है, चिन्मय है, स्व अस्तित्व ही मृत्यु की पकड़ से बाहर है। केवल यही एक ऐसा तत्व है, जो उसे पराभूत करता है तथा दिग्दिगन्त में अपनी विजय यात्रा के उल्हास से भरी मृत्यु भी कांपने लगती है।

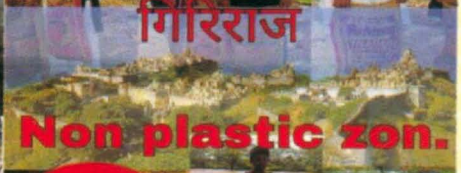

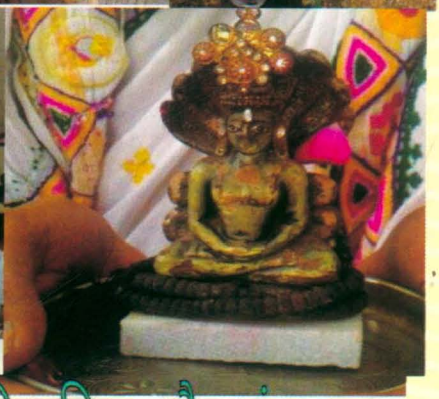

श्री सौधर्म बृहत तपागच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सुरत

आयोजीत

पार्श्व को सदा मोरी वंदना

संचालन

तरुण परिषद, सुरत

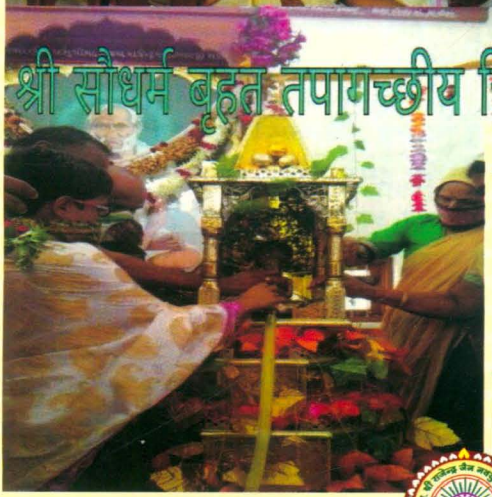

परिषद प्रांगण से

उज्जैन। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की नमक मंडी उज्जैन शाखा द्वारा त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री किशोर खेमावत की पुण्य स्मृति में जैन तीर्थ श्री हनुमंत बाग पर पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर श्रीसंघ अध्यक्ष राजबहादुर मेहता, सचिव मदनलाल रूनवाल, परिषद् शाखा अध्यक्ष अभिषेक सेठिया, सचिव नितेश नाहटा, संजय कोठारी, विजय राठौड़, संजय गिरिया, वीरेन्द्र गोलेचा आदि उपस्थित थे।

परिषद् द्वारा पौधरोपण

'पहली रोटी गाय की' योजना शुरु

विजयवाड़ा। परिषद् परिवार द्वारा अपने विभिन्न सेवाकार्यों के साथ जिन शासन की प्रभावना कर रहा है। इसके अन्तर्गत

1. गुरुदेव की निश्रा में शुरु हुई नवकार महामंत्र आराधना यहाँ भी 21 अगस्त से 30 अगस्त 2015 तक हुई जिसमें 160 आराधकों ने भाग लिया।
2. परिषद् ने अपने 15 दिवसीय कार्यक्रम अन्तर्गत 6 सितंबर को अम्मा-नाना वृद्धाश्रम जाकर 50 लोगों के लिए नाश्ते का प्रबंध करवाया।
3. पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व से 'पहली रोटी गाय की' योजना शुरु की जा रही है। इसमें परिषद् के कार्यकर्ता द्वारा घर-घर से रोटी एकत्रित कर गौशाला में गायों को परोसा जाएगा। यह जानकारी सुजीत सोलंकी ने दी।

ज्ञानपीठ परीक्षा संपन्न

रतलाम। श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की वर्ष 2015 की वार्षिक परीक्षा रतलाम में परीक्षा केन्द्र सुविधिनाथ जैन धार्मिक पाठशाला, नीमवाला उपाश्रय में संपन्न हुई।

इस वर्ष आयोजित भाग 1 से भाग 5 तक की परीक्षा में 24 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा पर्यवेक्षक श्री सुशील छाजेड़, श्री गेंदालाल सकलेचा, श्री अभय सकलेचा, श्री राजकमल दुग्गड़, परिषद् सचिव श्री निलेश लोढ़ा, परिषद् कोषाध्यक्ष एवं सुरेन्द्र गंग पाठशाला संचालक उपस्थित रहे। इस बार भाग 2 में महिला परिषद् अध्यक्ष श्रीमति ममता भंडारी, कोषाध्यक्ष श्रीमति रमिला सकलेचा, केन्द्रीय प्रतिनिधि सरोज बेन कांसवा भी परीक्षा में सम्मिलित हुईं।

वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न

धार। स्वतंत्रता दिवस पर आयकर भवन प्रांगण में श्रीसंघ अध्यक्ष श्री प्रकाश बाफना एवं आयकर अधिकारी श्री पी.आर.टंडन के मुख्य आतिथ्य में चीकू, जाम, आंवला, बादाम, नीम एवं पीपल के पौधों का रोपण झंडावंदन के पश्चात् किया गया। इस अवसर पर विभाग के पुरुष व महिला कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

धार । वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत 15 अगस्त 15 को आयकर भवन प्रांगण में श्रीसंघ अध्यक्ष श्री प्रकाशजी बाफना एवं आयकर अधिकारी श्री वी.आर. टण्डन के मुख्य आतिथ्य में 45 पुरूष एवं 6 महिलाओं की उपस्थिति में चीकू, जाम, ऑवला, बादाम, नीम एवं पीपल के पौधों का रोपण झण्डावन्दन के पश्चात किया गया ।

सुरेशचन्द्र भण्डारी

सायला। 69 वें स्वतंत्रता दिवस पर सेवा केन्द्र, सायला द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के 8 विद्यालयों में मिष्ठान वितरण किया गया। सेवा केन्द्र पिछले 19 सालों से राष्ट्रीय पर्वो पर मिष्ठान वितरण निरन्तर जारी रखे हुए है।

समाज सेवा एवं मानवीय सेवा के क्षेत्र में कार्यरत सेवा केन्द्र, सायला विभिन्न योजनाओं के तहत गरीबों के हितार्थ कार्य कर रहा है। सेवा केन्द्र के संस्थापक श्री अचलचन्द जैन निःस्वार्थ भाव से इस कार्य में लगे हुए हैं। सेवा केन्द्र मुख्यतः शिक्षा एवं चिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत है ।

झकनावदा जैन श्री संघ, जैन समाज एवं अ. भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् के आह्वान को मानकर राठोड़, माली, आदि समस्त समाज के लोगों ने भी अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर संथारा पर रोक लगाने का विरोध किया व मौन जुलूस निकाला।

पत्र संपादक के नाम

शाश्वत धर्म का अगस्त–2015 का बीजापुर प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक प्राप्त हुआ। यह अंक वाकई में यादगार एवं संग्रहणीय अंक है। इतना उम्दा संपादन, कलर सेटिंग व प्रिंटिंग सचमुच अतुलनीय है। आपका संपादकीय 'आराधना के लिए आलंबन–भक्ति का मार्ग अध्यात्म का अभ्यास है' , पूज्य गुरुदेव के लेख 'मंदिर क्या है? हम मंदिर क्यों जाएं?' वाकई मनन योग्य हैं। मूर्तिपूजा श्रेष्ठ आलंबन, बीजापुर का इतिहास, जैन मंदिरों की स्थापत्य कला–विश्लेषणात्मक अध्ययन, मोक्षमार्ग में साधर्मी वात्सल्य की प्रधानता, जैन धर्म अनुयायी–सम्राट विक्रमादित्य, सामायिक के बाईस दोष, कर्मों का फल, गुरु समर्पण के पर्याय–साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी, गुरुदेव के बारे में जानकारी, मेरे गुरुदेव का अपने गुरुदेव के प्रति भाव से समर्पण पढ़कर मन रूंध सा गया। आपने दोष ना पोटला छोर सोल कषाय फरी एना सोल–सोल भेद करो चौसठ कषाय केटले मोटुं छे कषाय नु संसार। लेवा–देवा बगर भी पंचायत में पड़ी गया छिरो कई पण मलवोनथी आपनो कई नथी ये शब्द मन की गहराई को छू गया, अंतरात्मा को रूला सा गया। इसी तरह आस्था हमारी सबसे न्यारी एवं बीजापुर विशेषांक का हाल भी वाकई संग्रहणीय लेख हैं। अतुलनीय अंक के लिए आप सबको पूरे मन से धन्यवाद।

–सुरेन्द्र गंग, 8 भोयरा बावड़ी, रतलाम।

पर्युषण आये

पर्व पर्युषण आये,
मन में हमारे हर्ष छाये।
आठ दिवस में पूरे वर्ष का,
लेखा जोखा पाएं।
वर्ष में हुई जानते–अजानते,
गलतियों को ना छु पाएं।

आगे रहकर हम सबसे,
मन,वच, काया से क्षमा पाएं।
'सूरि राजेन्द्र ' ये कहे,
क्षमावान ही पुनवान।
'गुरु जयन्तसेन ' कहे
क्षमा वीरों की शान।

–निलेश लोढ़ा, रतलाम
केन्द्रीय सहमंत्री तरुण परिषद्।

जैन विश्व

मुंबई। जैन समाज के परंपरागत तप संथारा पर जैन मीडिया सोश्यल वेलफेयर सोसाइटी ने 92 मिनिट की एक फीचर फिल्म के निर्माण की घोषणा की है। फिल्म का निर्देशन विनायक ए.लुनिया व ललित मेहता करेंगे।

चेन्नई। चेन्नई महानगर में धर्म प्रवृत्ति के लिए जागरुगता बढ़ाने के लिए धार्मिक पाठशाला (पीयूष पान की प्याऊ) की स्थापना भावनगर में की गई। इस महानगर में अभी तक 15 पाठशालाएं सुचारू रूप से संचालित हैं।

झकनावदा। झकनावदा जैन श्रीसंघ, जैन समाज एवं अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् के आह्वान पर राठौड़, माली सहित अन्य कई समाज के लोगों ने भी अपने-अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर संथारा पर रोक के निर्णय के विरोध में अपना समर्थन व्यक्त किया।

सायला। आजादी के 69वें स्वतंत्रता दिवस पर सेवाकेन्द्र सायला द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के 8 विद्यालयों में मिष्ठान्न वितरित किया गया।

जबलपुर। संथारा पर रोक के फैसले के विरोध में जबलपुर में भी मौन जुलूस एवं बंद का आयोजन कर फैसले पर पुनर्विचार की मांग के साथ कलेक्टर को एक ज्ञापन सौंपा गया।

मालपुरा। अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की 6 सितंबर की बैठक में आचार्य श्री पीयूषसागर सूरिश्वरजी म.सा. के सुखसागर समुदाय से निष्कासन को निरस्त किया।

मुंबई। पूज्य गुरुवर्या वैभवश्री आत्मा ठाणा 4 के पहली बार महाराष्ट्र वर्षावास में गुरुकृपा व ज्ञानवाणी की सरिता सतत चल रही है। मुंबई के विभिन्न उपनगरों से जिज्ञासुगण अपनी जिज्ञासाओं के साथ प्रत्येक शनिवार व रविवार को खार के प्रांगण में एकत्रित होते हैं और समाधान प्राप्त कर आनंदित हो रहे हैं।

बाडमेर। आगामी 3 व 4 अक्टूबर को बोरीवली मुंबई में पूज्य गुरुदेव नयपद्म सागरजी म.सा. की निश्रा में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ का 15 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है।

संथारा को गैरकानूनी बताने वाले फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

नई दिल्ली। जैन समुदाय के धार्मिक रिवाज संथारा को गैरकानूनी करार देने के राजस्थान हाईकोर्ट के फैसले पर आज सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी । जैन समुदाय में संथारा प्रक्रिया का प्रचलन है, जिसमें मृत्यु के लिए अन्न जल का त्याग कर दिया जाता है । चीफ जस्टिस एच एल दत्तू और जस्टिस अमिताभ राय की पीठ ने हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगाई और केन्द्र, राजस्थान और अन्य को नोटिस जारी किए । जैन समुदाय के विभिन्न धार्मिक निकायों में संथारा पर हाई कोर्ट द्वारा जारी किए गए आदेश के खिलाफ याचिकाएं दाखिल की थीं। पीठ नत्थी की गई इन याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी। जैन समुदाय के विभिन्न धार्मिक निकायों ने हाई कोर्ट के फैसले पर रोक का आग्रह करते हुए दावा किया था कि इसे जैन धर्म के आधार जैन दर्शन और सिद्धांतों पर विचार किए बिना जारी किया गया। राजस्थान हाई कोर्ट ने दस अगस्त को संथारा को गैरकानूनी बताते हुए इसे आईपीसी की धारा 306 के तहत दंडनीय बना दिया था। ये धाराएं आत्महत्या की कोशिश और इसके लिए उकसाने से संबंधित है। याचिकाओं में दावा किया गया था कि हाई कोर्ट ने धार्मिक चलन और आत्महत्या के अपराध को बराबर ठहरा कर भूल की है। याचिकाएं हाई कोर्ट के आदेश के विरोध में राजस्थान और अन्य राज्यों में समुदाय द्वारा किए जा रहे प्रदर्शनों की पृष्ठभूमि में आई। जिसके बाद राजस्थान हाईकोर्ट के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है ।

याचिकाकर्ता का तर्क

* संथारा के खिलाफ राजस्थान हाई कोर्ट में याचिका निखिल सोनी ने दायर की थी।
* सोनी के अनुसार, सती प्रथा की तरह संथारा भी आत्महत्या का ही एक प्रकार है।

जैन समाज की दलील

* जैन धार्मिक निकायों ने सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिकाओं में कहा कि संथारा धार्मिक चलन है।

* हाईकोर्ट ने इस धार्मिक चलन और आत्महत्या के अपराध को एक समान ठहराकर भूल की है।

यह था आदेश

हाईकोर्ट ने 10 अगस्त को संथारा को गैर कानूनी बताते इस भादंस की धारा 306 व 309 के तहत दंडनीय बना दिया था। ये धाराएं आत्महत्या के लिए उकसाने से संबंधित हैं। 23 अप्रैल को हाईकोर्ट ने कहा था कि संथारा प्रथा कानून की नजर में अवैध है। संथारा के खिलाफ मानवाधिकार कार्यकर्ता और वकील निखिल सोनी ने 10 साल पूर्व याचिका दायर की थी। उन्होंने दलील दी थी कि यह प्रथा सामाजिक बुराई है और इसे आत्महत्या माना जाना चाहिए।

संथारा : हजारों साल पुरानी परंपरा

* जैन समाज में संथारा या संल्लेखना की परंपरा हजारों साल पुरानी है।
* इसके तहत आमरण उपवास करके देह त्यागने को जैन पवित्र मानते हैं।
* इसमें स्वेच्छा से अन्न-जल का त्याग कर मृत्यु का वरण किया जाता है।
* जैन शास्त्रों में इसे समाधिमरण, पंडितमरण या संथारा भी कहा गया है।
* इसका एक अर्थ है जीवन के अंत तक तप विशेष की आराधना करना।

कौन कर सकता है।

* जैन धर्म के अनुसार संयमशील और मृत्यु से भयभीत न होने वाला व्यक्ति ही संथारा करने योग्य है।
* असाध्य बीमारी से पीड़ित बुजुर्ग संथारा ले सकते है, ऐसे व्यक्ति मौत को सहजता से स्वीकारते हैं।

10 अगस्त को राजस्थान हाईकोर्ट ने संथारा को गैरकानूनी बताते हुए इस पर रोक लगा दी थी ।

04 वर्ष तक हाईकोर्ट के आदेश पर रोक जारी रह सकती है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद।

राजस्थान हाईकोर्ट ने लगाई थी रोक

1. राजस्थान हाईकोर्ट ने संथारा को अवैध करार दिया था और मूल मानवाधिकारों का उल्लंघन माना था।
2. उसन इसे आत्महत्या के लिए

उकसाने से जुड़ी धाराओं 306 व 309 के तहत दंडनीय बना दिया था।

3. भारतीय कानून में आत्महत्या एक दंडनीय अपराध है, जबकि इच्छा मृत्यु को अपराध माना गया है।

क्या है संथारा

जैनियों में संथारा उस प्रक्रिया को कहा जाता है, जिसमें जीवन के अंतिम पड़ाव पर अन्न-जल त्याग दिया जाता है और स्वेच्छिक देह त्याग का वरण किया जाता है।

गिरिराज से गिरनार छःरि पालक संघ

पूणे । जय जिनेन्द्र सेवा संघ द्वारा 3 फरवरी से 20 फरवरी 2016 तक ''गिरिराज से गिरनार'' छःरि पालक संघ का आयोजन हो रहा है। ''गिरिराज से गिरनार'' संघ की आमंत्रण पत्रिका लिखने व गुड़-धाणे का प्रोग्राम मुख्य संघवी के निवास स्थान पर सभी संघवियों की विशेष उपस्थिति में संपन्न हुआ। सर्व प्रथम बाजे-गाजे से पत्रिका को वधाकर घर लाया गया, साफा पहने सभी संघवी व संगठन कार्यकर्ताओं ने आसन व बाजोट पर पत्रिका लिखना प्रारंभ किया, पंच परमेष्ठी प्रभु, गुरुजन, अधिष्ठायक देवी-देवताओं को प्रथम पत्रिका द्वारा निमंत्रण व आह्वान किया गया, अष्टप्रकारी पूजा के साथ, कुमकुम के छांटे दिये गये। गुड धाणे से सभी का मुँह मीठा करवाया गया।

पूरे संघ आयोजन की विस्तृत जानकारी विमलजी संघवी ने प्रदान की, 3 फरवरी 2016 से प्रारंभ होने वाले संघ की संघमाल 20 फरवरी को गिरनार तीर्थ पर संपन्न होगी। 800 से 1000 तक यात्री विशाल संख्या में श्रमण श्रमणीवृंद विविध सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं, सह विविध एजेन्सीयों का अनूठा साथ, पूरे लवाजे व बाजे गाजे के संग अपनी मंजिल पर पहुँचेगा ।

इस यात्रा में जुड़ने हेतु फार्म प्राप्ति संस्था के पूणे कार्यालय पर संस्थापक अध्यक्ष श्री विमलजी संघवी (09822887818) से, पत्रिका पर अन्य संपर्क स्थलों से, विविध शहरों के संपर्क स्थलों पर प्राप्त हो सकेंगे। संख्या मर्यादित होने से पहले आओ-पहले पाओ तत्व पर दिये जायेंगे 500 रू. अग्रिम राशी (पालीताणा पर रजिस्ट्रेशन के समय वापस) व 500 रू. साधारण खाते सह कुल 1000 रू. सह आवेदन पत्र आगामी 25 सितम्बर 2015 तक पहुँचाना अनिवार्य है।

जन्म-मृत्यु से मुक्ति है, आत्महत्या नहीं : संथारा

खरतरगच्छाचार्य श्री जिनपीयूषसागर सूरिजी

श्रमण भगवान महावीर ने कहा है कि मृत्यु के दो प्रकार है। सकाय मृत्यु-आत्मविशुद्धि की भावना से युक्त और अकाम मृत्यु-आत्मविशुद्धि की भावना से रहित। सकाय मृत्यु श्रेय हैं। अकाम मृत्यु श्रेय नहीं है ।

मूढ़ चेतना वाले लोग पर्वत या वृक्ष से नीचे गिरकर, अग्नि या जल में प्रवेश कर, फाँसी लगाकर, जहर खाकर, अन्य किसी भी प्रयोजन से आत्महत्या करते हैं, वह प्रशस्त नहीं है। उसके पीछे जो हेतु है उसमें जिजीविषा का भाव प्रधान है। आत्महत्या की ओर व्यक्ति तभी अग्रसर होता है जब उसके स्वाभिमान पर चोट आती है, कोई भयंकर विपत्ति आ जाती है, गहरा आघात लगता है, जो चाहता है वह प्राप्त नहीं होता है, आदि । इन सबके मूल में राग-द्वेष प्रमुख हैं, किंतु जहाँ इनमें से कोई कारण उपस्थित न हो, तब आत्म साधक अपने नश्वर शरीर को अनुपयोगी मान राग-द्वेष से विमुक्त अवस्था में शरीर को छोड़ने का उपक्रम करता है, वह आत्महत्या नहीं है। आत्महत्या आवेश या आवेग में होती है किन्तु स्वेच्छापूर्वक (संथारा-संलेखाना) शरीर के विसर्जन में कोई आवेश-आवेग नहीं है।

संथारा लेने वाले की मृत्यु चाहे आज आए या कल, वह सर्वदा शांत प्रसन्न रहेगा। मृत्यु उसके लिए भयावह नहीं है और न पीड़ा का कारण है। संथारा ग्रहण करने वाला साधक जब देख लेता है कि देह जीर्ण हो रहा है तब मृत्यु से पहले ही मौत की तैयारी कर लेता है, इस तैयारी का नाम संलेखना है।

संलेखना आत्महत्या नहीं है, किन्तु स्वेच्छापूर्वक देह के ममत्व का विसर्जन है। साधक संथारा तभी ग्रहण करता है, उससे सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना होना कठिन है, तब वह खान-पान के विसर्जन से देह विसर्जन की बात सोचता है।

संथारारत् साधक-मरण-काल तक इहलोक-परलोक में सुखादि के प्राप्त करने की इच्छा का तथा जीने और मरने की इच्छा का त्याग करके अन्तिम सांस तक क्षणभंगुर संसार के नश्वर सुखों का चिंतन कर आत्मिक सुख में प्रवृत्त रहता है।

संथारा जैनधर्म के वीतराग पुरूषों के द्वारा प्ररूपित सिद्धांत के अनुरूप है। इसमें कानून को दखलबाजी करना भारतीय संविधान के मूल भावना के विपरीत है।

॥ श्री तीर्थ नायक सीमन्धर स्वामिने नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

महाविदेह के महाप्रभु दादा श्री सीमंधर स्वामी की 109 इंची विराटकाय भव्य जिनमन्दिर में सुशोभित

महाविदेह महातीर्थ

तीर्थ प्रेरक -
सुविशाल गच्छाधिपति आचार्यदेवेश
श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शनार्थ अवश्य पधारें ।

चैन्नई के समीपस्थ स्थित केशरवाड़ी-पुडल में यह महाविदेह महातीर्थ निर्मित हुआ है, जहाँ वर्तमानकाले महाविदेह स्वदेह विचरते परमात्मा श्री सीमंधरस्वामी का अलौकिक अतिदिव्य विशाल जिनबिम्ब एवं दादा गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का 51'' अद्भुत गुरुबिम्ब प्रतिष्ठित है।

निमन्त्रक
श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई

॥ तीर्थ मंडन श्री मुनि सुवत स्वामिने नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

प्रातः स्मरणीय गुरूदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के स्वर्गारोहण शताब्दी वर्ष की स्मृति में निर्मित

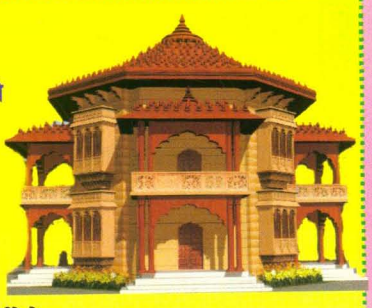

गुरु राजेन्द्र शताब्दी तीर्थ

दर्शनार्थ अवश्य पधारें ।

तीर्थ प्रेरक
सुविशाल गच्छाधिपति आचार्यदेवेश
श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

चैन्नई-बैंगलोर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित तीर्थ में श्री मुनि सुव्रतस्वामी आदि चौमुखी जिनबिम्ब से मंडित जिनालय,दक्षिण भारत का सर्वप्रथम चौमुखी श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर एवं धर्मशाला है ।

निमन्त्रक
श्री गुरु राजेन्द्र शताब्दी तीर्थ ट्रस्ट, चैन्नई

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

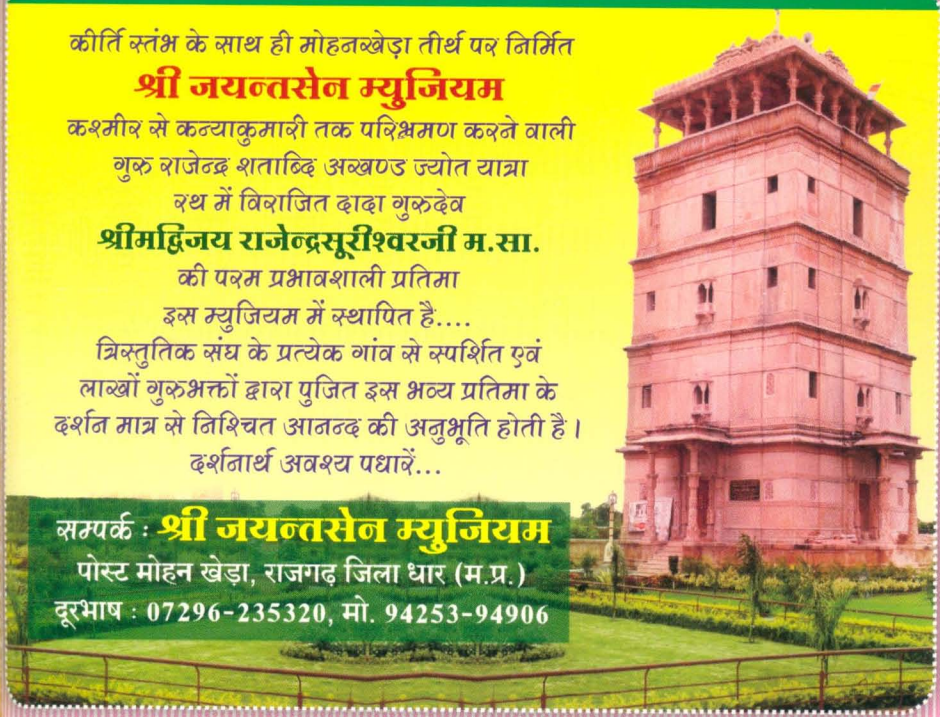

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयण क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 116

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

सुविशाल गच्छाधिपति, जैनाचार्य, परिषद् प्रेरणापुंज

राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

के चरण कमलों में संघवी शेषमलजी रामाणी परिवार का
कोटी - कोटी वंदना

संघवी शांतिलाल रामाणी

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ
राष्ट्रीय परामर्शदाता	:	अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्
राष्ट्रीय संयोजक	:	शाश्वत धर्म
मुख्य संयोजक	:	आन्ध्र प्रदेश बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
शाश्वत अध्यक्ष	:	नेल्लोर डिस्ट्रीक्ट बुलियन एंड डायमंड मर्चन्ट्स एसोसिऐशन
अध्यक्ष	:	श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ - नेल्लोर

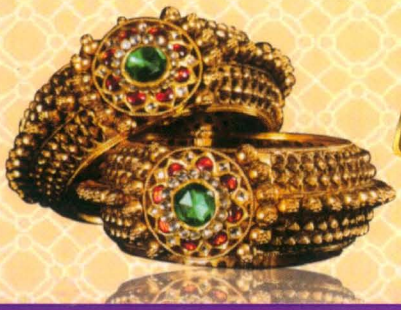

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Jewel Junction, Achari Street,
Nellore - 524 001 (A.P)
Ph.: 0861- 6611777, 2328185,
e-mail:shantilalramani@rediffmail.com